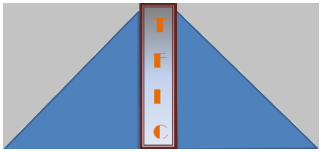

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या

काल नं०

खण्ड

Vir Sewa Mandir
21 Daryaganj, Delhi

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४५

जैनशिलालेखसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

संग्रहकर्त्ता

पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्यः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रम संवत् २००९

मूल्यं रूप्यकम्

—प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

—मुद्रक—
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

स्वागत

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोंने चाहा, और भविष्य अनुकूल रहा तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोंको भेंट किया जायगा। पाठकोंने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथमालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक बार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिलालेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोंके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिलालेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री अँग्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोंमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोंको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणबेल्गुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा)—प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग[1]

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धंमवढिया च बाढं वढिसंति [।] एताये मे अठाये धंमसावनानि सावापितानि धंमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे पुलि]सापि बहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसंति पि पवियलिसंतिपि [।] लजूका पि बहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आनपिता[;] हेवं च हेवं च पलियोवदाथ

[२] जनं धंमयुतं [।] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[;] एतमेव मे अनुवेखमाने धंमथंभानि कटानि[,] धंममहामाता कटा[,] धंम-[सावने] कटे [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[;] मगेसु पि मे निगोहानि छोपापितानि[;] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[;] अंबाबडिक्या छोपापिता[;] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[;] निंसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं [।] ल[हुके चु] एस पटीभोगे नाम [।] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

---

१. ए कनिंघम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p. 115, t.

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा)—प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग[1]

[लगभग २४२ ईसवी पूर्व]

[१] धंमवढिया च बाढं वढिसति [।] एताये मे अठाये धंमसावनानि सावापितानि धंमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे पुलि]सापि बहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसंति पि पविथलिसंतिपि [।] लजूका पि बहुकेसु पानसतसहसेसु आयता ते पि मे आनपिता[:] हेवं च हेवं च पलियोवदाथ

[२] जनं धंमयुतं [।] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:] एतमेव मे अनुवेखमाने धंमथंभानि कटानि[,] धंममहामाता कटा[,] धंम-[सावने] कटे [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगेसु पि मे निगोहानि लोपापितानि[:] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसानं[;] अंबावडिक्या लोपापिता[;] अढकोसिक्यानि पि मे उदुपानानि

[३] खानापितानि[;] निंसिधिया च कालापिता[;] आपानानि मे बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसानं [।] ल[हुके] चु] एस पटीभोगे नाम [।] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

---

१. ए कनिंघम, Corpus inscriptionum indicarum, Vol. I, Inscriptions of Asoka, p. 115, t.

हि ममया च सुखयिते[1] लोके [।] इमं चु धंमानुपटीपतीअनुपटीपजंतुति[,] एतदथा मे

[४] एस कटे [।] देवानं पिये पियदसि हेवं आहा[:] धंममहामातापि मे ते बहुविधेसु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतानं चेव गिहियानं च [;] सव[पासं]डेसु पि च वियापटा से [।] संघठसि पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति[;] हेमेव बाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहंतिति [।] **निगंठेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंति[;]** नानापासंडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होहंतिति [।] पटिविसटं पटीविसटं तेसु तेसु ते ते महामाता [।] धंममहामाता चु मे एतेसु चेव वियापटा सवेसु च अंनेसु पासंडेसु [।] देवानं पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:]

[६] एते च अंने च बहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम चेव देविनं च[;] सवसि च मे आलोधनसि ते बहुविधेन आ[का]लेन तानि तानि तुठायतनानि पटी [पाडयंति] हिद चेव दिसासु च [।] दालकानं पि च मे कटे अंनानं च देविकुमालानं इमे दानविसगेसु वियापटा होहंति ति

[७] धंमपदानठाये धंमानुपटिपतिये [।] एस हि धंमापदाने धंमपटीपति च या इयं दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेवं वढिसतिति [।] देवानं पिये [पियद] सि लाजा हेवं आहा[:] यानि हि कानि चि ममिया साधवानि कटानि तं लोके अनूपटीपंने तं च अनुविधियंति[;] तेन वढिता च

---

१. सुखीयते Indian Antiquary, Vol. XIII, p. 310, t.

[८] वढिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुरुसु सुसुसाया वयोम-हालकानं अनुपटीपतिया बामनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभट-केसु संपटीपतिया [।] देवानंपिये [पि]यदसि लाजा हेवं आहा[:] मुनिसानं चु या इयं धंमवढि वढिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन च निझतिया च

[९] तत च लहु से धंमनियमे[,] निझतिया व भुये[।] धंमनियमे च खो एस ये मे इयं कटे इमानि च इमानि जातानि अवधियानि[,] अंनानि पि चु बहु [कानि] धंमनियमानि यानि मे कटानि[।] निझतिया व चु भुये मुनिसानं धंमवढि वढिता अविहिंसाये भुतानं

[१०] अनालंभाये पानानं[।] से एताये अथाये इयं कटे[,] पुता-पपोतिके चंदमसुलियिके होतु ति[,] तथा च अनुपटीपजंतु ति[।] हेवं हि अनुपटीपजंतं हिदतपालते आलधे होति[।] **सतुविसतिवसाभिसितेन मे इयं धंमलिबि लिखापापिताति**[।] एतं देवानंपिये आहा[:] इयं

[११] धमलिबि अत अथि सिलाथंभानि वा सिलाफलकानि वा तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महास्तम्भोंपर लिखाये गये लेखों-मेंसे अन्तिम है । इसको कोई-कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict) मानते हैं, तो कोई मात्र सातवें धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम भाग मानते हैं ।

इसमें बताया है कि सम्राट अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था । इसमें उसने अपने द्वारा नियोजित धर्ममहामात्योंका उल्लेख किया है । ये धर्ममहामात्य 'संघ' (बौद्धसंघ), आजीवक, ब्राह्मण और निर्ग्रन्थोंकी देखरेख रखनेके लिये

[१०] [क] [ि] मानैः (?) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजसिंहासन, अड़तीस सहस्रकी लागतका बनवाया।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोंद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया।··· क्लेश (?) से रहित·····उसने आक्रमण किये गये लोगोंके मणि और रत्नोंको पाया।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओंके बनवाये हुए मण्डपमें, जिसके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊंची और विशाल थी, जनपदसे प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान कंतुभद्रकी तिक्त (नीम) काष्ठकी अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला।

बारहवें वर्षमें·····उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाब और सीमान्त प्रदेश) के राजाओंमें त्रास उत्पन्न किया।

[१२]·····और मगधके निवासियोंमें विपुल भय उत्पन्न करते हुए उसने अपने हाथियोंको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृहस्पतिमित्रसे अपने चरणोंकी बन्दना कराई·····(वह) कलिंग-जिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग और मगधकी अमूल्य वस्तुओंको भी ले आया।

[१३] उसने·····जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं) उत्तम शिखर, सौ कारीगरोंको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय, हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया।

[१४] उसने·····वशमें किया।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-शापकोंको जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियों-पर याप और क्षेमकी क्रियाओंमें प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया। पूजा और अन्य उपासक कृत्योंके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने प्रचलित रखा।

[१५] सुविहित श्रमणोंके निमित्त शास्त्र-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संघायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया। अर्हत्की समाधि (निषद्या) के निकट, पहाड़की ढालपर, बहुत योजनोंसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे निकाले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'वृष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाओंमें रत्न-जटित स्तम्भोंको पचहत्तर लाख पणों (मुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठापित किया। वह (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है।

वह क्षेमराज, वर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज है और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व मतोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवालयोंका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंश-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

बी. सी. (ईसाके पूर्व)

,, १४६० (लगभग) ... केतुभद्र
,, ...४६० (लगभग) ... कलिंगमें नन्दशासन
,, [२३० ... अशोककी मृत्यु]
,, [२२० (लगभग) ... कलिंगके तृतीय-राजवंश-का स्थापन]
,, १९७ ... ... खारवेलका जन्म
,, [१८८ ... ... मौर्यवंशका अन्त और पुष्यमित्रका राज्य प्राप्त करना]
,, १८२ ... ... खारवेलका युवराज होना
,, [१८० (लगभग ... सातकर्णि प्रथमका राज्य-प्रारम्भ]

„ १७३ ... ... खारवेलका राज्याभिषेक
„ १७२ ... ... मूषिक-नगरपर आक्रमण
„ १६९ ... ... राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
„ १६७ ... ... राजसूय-यज्ञ
„ १६५ ... ... मगधपर प्रथम बार आक्रमण
„ १६१ ... ... उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्डवराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
„ १६० ... ... शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत ।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादनं कलिंग····य····नानं लोनकाडतं रजिनोलस····
हेथिसहसं पनोतसय····**कलिंग**····वेलस अगमहि पिडकाडे[1]

[इस शिलालेखमें अर्हन्तोंकी कृपाको प्राप्त **गुहानिर्माण** (Excavation) बताया गया है । इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढ़नेमें नहीं आसकता । वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, **राजा ललाक**के द्वारा अर्हन्तों और कलिंगके श्रमणोंके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी ।]

[JASB, VI, p. 1074]

४

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका] लेकिन करीब १५० ई० पूर्वका [बूल्हर]-

---

१ पितकड in JASB, vol VI, p. 1074.

समनस माहरखितास आंतेवासिस वछीपुत्रस सावकास **उतर-दासक[ा]** स पासादोतोरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरक्षित) के शिष्य, वछी (वात्सी माता) के पुत्र **उतरदासक** (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह मन्दिरका तोरन(ण) है।

[EI, II, p° XIV, n° 1.]

५

मथुरा—प्राकृत।

[महाक्षत्रप शोडाशके ४२ वें (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस।

२. स्व[ा]मिस **महक्षत्रपस शोडासस** सवत्सरे ४० (?) २ हेमंतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये[1]

३. कोछिये **अमोहिनिये** सहा पुत्रेहि पालघोषेन पोठघोषेन धनघोषेन आयवती प्रतिथापिता प्राय—[भ]—

४. आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। स्वामी **महाक्षत्रप शोडासके** ४२ (?) वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन, हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र **पालकी** स्त्री, तथा श्रमणोंकी श्राविका, कोछि (कौत्सी) **अमोहिनि** (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों **पालघोष, पोठघोष,** (प्रोष्ठघोष) और **धनघोषके** साथ **आयवती** (आर्यवती) की स्थापना की गई थी।

[EI, II, n° XIV, n° 2]

६

पभोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

---

१ पढ़ो 'समनसाविकाये'।

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस
२. बहसतिमित्रस
३. मातुलेन गोपालीया[1]
४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]
५. **आसाढसेनेन** लेनं
६. कारितं [उदाकस][2] दस–
७. मे सवछरे कश्शपीयानं अरहं–
८. [ता] न े – ा – ि – – – ो [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा बहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आसा-ढसेनने कश्शपीय अरहंतोंके······दसवें वर्षमें एक गुफाका निर्माण कराया।

[EI, II, p. 242.]

७

पभोसा (प्रभात)—प्राकृत।

[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू.]

१. अधियछात्रा राञो शोनकायनपुत्रस्य वंगपालस्य
२. पुत्रस्य राञो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण
३. वैहिदरीपुत्रेण **आषाढसेनेन** कारितं [॥]

अनुवाद—अधिछत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वंगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आषाढसेनने बनवाई।

[नोट–शुङ्गकालके अक्षरोंसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोंका काल विश्वासके साथ द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व निश्चित किया

---

१ संभवतः 'गोपालिया'। २ सभी अक्षर संशयापन्न हैं।

जा सकता है। खास ऐतिहासिक चीज जो यहां अङ्कित करनेकी है वह अधिछत्राके प्राचीन राजाओंकी वंशावलि है। अधिछत्रा किसी समय प्रतापी उत्तर पाञ्चालके राजाओंकी राजधानी थी। वंशावली इस प्रकार है:—

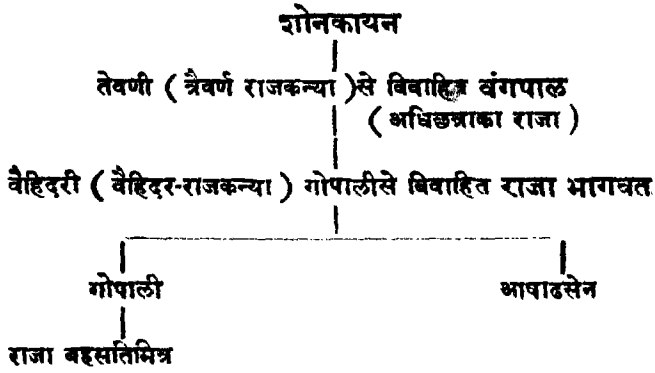

बहसतिमित्र कहांका राजा था और उसके पिताका नाम क्या था, यह नहीं बताया गया है। लेकिन, ए० फ्यूरर की सम्मतिमें हम उसे कौशाम्बीका राजा मान सकते हैं, क्योंकि वह (कौशाम्बी) प्रभास (पभोसा) के निकट है तथा बहुत-से उसके (बहसतिमित्रके) सिक्के कौशाम्बीमें मिले हैं।

[El, II, n° XIX, n° 2 (p. 243.)]

८

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो आरहतो वधमानस **दण्दाये** गणिका—

२. ये लेणशोभिकाये धितु शमणसाविकाये

३. **नादाये** गणिकाये **वास**ये आरहता देविकुला

४. आयगसभा प्रपा शीलापटा पतिष्ठापितं निगमा—

५. ना अरहतायतने स [ह]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहतपुजाये ।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो। श्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका नादा, गणिका दन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापरियोंके अर्हत्मन्दिरमें अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़केके साथ और अपने सारे परिजनोंके साथ मिलकर एक वेदी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पाषाणासन बनवाये।

[I. A., XXXIII, p. 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक-

२. कालवाळस

३. [भार्याये] कोशिकिये शिमित्राये[1] अयागपटो प्रि [प्रति-ष्ठापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो। गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कौशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया। गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था।

[El, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस ईद्रपा[ल]····

---

१ इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F Fleet)।

अनुवाद—गोती (गौप्ती माता) के पुत्र इन्द्रपाल (इन्द्रपाल) के··· ······अर्हन्तोंकी पूजाके लिये···········प्रतिमा······

[EI, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनारः—संस्कृत।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चौकोर चबूतरा है। उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ है:—

सं० ५८ वर्षे चैत्र वदी २
मोमे धारागञ्जे
पं० नेमिचन्दशिष्य
पंचाणचंदमूर्ति

अनुवाद—संवत ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागञ्जमें नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंदकी मूर्ति।

[ASI, XVI, p. 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत।

(विना कालनिर्देशका)

१. भदंतजयसेनस्य आंतेवासिनीये
२. धामघोषाये दानो पासादो [॥]

अनुवाद—भदन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के दानस्वरूप यह मन्दिर है।"

[EI, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत।

भगवा नेमेसो भग— —

अनुवाद—"भगवान नेमेस (नैगमेष), भगवान···

[EI, II, n° XIV, n° 6]

अनुवाद—सफलता हो। महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (अमावस्या) (Lunar day) अय्योंदेहिकीय (आर्य उद्देहिकीय) गण और अर्य्य-नागभुतिकिय (आर्य नागभूतिकीय) कुलके गणी अर्य्य बुद्धिशिरि (आर्य-बुद्धश्री)के शिष्य वाचक अर्य्य (सन्धि) ककी भगिनी अर्य्यं जया (आर्य जया) अर्य्य गोह······

[EI, 1, XLIII, n° 19]

२५

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क वर्ष ९···]

१. सिद्धं महाराजस्य **कनिष्कस्य** संवत्सरे नवमे······················ मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्व्वाये **कोट्टिया**तो गणातो

२.·········धव····दिस·········न बुद्·········भ जिमित············ विकद

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववें संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुप्त है) पाँचवें दिनका है। यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है।]

[A Cunningham, Reports, III, p. 31, n° 4.]

२६

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

अ. १.·········[1] सं १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व्वे [।] य

ब. १.········**हिकातो**[2] कुलातो अर्य्य**जयभूति**····

स. १. स्य शिशीनिनं अर्य्य**सङ्गमिकये** शिशीनि····[3]

द. १. अर्य्य**वसुलये** [निर्वर्त्त] नं

---

१ 'सिद्धं' की पूर्त्ति करो। २ 'मेहिकातो' पढ़ो। ३ 'शिशीनिनं' पढ़ो।

अ. २.········लस्य धी [तु]····ि········धु[1] **वेणि**

ब. २.····श्रेष्ठि [स्य] धर्मपत्निये **भट्टि[से]न**स्य

स. २. [मातु] **कुमरमित**यो[2] दनं भगवतो [प्र]····

द. २. मा सव्वतोभद्रिका [।।]

अनुवाद—[सफलता हो।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमरमिता (कुमारमित्रा) ने [मेहिक] कुलके अर्य्यजयभूतिकी शिष्या, अर्य्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य्य वसुलाके आदेशसे समर्पित की। कुमारमित्रा···लकी पुत्री,···की बहू (वधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी।

[EI, I, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क?] वर्ष १८

अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]–[य] ···· [या] नो गण [तो]····

ब. संभोगातो **वच्छलिया**तो कुलातो गणि········

द. १. ····वासि **जयस्य**–तु **मासिगिये** [?] दानं सव्वत[ो]भ–[द्र]········

२. – [सर्वस] वा [नं] सुखाय भवतु।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ था महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कोट्टि] य गण,···संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि······के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया।

[EI, II, n° XIV, n° 13]

१ 'वधु' पढ़ो। २ इसे 'कुमारमितये' पढ़ना चाहिये।

२८

मथुरा—प्राकृत-भग्न।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

अ.····ष १० [८] व २ दि. १० १

ब. धितु **मि [तशि] रिये** भगवती अरिष्टणेमिस्य [वेवर्त] ?

अनुवाद—वर्ष १८, वर्षाऋतुका २ रा महीना, ११ वां दिन, इस दिन···की पुत्री मितशिरि (? मित्रश्री) के दानके रूपमें भगवान अरिष्टणेमि (अरिष्टनेमि) की···[की प्रतिष्ठा)······

[El, II, XIV, n° 14]

२९

मथुरा—प्राकृत।

[कनिष्क सं. १९]

अ. १. सिद्धम् । सं १० ९ व ४ दि १० अस्यां पु····

२. र्व्वायं वाचकस्य अर्य्य**बल**····

३. **दिनस्य** शिष्यो [वाच] को अर्य**मा**····

४. **तृदिनः** तस्य [नि] र्व्वर्त्ते [न]।

ब. १. [**कोट्टिया**तो गणातो **ठानिया**तो

२. [कुलातो **श्रीगृहा**तो संभोगातो]

३. [अर्य**वे**रिशाखातो **सु**] **चि**····

स. **[ल]** स्य धर्म्यपतिये ले···

द. दानं भगवतो स [न्ति]·········[प्र] तिमा

अ. ५. नाश··········तनं

ब. ४.····। [न] मो अरहतानं सर्व्वलोकुत्त [मानं]

अनुवाद—सिद्धि हो । १९ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें, वाचक अर्य्य बलदिन (बलदत्त) के शिष्य वाचक अर्य्य मातृदिनके आदेशसे भगवान शान्तिनाथकी प्रतिमा ले······की तरफसे अर्पित की गई । यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुम्बिल (शुम्बिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्य्य वेरि (आर्य-वज्र) शाखाकी थी । सर्व लोकोंमें उत्तम ऐसे अर्हंतोंको नमस्कार हो ।

[EI, 1, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १. सिद्ध स [२०] गृमा—दि १० ५ **कोट्टिया**तो गणतो [ठ] **णिया**तो कुलतो **बेरि**तो शखतो **शिरिका**तो

ब १. [संभो]गातो वाचकस्य अर्य्य**सघसिह**स्य निर्व्वर्त्तना **दाति-**लस्य········**मति**—

२. लस्य कुठुबिणिये **जयवाल**स्य **देवदास**स्य **नागदिन**स्य च **नागदिन**य च मातु

स. १. श्राविकाये **दि**—

२. [**ना**] ये दानं ॥

३. वर्द्धमानप्र—

४. तिम ।

अनुवाद—सिद्धि हो । २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, बेरि (वज्री) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्य्य सघसिह (आर्य सङ्घसिंह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिन्ना) की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई] । यह

दिन्ना दातिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी।

[EI, 1, n° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्धं सं २० गृ ३] दि [१०] ७ [एत]स्य पूर्व्वाय **कोट्टिय[ा]** तो गणातो **ब्रह्मदासिया**तो कुलातो **उचे [नागरि**तो शा] खातो **[श्री] गृह [ा]** तो संभोगातो [बृहंतव]ाचक च गणिन च **ज [–मित्र]** स्य....[1]

२. अर्य्य **[ओ] घ**स्य शिष्यगणिस्य [अ] र्य्यपालस्य श्र [द्धच] रो [वाच]कस्य अर्य्य**[दत्त]**स्य शिष्यो वाचको अर्य्य-सीहा [त]स्य निव्वर्त्तणा [खो] दमि [त]स्य मानिकारस्य [गी]–**जयभ[ट्टि]** धीतु **दास्य—**

ब. १. [लो] हवाणियस्स **वाधर**...वधू **[ह] ग्गु [देव]**स्य धर्म्मपत्निये **मित्राये** [दानं].... [सव्वे] स [त्वानं] हि [तसु] खाये काक [तेय]......क्ष–

२.—वाज.......ि.... ो............रज............।

अनुवाद—सिद्धि हो। हुविष्कके २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्य्य सीह (सिंह)–जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

---

१ 'शिष्य' पढ़ो।

संभोगके थे–की आज्ञासे सब सत्त्वोंके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-की तरफसे···समर्पित की गई। यह मित्रा हग्गु देव (फल्गुदेव) की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाधरकी बहू खोट्टमित्रके मानिकर···जयभट्टिकी पुत्री·········। अर्य्यदत्त गणी अर्य्यपालके श्राद्धचर थे। अर्य्यपाल अर्य्य ओघके शिष्य थे और अर्य्य ओघ महावाचक गणी जयमित्रके शिष्य थे।

[El, 1, n° XLIII, n° 4]

३२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता होनेसे इसका भी समय हुविष्क सं. २० है]

वाचकस्य **दत्तशिष्यस्य सीहस्य** नि·········

[El, 1, p. 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क सं. २२]

१. सिद्ध सत्र २०····२ ग्रि १ दि स्य पुर्व्वायं वाचकस्य अर्य्य-**मात्रिदिनस्य** णि····[१]

२. सत्तवाहिनिये **धर्म्मसोमाये** दानं ॥ नमो अरहंतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। [हुविष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले महीनेके ··दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (आर्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह धर्म्मसोमाका दान है। धर्मसोमा एक सार्थवाहकी स्त्री थी। अर्हन्तोंको नमस्कार हो।

[El, 1, n° XLIV, n° 29]

---

१ 'निर्वर्तना'।

३४

मथुरा—प्राकृत ।
[हुविष्क सं. २२]

[सि] द्धं सं २० (?) [२] ग्रि २ दि ७ वर्धमानस्य प्रतिमा **वारणा**तो गणातो **पेतिवामि[क]**···

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके ७ वें दिन, वारणा गण, पेतिवामिक [कुल] की तरफसे वर्धमानकी प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई] ।

[El, 1, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत ।
[हुविष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पचत्रिंशे हेमंतम [से] त्रितिये दिवसे वीशे अस्मि क्षुणे

ब. १. **कोट्टिय**तो गणतो **ब्र[ह्म]दासिक**तो कुलतो **उचेनाग-रि**तो शाखातो अय**बलत्रत**स्य शिषो **सधि**

२. 'स्य शिषिनि ग्रहा — — —ि ···· — वतन [ना] दिअ [रि] त **जभ[क]** स्य वधु **जयभट्ट**स्य कुंटुविनीय **रयगिनि**ये [वु]सुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके समय रयगिनिने जो नान्दिगिरि (?) के जभककी बहू थी, एक वुसुय[1] ग्रहा — — की आज्ञासे समर्पित की । रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी। ग्रहा — — सधिकी शिष्या थी । सधि अर्य्य बलत्रत (बलत्रात) के शिष्य थे । यह बलत्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी शाखाके थे ।

[El, 1, XLIII, n° 5]

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है ।

३६

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका, संभवतः हुविष्कके २५ वें वर्षका]

१. **उचेनगरि**तो शखतो अर्य्य**बलत्रत**स्य शिमिणि अर्य्य**ब्रह्म** ——

२. अर्य्य**बलत्रत**स्य शिष्यो अर्य्य**सन्धि**स्य परिग्रहे **नवहस्ति**स्य धिता **ग्रहसेन**स्य वधु ···· ····

३. **गिवसेन**स्य **देवसेन**स्य **शिवदेव**स्य च भ्रात्रिनं मातु जायये प्रतीमा प्र···· ····

४. [मा] नस्य सर्व्वसत्वानं हितसुखय ॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य ब्रह्म) [और] अर्य्य बलत्रत (आर्य बलत्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगरि (उच्चनागरी) शाखाके अर्य्य बलत्रत (आर्य बलत्रात) की शिष्या, जयाने सब जीवोंके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की । यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी बहू तथा शिवसेन, देवसेन और शिवदेव इन तीन भाइयोंकी माँ थी ।

[EI, II, n° XIV, n° 34]

३७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष २९]

अ. महाराज·····ष्कस सं. २० ९ हे २ दि ३० अस क्षुणे भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता **ग्रहह[थ]**स्य धितर सुखिनाये **बोधिनदि** [ये]

ब. कुटुंबिनिये **वारणे** गणे **पुश्यमित्री**ये कुले गणिस अर्य [**दत्तस्य** शिष्यस्य] **गह [प्र] कि [व]** स निर्वर्त [ना] अर[हं] तपुजाये ।

२. पुषस्य वधुये गिह···[कुटिबिनि]···[पुष] दिन [स्य] [मातु] ···· यं

अनुवाद—४७ वें वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके २० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेतिवमिक (प्रैतिवर्मिक) कुलके वाचक और ओह्-नदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुष (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुषदिन (पुष्पदत्त) की माँ,··· की तरफसे [यह समर्पित किया गया]।

[EI, I, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[काल लुप्त, संभवतः वर्ष ४७]

१. सिद्धम् । महाराजस्य राजातिराजस्य············

२. ओह्नन्दिस्य शिष्येण से····न·········ि–[१]

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज, राजातिराज······ओह्नन्दि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनने·········

[EI, II, n. XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत ।

[हुविष्क वर्ष ४७]

दानं देविलस्य दधिकर्णदेविकुलकस्य सं ४० ७ गृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वें दिन, दधिकर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान।

[IA, XXXIII, p. 102–103, n° 13]

---

१ 'सेनेन' पढ़ो ।

५०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य **हुविष्कस्य** स ४० ८ हे ४ दि ५

२. **बमदासिये** कुल [ ] उ [च] े नागरिय शाखाया **धर**····

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखाके धर ·····

[1A, XXXIII, p. 103, n° 14]

५१

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१. पण ५० हेमंतमासे प····

२. आर्य्य**चेर**स्य

३. ये **युधदिन**स्य

४. धित

५. **पूषबुधि**स्य····

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद संभव नहीं है। काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवां महीना है।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[हुविष्कका ५० वां वर्ष]

१. — — ५० (?) हे २ दि १ अस्य पुर्व्वय वरणतो गणतो **अय्यभिस्त** कुलतो [स] —

२. खतो **शिरिग्रह**तो सभोगतो बहवो वचक च गणिनो च समदि [अ]····

३.····वस्य **दिनरस्य** शिशिनि अय्य **जिनदसि** पणति-धरितय शिशिनि अ·····

४. **धकरब**पणतिहरमसोपवसिनि **बुबुस्य** धित **रज्यवसुस्य**धर्म...[१]

५. [द] **विलस्य** मतु **विष्णु[भ]वस्य** पिदमहिक **विजय-शिरिये** दन वध·····[१]

६.·····

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण) गण, अय्यभिस्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि समदि···व दिनर की शिष्या अय्य-जिनदसि (आर्य जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य धकरब (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयशिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा·····। यह विजयश्री बुबुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था।

[El. II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत।

[काल ? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कहाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p. 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p. 7–14, n° 40]

१ 'धर्मपत्नी' पढ़ो। २ 'वधमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा'।

५४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध संवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा] स प्रथ-दिवस पंचवीश २० ५ अस्म क्षुणे **क[ो]ट्टिया** तो गणात[ो]

२. **वेरा**तो शखतो **स्थानिकि**यातो कुलात[ो] **श्रीगृह**तो संभोगातो वाचकस्यार्य्य**धस्तुहस्तिस्य**

३. शिष्यो गणिस्यार्य्य**मंगुहस्तिस्य** पढचरो वाचको अर्य्य**दिवि-तस्य** निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोट्टिकस्य लोहिकाकारकस्य दानं सर्व्वसत्त्वानं हितसुखायास्तु ।

अनुवाद—सिद्धि हो। ५२ वें वर्षके शीतऋतुके पहले महीनेके २५ वें दिन, कोट्टिय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा) श्रीगृह संभोगके वाचक आर्य्य धस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्य मङ्गुहस्ति-के श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्य्यदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार गोट्टिकने दान दिया।

[El. II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम् । सव ५० ४ हेमंतमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ—

२. स्य पुव्वायां **कोट्टिया**तो [ग]णातो **स्थानि [य]**तो कुलातो

३. **वैरा**तो शाखातो **श्रीगृह** [ग] तो संभोगातो वाचकस्यार्य्य-

४. **[ह] स्तहस्तिस्य** शिष्यो गणिस्य अर्य्य**माघहस्तिस्य** श्रद्धचरो वाचकस्य अ-

५. र्य्यदेवस्य निर्व्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दानं

६. सर्व्वसत्त्वानां हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले रङ्गान[र्त्तन] ो

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो । ५४ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्ल-पक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई । आर्य्य देव कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य्य हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य्य माघहस्तिके श्राद्धचर थे । अवतलमें मेरा रङ्गशालीय नृत्य (?) ।

[EI, I, n° XLIII, n° 21]

५६

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम् । म [हा] रा [ज] स्य र [जा] तिराजस्य दैवपुत्रस्य हुवष्कस्य सं ४० (६० ?) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्यां पूर्व्वायां कोट्टिये गणे स्थानिकीये कुले अय्य[वेरि] याण शाखाया वाच-कस्यार्य्यवृद्धहस्ति [स्य]

ब. शिष्यस्य गणिस्य आर्य्यख[र्णा]स्य पुय्यम[न] ······[स्य] ···[व] तकस्य [क]—सकस्य कुटुम्बिनीये दत्ताये—नधर्म्मो[1] महा-भोगताय प्रीयताम्भगवानृपभश्रीः ।

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज, राजातिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वें दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय कुल (तथा) अर्य्य वेरियों (आर्य-वज्रके अनुयायियों) की शाखाके वाचक आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य्य खर्णके आदेशसे···वतके निवासी

१ 'दानधर्मो' पढ़ो ।

पसककी पत्नी दत्ताने महाभोगता (महासुख)के लिये यह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[El, I, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[हु० संवत् ६२]

वाचकस्य अर्य-ककसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहबलस्य निर्वर्तन·········

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (कर्कशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहबलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन श्राविका वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[IA, XXXIII, p. 105–106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[हु० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुवय वाचकस्य आयकर्कुहस्थ [स]

२. वारणगणियस शिषो ग्रहबलो आतपिको तस निवर्तना।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ६२, वर्षाऋतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-कर्कुहस्थ (आर्य कर्कशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहबल थे। उनकी प्रेरणासे·········

[El, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[ ] वर्ष ७९

अ. १. सं. ७० ९-वें ४ दि २० एतस्यां पुर्व्वायं कोट्टिये गणे वइरायां शाखायां·········

२. को अयवृधहस्ति अरहतो णन्दि [आ] वर्तस प्रतिमं निर्वर्तयति ।

ब.·····भार्य्ये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्दे थुपे देवनिर्मिते प्र·····[1]

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाऋतुका चौथा महीना, २० वां दिन, इस दिन, कोट्टियगण (तथा) वइरा (वज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो·····की भार्या थी, एक अर्हत् णन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)[2] की प्रतिमाके निर्माणके लिए कहा । दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्ध स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई ।

[El, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[हुविष्क वर्ष ८०]

१. [सिध] महरजस्य सं ८० हण व १ दि १२ एतस पूर्व्वायां·····

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये बलस्य·····

अनुवाद—[स्वस्ति ।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाऋतुके १ ले महीनेके १२ वें दिन,·····की पुत्री, संघनधि (?) की बहू, बलकी·····(अपूर्ण).

[El, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[ ] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुवाय [अ] यिकाजीवाये अंते-

२. वासिकिनिये दताये निवतना । [ग्र) हशिरिये····

---

१ 'प्रतिष्ठापिता' । २ नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर अर्हनाथ भगवान्की प्रतिमा ।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अयिका-जीवा (आर्यिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) ··· ।

[EI, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१. सिद्धं महाराजस्य **वासुदेवस्य** सं ८० ३ गृ २ दि १० ६ एतस्य पूर्व्वये **सेनस्य**

२. [धि] तु **दत्तस्य** वधुये **व्य····च**····स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये **जिनदासि**य प्रतिमा ध [मेद]ानं

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज **वासुदेव**के राज्यमें ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू, गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) व्य–च···की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानमें एक प्रतिमा ··· ··· ।

[IA, XXXIII, p. 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८६]

१. सं ८० ६ हे १ दि १० २ **दसस्य** धितु **पृयस्य** कुटुंबिनिये

२. ···· [क] तो कुलतो **अयस** [क्क] **मि** [क] य शिशिनिय अय**वसुल** [ये] नि [व] तनं [॥]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, पृय (प्रिय) की पत्नी ······ का दान अर्पित किया गया। यह दान [मेहि] क कुलकी अर्य सक्कमिकाकी शिष्या अर्य वसुलाके कहनेसे हुआ।

[EI, I, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत।

[हुविष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] गृ १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चेनागर-स्यार्य्येकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य............

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?) वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके......

[EI, I, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्ध । महाराजस्य राजातिराजस्य शाहि[=]वासुदेवस्य

२. सं ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पुर्वाया........

अनुवाद—सिद्धि हो। महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन, ..."

[IA, XXXIII, p. 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[सं० ९०]

१. सव [९० व] .... टुब्रनिए दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] तो प-य [ह]-[क] तो कुलातो मझमानो शाखा [तो]....सनिकय भतिबलाए भिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है। इसमें खास कामकी चीज मझमा शाखा और प-वह-क कुलका उल्लेख है। प-वहक कुल जैन परम्पराका प्रश्नवाहनक या पण्हवाहणय कुल है। वर्ष (सं) ९० है]

[EI, II, n° XIV, n° 22]

८०

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [सि] द्ध नमो अरहंताण····द्धने वारणे गणे अयहाट्टि [ये][1]

२. कुले वजनागरिया शाखाया अर्यशिरिकिये संभो········[3]

अनुवाद—सिद्धि हो। अर्हन्तोंको नमस्कार। [सिद्धोंको नमस्कार]। वारण गण, अय हाट्टिय (आर्य हालीय)कुल, वजनागरि (वज्रनागरी) शाखा, अर्य-शिरिकिय संभोगके······

[EI, 1, XLIV, n° 34]

८१

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

पं. १. [ते]—रुसनंदिकस पुत्रेन नंदिघोषेन [ते] वणिकेन अ···· न····अले········

२. णानं मंदिरे [आ] यागपटा प्रतिथापित [ा]············

अनुवाद—ते-रुस (?)-नंदिकके पुत्र, तेवणिक (त्रैवर्णिक) नंदिघोषके द्वारा आयागपट ······के मन्दिरमें स्थापित की गई।

[EI, 1, XLIV, n° 35]

८२

मथुरा—प्राकृत।

[बिना कालनिर्देशका]

अ. ··· भगवतो उसभस वारणे गणे नाडिके कुले ···· ···· खा [यं] ····

---

१ पढ़ो 'नमो सिद्धान'। २ संभवतः 'होळिये'। ३ पढ़ो 'संभोगे'।

ब. दुकस वायकस सिसिनिए **सादिताए** नि ····

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो। वारण गण, नाडिक कुल तथा·····के वाचक·····दुककी शिष्या सादिताके आदेशसे·····

[El, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत।

[विना कालनिर्देशका]

स्थ [ा]निकिये कुले गनिस्य **उग्गहिनिय** शिषो वाचको **घोषको** आर्हतो पर्श्वस्य प्रतिमा····

अनुवाद—"स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत् पार्श्वकी प्रतिमा···

[El, II, n° XIV, n° 29]

८४

मथुरा—प्राकृत—भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा **वजरनद्यस्य** धिता **वाधिशिव**···

१.—ि— स्य— कुटीविनि **दिनाये** दाति **वडिम [शि]** ये····

२.·····

अनुवाद—"वजरनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव ?) की बहू, ि ··· की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपमें एक वर्धमानकी प्रतिमा ··· ··· वडिमशिके·····

[El, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भग्न।
[बिना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

ब. १. तो शखतो **शिरिक**तो संभोकतो अर्य्य

३. .... लनस्य मतु हि [स्त]........

२. f—धराये निवतना **शिवद [त]**

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट–'निर्वर्तना' और 'निवतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मालूम पड़ते हैं और वे सम्बद्ध अर्थको व्यक्त नहीं करते हैं।]

८६

मथुरा—प्राकृत।
(बिना कालनिर्देशका)

१.............ये **मोगलिपुतस पुफकस** भयाये

२. **असाये** पसादो

अनुवाद–किसी मोगली (माँ मौद्गलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी, असा (अश्वा ?) का दान।

[IA, XXXIII, p. 151, n° 28.]

८७

राजगिरि—संस्कृत।

[ ]

T. Bloch के आर्कीओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विश्लेषणमें इस शिलालेखका उल्लेख है। मूलका पता नहीं है।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16. a.]

८८

मथुरा—संस्कृत—भग्न।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना । महाराजस्य राजातिराजस्य संवच्छरशते द [ु] [तिये नव (?) -नवत्यधिके ।]

२. २०० ९० ९ (?) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहातो महावीरस्य प्रातिमा

३.····स्य ओखारिकाये धितु उझतिकाये च ओखाये श्राविका भगिनिय [ ]·········

४.········शरिकस्य शिवदिनास्य च एतैः आराहातायनाने स्थापित [।]··········

५.············देवकुलं च ।

अनुवाद–सब सिद्धों और अर्हन्तोंको नमस्कार हो। महाराज और राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतऋतुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें ······ के द्वारा तथा······की पुत्री,···ओखारिकाकी···उज्झतिका द्वारा, ···श्राविका-भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शिरिक और शिवदिन्ना इनके द्वारा स्थापित की गई···साथमें एक जिनमन्दिर भी।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p. 578-581.]

८९

मथुरा—संस्कृत – भग्न

[गुप्तकाल? वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्थत्रिती····[१]

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पूर्व्वायां····

---

१ 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीये' पढ़ो।

अनुवाद—५७ वें वर्ष, शीतऋतुकी तीसरे महीनेके १३ वें दिन, इसदिन.....

[El, II, n° XIV, n° 38]

१०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलमें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ ब] स्वस्ति नमम् सर्वज्ञाय ॥ जितं भगवता गत-घन-गगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जवज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-व्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्**कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विधा-विनय-विहित-वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-काञ्चन-निकषोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य **दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः** श्रीमन्**माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलास्वादित-यशसः समद-द्विर-दतुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्म्मणः श्रीमद् **हरिवर्म्म-महाधिराजस्य** पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ ब] तस्य श्रीम**द्विष्णुगोप-महाधिराजस्य** पुत्रेण पितुरन्वागत-गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराजः(ज)पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-द्वृत्त-पीन-कठिनभुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिसिताशनप्रीतिकर-निसित-धारासिना श्रीमता **माधववर्म्म-महाधिराजेन** आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्वर्य्ये त्रयोदशे संवत्सरे फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्यां श्रीमद्-वीर-देव-शासनाम्बरावभासन-सहस्रकरस्य आचार्य्य**वीर-देवस्य**

[३ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात् **मुदुकोत्तूर**-विषये **पेब्बोलल्**-ग्रामे अर्हदायतनाय मूलसंघानुष्ठिताय महा-तटाकस्य अधस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्रं च तोट्ट-क्षेत्रं च पटु-क्षेत्रं च **कुमारपुर**-ग्रामश्च एतत्सर्व्वं स-सर्व्व-परिहार-क्रमेणाद्विर्दत्तः योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति अपि चात्र मनुगीता[:] श्लोका[:]

स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें गंगकुलके राजाओंकी परम्परा—कोङ्गणिवर्मा, माधववर्मा, हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमें, फाल्गुनसुदी पंचमीको, आचार्य वीर-देवकी सम्मतिसे, मुदुकोत्तूर-देशके पेब्बोलल् गांवमें मूलसंघद्वारा प्रतिष्ठापित जिनालयमें (उक्त) भूमि और कुमारपुर गांव दानमें दिये।]

[EC, X, Malur tl., n° 73.]

९१

उदयगिरि (सांची के निकट)-संस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६= ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile.

[१] नमः सिद्धेभ्यः[॥]

श्रीसंयुतानां गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयानां नृपसत्तमानाम् [।]

[२] राज्ये कुलस्याभिविवर्द्धमाने
षड्भिर्य्युते वर्षशतेऽथ मासे [॥] १.
सुकार्त्तिके बहुलदिनेऽथ पञ्चमे

[३] गुहामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमां [।]
जितद्विषो जिनवरपार्श्वसंज्ञिकाम्
जिनाकृतीं शमदमवान

[४] चीकरत् [॥] २. आचार्य-भद्रान्वयभूषणस्य
शिष्यो ह्यसावार्य्यकुलोद्गतस्य [।]
आचार्य-गोश

[५]र्म्म मुनेस्सुतस्तु पद्मावत [स्या]श्वपतेर्भटस्य [॥] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनम्
स सङ्घ

[६] लस्येत्यभिविश्रुतो भुवि [।] स्वसंज्ञया शंकरनामशब्दितो
विधानयुक्तं यतिमार्ग्गमास्थितः [॥] ४.
स उत्तराणां सदृशे गुरूणां
उदग्दिशादेशवरे प्रसृतः [।]

[८] क्षयाय कर्म्मारिगणस्य धीमान्
यदत्र पुण्यं तदपाससर्ज्ज [॥] ५.

[इस शिलालेखमें शम-दमवाले किसी व्यक्तिकेद्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्तिक वदी पंचमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खड़ी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसको खड़ा करनेवाला आचार्य गोशर्माका शिष्य था। ये गोशर्मा आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अश्वपति योद्धाके लड़के थे। ये अश्वपति सङ्घल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्द ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१. सिद्धम् । परमभट्टारकमाहाराजाधिराज **श्रीकुमारगुप्तस्य** विजयराज्यसं [१०० १०] ३ क·····न्तमा····[दि]—स २० अस्यां ५ [पूर्व्वायां] कोट्टिया गणा-

२. द्विद्याधरी [तो] शाखातो **दतिलाचार्य्य**प्रज्ञप्तिताये **शामाढ्याये** भट्टिभवस्य धीतु ग्रहमित्रपालि [त] प्रा [ता] रिकस्य कुटुम्बिनीये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता ।

अनुवाद–सिद्धि हो। परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [शीतऋतु महीने] कार्तिकके २० वें दिन, कोट्टियगण (तथा) विद्याधरी शाखाके **दतिलाचार्य** (दत्तिलाचार्य) की आज्ञासे **शामाढ्य** (श्यामाढ्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई। श्यामाढ्य भट्टिभवकी बेटी (और) ग्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी।

[El, II, n° XIV, n° 39]

१३

कहायूँ—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वां वर्ष=४६१ ई. स.]

सिद्धम् ।

[१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिशतशिरःपातवातावधूता
[२] गुप्तानां वंशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्व्वोत्तमर्द्धेः
[३] राज्ये शक्रोपमस्य क्षितिपशतपतेः **स्कन्दगुप्तस्य** शान्ते
[४] वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकशततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
[५] ख्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने **ककुभ** इति जनैस्साधुसंसर्गपूते
[६] पुत्रो यस्**सोमिलस्य** प्रचुरगुणनिधेर्**भट्टिसोमो** महात्मा
[७] तत्सूनू**रुद्रसोम[ः]** पृथुलमतियशा **व्याघ्र** इत्यन्यसंज्ञो
[८] **मद्र**स्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायशः प्रीतिमान् यः ॥
[९] पुण्यस्कन्धं स चक्रे जगदिदमखिलं संसरद्वीक्ष्य भीतो
[१०] श्रेयोऽर्थं भूतभूत्यै पथि नियमवतामर्हतामादिकर्तॄन्
[११] पञ्चेन्द्रांस्थापयित्वा धरणिधरमयान् सन्निखातस्ततोऽयम्
[१२] शैलस्तम्भः सुचारुर्गिरिवरशिखराग्रोपमः कीर्त्तिकर्त्ता ॥ ३ ॥

[इस शिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी भद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वंशावली यहां उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अर्हन्तों (तीर्थंकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्व, और महावीर, इन पांचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इस स्तम्भको खड़ा किया। लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान्' से इन्हीं पांच तीर्थङ्करोंसे मतलब है।]

[इण्डियन एण्टिक्वेरी, जिल्द १०, पृ० १२५–१२६]

कुलसकलास्थयिक-पुरुष पेर्ब्बक्कवाण मर्क्कगरेय सेन्दिक गञ्जेनाड निर्ग्गुण्ड मणियुगुरेय नन्वाल सिम्बालादय भृत्ययां देश-साक्षि तगडूर कुळुगो वरुगणिगनूर तगडरु आलगोडते नन्दकरं उम्मत्तूर बेह्लुररुमाळ-गेयरं बदणेगुप्पेय झंसन्द बेह्लुररु पेर्ग्गिवियरं ॥

स्वदत्तपरदत्तां वा यो हरेथ(त) वसुन्धरी(रां) षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमि[:] [॥]

वसुभि[र्] वसुधा भुक्तां(क्ता)राजभिस्सकर-राजभिः[1] यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

देवस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व[-] पुत्रपौत्रिकं(कां) ॥

सामान्योयं धर्म्म हेतुं(सेतुं) नृपाणाम् काले काले पालनीयो भवद्भि[:] सर्व्वा(र्व्वा)नेतां भागिन(न् भाविनः) पार्थिवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्र[:] ॥ विश्वकर्म्म लिखितम्

गंग राजाओंकी वंशावली इस दानपत्रमें इस प्रकार दी हुई है:—

१. कोङ्गणि प्रथम । २. माधव प्रथम । ३. हरिवर्म्म । ४. विष्णु-गोप । ५. माधव द्वितीय । ६. कोङ्गणि द्वितीय (अविनीत) ।

ये अविनीत महाधिराज कदम्बकुलसूर्य कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे । इनके लिये दानपत्रमें कहा गया है कि–'इनका अन्तरात्मा विद्या, विनयकी वृद्धिसे परिपूरित था, अजेय शौर्य इनमें था और विद्वानोंमें प्रथम गिने जाते थे ।' इन्हींसे देसिग (देशीय) 'गण' कोण्डकुन्द 'अन्वय' के गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-भटार, उनके शिष्य शीलभद्र-भटार, उनके शिष्य जयणन्दि- भटार, उनके शिष्य गुणणन्दि-भटार, उनके शिष्य चन्दणन्दि-भटारको तलवननगरके श्रीविजय जिनालयके मन्दिरके लिये

---

१ सामान्यतया 'सगरादिभिः' ।

बदणेगुप्पे नामका सुन्दर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथवी-वल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुक्ल पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेंट किया। यह गाँव पूनाडु छः हजारके एडेनाडु सत्तरके मध्यमें अवस्थित है। साथमें १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः आश्रित गांवोंमेंसे, तथा पोगरिगेछे और पिरिकेरेमें से भी दिया।]

९६

हल्सी (ज़िला बेलगाँव)—संस्कृत।

[ई० पाँचवीं शताब्दिका (फ्लीट)]

प्रथम पत्र।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त [परम] कारुणिकः

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम—

[३] श्रीविजय**पलाशिका**यां प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र; पहली ओर।

[४] कदम्बानां युवराजः श्री**काकुस्थवर्म्मा** स्वविजयिके अशीतितमे

[५] संवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-निस्तार-

[६] काणाम् **खेटग्रामे** बदोवरक्षेत्र [म्] **श्रुतकीर्ति**सेनापतये ॥

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

[७] आत्मनस्तारणार्थं दत्तवा [न्] [॥] तद्यो [हि] न (ना) स्ति स्ववंश्यः [प] रवंश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवती (ति) [॥] यो भिरक्षती (ति) तस्य सत्यर्व्वं (सर्व्वं, या सत्यं सर्व्वं) गु-

[९] णपुण्यावाप्तिः [॥] अपि चोक्तम् [।] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता ॥[1]

[१०] [रा] जभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य य[दा]भू[]मिः तस्य तस्य तदा फलम् [॥]

[११] स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां षष्टिवर्षसहस्त्र(स्रा) णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः ॥ नमो नमः [॥] ऋषभाय नमः ॥

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुस्थ (काकुत्स्थ)वर्मोके द्वारा श्रुतकीर्त्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है । यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था ।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, नं० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

—[?]—

सिद्धम् जयत्यर्हंस्त्रिलोकेशः सर्वभूतहिते रतः
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः

स्वस्ति **विजयवैजयन्त्यां** स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्याताभिषिक्तानां **मानव्य**सगोत्राणां **हारिती**पुत्राणं(णां) अङ्गिरसां प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चकानां सद्धर्म्मसदम्बानां **कदम्बा**नां अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्धः आहवार्जितपरमरुचिरदृढसत्वः[2] विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरंपरागते जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्री**शान्तिवर्म्म**तनयः

---

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फजूल है । २ इन पत्रोंमें यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्व' और 'तत्व'में 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया ।

श्रीमृगेशवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसंवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्यां तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे **बृहत्परलूरे** (?) त्रिदशमुकुटपरिघृष्टचारचरणेभ्यः परमार्हदेवेभ्यः संमार्जनोपलेपनाभ्यर्चनभग्नसंस्कारमहिमार्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्त्तनं कृष्णभूमिक्षेत्रं चत्वारि क्षेत्रनिवर्त्तनं च चैत्यालयस्य बहिः,[1] एकं निवर्त्तनं पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनिवर्त्तनमेव सर्वपरिहारयुक्तं दत्तवान् महाराजः। लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभाग्भवति। उक्तञ्च--

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम्॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां।
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः॥
अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं सद्भिश्च परिपालितम्।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यार्थपालनं।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम्॥

परमधार्मिकेण **दामकीर्ति**भोजकेन लिखितेयं पट्टिका इति सिद्धिरस्तु॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, नं. ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेशवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुस्था(त्स्था)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य बिलकुल शुद्ध नहीं मालूम होता। २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख नं० ५ में मनुका ठहराया गया है। आमतौर-पर यह व्यासका माना जाता है।

वंशी थे, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त मृगेशवर्माके राज्यके तीसरे वर्ष, पौष (?) नामके संवत्सरमें, कार्त्तिक कृष्णा दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभावना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोंके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परलूरे' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमें चार श्लोक भी 'उक्तं' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमें पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परंतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अतः दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्तं च' श्लोकोंके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमें नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके बिल्कुल अन्तमें जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला-धारवाड़)—संस्कृत

—[?]—

सिद्धम्॥ **विजयवैजयन्त्याम्** स्वामिमहासेनमातृगणानुद्ध्यातामिषि-

---

१ साठ संवत्सरोंमें इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख नं० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अङ्क ७-८, पृ० २२८-२२९ से उद्धृत किये हैं।

क्तस्य **मानव्य**सगोत्रस्य **हारिती**पुत्रस्य प्रतिकृतचर्च्चापारस्य विबुधप्रतिबिम्बानां **कदम्बा**नां धर्ममहाराजस्य **श्रीविजयशिवमृगेशवर्म्मणः** विजयायुरोग्यैश्वर्यप्रवर्द्धनकरः **संव्वत्सरः चतुर्त्थः** वर्षापक्षः अष्टमः तिथिः पौर्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कंधः सुविशुद्धपितृमातृवंशः उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्वविज्ञानविवेच्च (?) ने विनिविष्टविशालोदारमतिः हस्त्यश्वारोहणप्रहरणादिषु व्यायामिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रमः दक्षो दक्षिणः नयविनयकुशलः अनेकाहवार्ज्जितपरमदृढ़सत्वः उदात्तबुद्धिर्धैर्यवीर्य्यत्यागसम्पन्नः सुमहति समरसङ्कटे स्वभुजबलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्यः सम्यक्प्रजापालनपरः स्वजनकुमुदवनप्रबोधनशशाङ्कः देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्यः गोभूमिहिरण्यशयनाच्छादनान्नादिअनेकविधदाननित्यः विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमानमहाविभवः आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजैः कदम्बानां श्रीविजय**शिवमृगेश**वर्म्मा **कालवङ्ग**ग्रामं त्रिधा विभज्य दत्तवान्। अत्र पूर्वमर्हच्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्यः भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको भागः, द्वितीयोर्हत्प्रोक्तसद्धर्म्मकरणपरस्य **श्वेतपटमहाश्रमणसंघो**पभोगाय, तृतीयो **निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघो**पभोगायेति। अत्र देवभाग धान्यदेवपूजाबलिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय। एतदेवं न्यायलब्धं देवभोगसमयेन[2] योभिरक्षति स तत्फलभाग्भवति, यो विनाशयेत् स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति। उक्तञ्च-बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं। **नरवर**सेनापतिना लिखितं।

[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठ्यवर्गों (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है। २ 'देवभागं समयेन' शुद्ध पाठ मालूम पड़ता है।

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति । लिखे जानेका समय चतुर्थसंवत्सर, वर्षा (ऋतु) का आठवाँ पक्ष और पौर्णमासी तिथि है । इस पत्रके द्वारा 'कालवङ्ग' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरहपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अर्हच्छाला परम-पुष्कल स्थाननिवासी भगवान् अर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अर्हत्प्रोक्त सद्धर्माचरणमें तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये और तीसरा भाग निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघके उपभोगके लिये । साथ ही, देवभागके सम्बन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, कर, भग्नक्रिया-प्रवर्तनादि अर्थोपभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है । अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको वही दानके फलका भागी और विनाशकको पंच महापापोंसे युक्त होना बतलाया है, जैसाकि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है । परंतु यहाँ उन चार 'उक्तं च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको सगरादि बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है ।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' संवत्सरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (शि० ले० नं. ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है । कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीवि-जयशिवमृगेशवर्मा' इन दोनों नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है; दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष संवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नहीं है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढंग बिलकुल उससे विलक्षण है । 'संवत्सरः चतुर्थः, वर्षा पक्षः अष्टमः, तिथिः पौर्णमासी,' इस कथनमें 'चतुर्थ' शब्द संभवतः ६० संवत्सरोंमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है; तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुस्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

दूसरा पत्र; दूसरी ओर

पञ्चदशनिवर्त्तना तांम्रशासने भूमिर्निबद्धा उञ्छकरभरादिविवर्जिता श्रीमद्भानुवर्मराजलब्धपादप्रसादेन **पण्डर**भोजकेन परमार्हद्भक्तेन प्रवर्द्धमानराज्य**श्रीरविवर्म्म**धर्म्ममहाराजस्य एकादशे संवत्सरे हेमन्तषष्ठपक्षे

तीसरा पत्र।

दशम्यां तिथौ ॥ तां यो हिनस्ति स्ववंश्यः परवंश्यो वा स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिः सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधरां
षष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते

[इस लेखमें भानुवर्मा और उसके अधीनस्थ कर्मचारी पण्डर 'भोजक' के दानका उल्लेख है। यह दान भानुवर्माके बड़े भाई रविवर्माके राज्यके ११ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके छठे पक्षमें दसवीं तिथिको दिया गया था। इस भूमिका दान जिनभगवानकी हर पूर्णिमाके दिन पूजन करनेके लिये ही हुआ था। भूमिका नाप १५ निवर्तन था। यह भूमि पलाशिका गाँवके कर्दमपटी की थी। इस लेखसे कदम्बवंशके राजाओंकी रविवर्माके समयतककी वंशावली का भी पता चलता है और वह यह है:—

१. काकुस्थवर्मा
|
२. शान्तिवर्मा
|
३. श्रीमृगेश
|
४. रविवर्मा (छोटा भाई भानुवर्मा)।

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० २७-२९]

१०३

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यातानभिषिक्तानाम् **'मानव्य'**-सगोत्राणाम् **हारितीपुत्राणाम्** प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चिकानाम् **कदम्बा(म्बा)**नाम्महाराजः **श्रीहरिवर्म्मा**

बहुभवकृतैः पुण्यै राजश्रियं निरुपद्रवाम्
प्रकृतिषु हितः प्राप्तो व्याप्तो जगद्यशसाखिलम्
श्रुतजलनिधिः विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थितः
स्वबलकुलिशाघातोच्छिन्नद्विषद्वसुधाधरः [॥]

स्वराज्यसंवत्सरे चतुर्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् **उच्चभृङ्गाम्** सर्व्वजनमनोह्लादवचनकर्म्मणा सपितृव्येण **शिवरथ**नामधेयेनोपदिष्टः **पलाशिकायाम्** भारद्वाज-सगोत्र**सिंहसेनापति**सुतेन **मृगेशेन** कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टाह्निकमहामहसततच (?) रूपलेपन-क्रियार्थं तदवशिष्टं सर्व्वसंघभोजनायेति सुदि (?) छि **कुन्दूर**विषये **वसुन्तवाटकं** सर्व्वपरिहारसंयुतं **कूर्चकानाम् वारिषेणाचार्यसङ्घ**-हस्ते **चन्द्रक्षान्तं** प्रमुखं कृत्वा दत्तवान् [॥] य एवं न्यायतोभिरक्षति स तत्पुण्यफलभाग्भवति [॥] यश्चैनं रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निकृष्टतमां गतिमवाप्नोति [॥] उक्तञ्च—

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः [॥]
बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [॥] इति

वर्धतां वर्धमानार्हच्छासनं संयमासनम्

येनाद्यापि जगज्जीवपापपुंजप्रभंजनम् [॥] नमोर्हते वर्धमानाय [॥]

[यह दानपत्र कदम्ब-राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है। उन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसंघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके वारिषेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया। यह और ९९ वां दान-पत्र दोनों, ताम्रपत्रोंपर हैं। नम्बर ९९ वें के दान-पत्रमें यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदा-यका। इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'वारिषेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे।]

[इं० ए०, जिल्द ६, पृ० ३०-३१]

१०४

हल्सी—संस्कृत।

—[?]—

प्रथमपत्र।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामि**महासेन**मातृगणानुध्यानाभिपिक्तानाम् **मानव्य**सगोत्राणा[न्] **हारिती**पुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्च्चापा-राणाम् कदम्बानाम् महाराजश्री**रविवर्म्मणः** स्वभुजबलपराक्रमावाप्ता(?) निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वन्मतिसुवर्णनिकषभूतस्य कामाद्यरिगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर।

त्यागाभिव्यक्तेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्जितार्थ [सं] हितसाधुज [न]-स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनयः पूर्व्वसुचरितोपचितविपुल-पुण्यसम्पादितशरीरबुद्धिसत्वः सर्व्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमाः महाराज-श्री**हरिवर्म्मा** स्वराज्यसंवत्सरे पञ्चमे **पलाशिका**धिष्ठाने **अहरिष्टि**-समाह्वय-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

श्रमणसङ्घान्त्रयवस्तुनः **धर्म्मनन्द्याचार्य्या**धिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्यालयस्य पूजासंस्कारनिमित्तम् साधुजनोपयोगार्थञ्च **सेन्द्रकाणां** कुलललामभूतस्य **भानुशक्ति**राजस्य विज्ञापनया **मरदे** ग्रामं दत्तवान् [।।] य एतल्लोभाद्वै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति यश्चाभिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र।

अवाप्नोतीति [।।] उक्तञ्च ।।

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ।।
वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।।
ये सेतूनभिरक्षन्ति भेग्रान् संस्थापयन्ति च ।
द्विगुणं पूर्व्वकर्तृभ्यः तत्फलं समुदाहृतम् [।।]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सेन्द्रकके कुलके भानुशक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्म्माने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रविवर्माका प्रियपुत्र है। यह दान राजधानी पलाशिकामें किया गया। इस दानका निमित्त वह चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और जिसपर आचार्य धर्मनन्दिकी आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान किया गया।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०८

देवगिरि—संस्कृत ।

—[?]—

विजय**त्रिपर्व्वते** स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यातामिषिक्तस्य **मानव्य**-सगोत्रस्य प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिबिम्बानां आश्रितजनाम्बानां **कदम्बा**नां धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समरार्जितविपुलैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (?) शरदमलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य **श्रीकृष्णवर्म्मणः** प्रियतनयो **देववर्म्म**युवराजः स्वपुण्यफलाभिकांक्षया त्रिलोकभूतहितदेशिनः धर्मप्रवर्त्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्च्चनमहिमार्थं **यापनीय [स] ङ्घेभ्यः** सिद्धकेदारे राजमानेन (?) द्वादश निवर्त्तनानि क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पंचमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स पुण्यफलमश्नुते (।) उक्तं च—बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (?) फलं ॥ अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्युक्तं सद्भिश्च परिपालितं । एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दु (?):ख (म) न्यार्त्थपालनं ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥
श्रीकृष्णनृपपुत्रेण कदम्बकुलकेतुना ।
रणप्रियेण **देवे**न दत्ता भूमिस्त्रि**पर्व्वते** ॥
दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेप्सुना ।
देववर्म्मेकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम् ॥

जयत्यर्हल्लिलोकेशः सर्व्वभूतहितंकरः ।
रागाद्यरिहरोनन्तोनन्तज्ञानदृगीश्वरः ॥

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० ३३-३५, नं. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोंके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चैत्यालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'यापनीय' संघको दान किया गया है।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वास्ते वही कसम दिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके सम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिसमें देववर्माको रणप्रिय, दयामृतसुखास्वाद-नसे पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है। अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्रायः वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है। इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेध' यज्ञका कर्ता और शरद् ऋतुके निर्मल आकाशमें उदित हुए चंद्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है।]

पूर्वके नं० ९७,९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्तियोंका पता चलता है:—

१ स्वामिमहासेन—गुरु।
२ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष।
३ शान्तिवर्मा—राजा।
४ मृगेश्वरवर्मा—राजा।
५ विजयशिवमृगेशवर्मा—महाराजा।
६ कृष्णवर्मा—महाराजा।
७ देववर्मा—युवराज।
८ दामकीर्ति—भोजक।
९ नरवर—सेनापति।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तसंसारपारावारैकसेतवः
महावीरार्हतः पूताश्चरणाम्बुजरेणवः ॥

श्रीमतां विश्व-विश्वम्भराभिसंस्तूयमान**मानव्य**सगोत्राणां **हारीति**-पुत्राणां सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्त्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-वशीकृताशेषमहीभृतानां (भृताम्) **चालुक्यानां** कुलमलंकरिष्णोः ॥ स्वभुजोपार्जितवसुन्धरस्य निजयशश्रवणमात्रेणैवावनतराजकस्य कीर्त्तिप-ताकावभासितदिगन्तरालस्य **जयसिंहस्य राजसिंहस्य (?)** सूनुस्सूनृत-वागनवरतदानार्द्रीकृतकरस्सुरगज इव प्रशमनिधिस्तपोनिधिरिव दृप्तवैरिषु प्राप्तरणरागो **रणरागो**ऽभवत् [॥] तस्य चात्मजे श्वमेधनाव (०मेधाव) भृत (थ)-स्नानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनृपतिमकुटतटघटितहटन्मणिगण-किरणवार्द्धीराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीरवे-णोत्सारितारातिस्तम्भेरममण्डले वर्ण्याश्रमसर्व्वधर्म्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?) मध्यवर्तिदेशाधीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

ध्वजदण्डकादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृत**चोल-चेर-केरल-सिंहल-कलिंग**भूपाले दण्डित**पाण्ड्य**दिमण्डि (ण्ड) लिके अप्रतिशासने **'सत्याश्रय'-श्री-पुलकेश**यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-कातपत्रं शासति सति [॥] राजा **रुन्द्रनीलसैन्द्रक**वंशशशांकायमानः

[इस लेखमें कुल २० पंक्तियाँ हैं। पंक्ति १ से १४ तकमें एक संस्कृत शिलालेख है जिसमें दानशालाके लिये तथा दूसरे और भी कार्योंके लिये एक खेत के, तथा गामुण्ड (गाँव के मुखियों) में से किसी के द्वारा निर्म्मापित जिनालय के दानकी प्रशस्ति है। वैजयन्ती या बनवासी का वर्णन चौथी पंक्तिमें हुआ-सा मालूम पड़ता है।

पंक्ति १५ से २० तक प्रायः पूर्ण हैं (खण्डित नहीं हैं) और उनमें एक पुरानी कर्णाटक-भाषाका लेख है जिसमें यह उल्लेख है कि, जिस समय कीर्त्तिवर्म्मा सार्वभौम-सत्ताके रूपमें शासन कर रहा था, और जब कि सिन्द नामका कोई एक राजा पाण्डीपुर नगरमें शासन कर रहा था दोण-गामुण्ड और एळगामुण्ड आदिने, राजा माधवत्तिकी सम्मतिसे, जिनेन्द्रके मन्दिरको पूजाके प्रबन्धके लिये अक्षत (अखण्ड चावल), सुगन्ध, पुष्प आदि, और चावलके खेतोंके आठ 'मत्तल' शाही मापसे माप कर दिये। ये चावलके खेत कर्म्मगलूर गाँवकी पश्चिमदिशामें थे।

इस शिलालेखका काल नहीं दिया है। लेकिन कीर्त्तिवर्म्माको जो उपाधियाँ दी हुई हैं उनसे, तथा अक्षरोंकी लिखावटसे यह स्पष्ट मालूम पड़ता है कि इस लेखमें उल्लेखित कीर्त्तिवर्म्मा पूर्ववर्ती चालुक्य राजा कीर्त्तिवर्म्मा प्रथम है, जिसके राज्यका अन्त शक ४८९ में हुआ था। इस लेखसे यह भी मालूम पड़ता है कि कीर्त्तिवर्म्मा प्रथमने कदम्बोंको जीता था।]

[ई. ए०, ११, पृ० ६८-७१, नं० १२०]

१०८

पहोले (जिला-कलद्गी)-संस्कृत।

[शक सं० ५५६=६३४ ई०]

चालुक्यवंशोद्भूतश्रीपुलकेशीका शिलालेख।

जयति भगवान्जिनेन्द्रो[वी]नज[रा-म]रणजन्मनो यस्य।
ज्ञानसमुद्रान्तर्गतमखिलं जगदन्तरीपमिव ॥ १ ॥
तदनु चिरमपरिचेयश्चालुक्यकुलविपुलजलनिधिर्जयति।
पृथिवीमौलिललामो यः प्रभवः पुरुषरत्नानाम् ॥ २ ॥

शूरे विदुषि च विभजन्दानं मानं च युगपदेकत्र ।
अविहितयाथातथ्यो जयति च **सत्याश्रयः**[1] सुचिरम् ॥ ३ ॥
पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्वर्थतां चिरं जातः ।
तद्वंशे (श्ये) षु जिगीषुषु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥
नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्वपत्तिद्विपे
नृत्यद्भीमकबन्धखड्गकिरणज्वालासहस्रे रणे[1]।
लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-
द्राजासीज्जयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्चुलुक्यान्वयः ॥ ५ ॥
तदात्मजोऽभूद्**रणराग**नामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।
अमानुषत्वं किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्षात् ॥६॥
तस्याभवत्तनूजः **पुलकेशी** यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।
श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्**वातापिपुरी**वधूवरताम् ॥ ७ ॥
यस्त्रिवर्गपदवीमलं क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।
भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृथमज्जना बभौ ॥ ८ ॥
नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य बभूव **कीर्तिवर्मा** ।
परदारविवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥
रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।
नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥१०॥
तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे
राजाभवत्तदनुजः किल **मङ्गलीशः** ।
यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्वः
सेनारजःपटवितिर्मितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

---

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमिस्रसंचयम् ।
अवाप्तवान् यो रणरङ्गमन्दिरे कलच्चुरिश्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षोः सैन्यमाक्रान्तसालं
रुचिरबहुपताकं रेवतीद्वीपमाशु ।
सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तबिम्बं
वरुणबलमिवाभूदागतं यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याग्रजस्य तनये नहुषानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमतः पितृव्यं
ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायबुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्तात् ।
स्वतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं
निजमतनु च राज्यं जीवितं चोज्झति स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभंगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्धं
यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-
र्गर्जद्भिर्वारिवाहैरलिकुलमलिनं व्योम या(जा)तं कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा कालं भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकाख्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीकैर्युधि भयरसज्ञत्वमेकः प्रयात-
स्तत्रावाप्तं फलमुपकृतस्यापरेणापि सद्यः ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गविलसद्धंसानदीमेखलां
वनवासीमवमृद्नतः सुरपुरप्रस्पर्धिनी संपदा ।
महता यस्य बलार्णवेन परितः संछादितोर्वीतलं
स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गतं तत्तत्क्षणे पश्यताम् ॥१८

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसंपदोऽपि ।
यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानशौण्डाः ॥ १९ ॥

कोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।
उदस्तास्तरसा **मौर्य**पल्वलाम्बुसमृद्धयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरीं पुरमित्रभे
मदगजघटाकारैर्नीवां शतैरवमृद्नति ।
जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचकं
जलनिधिरिव व्योम व्योम्नः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य **लाटमालवगूर्जराः** ।
दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरिमितविभूतिस्फीतसामन्तसेना-
मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।
युधि पतितगजेन्द्रानीकबीभत्सभूतो
भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

सुरभुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा
विविधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।
अधिकतरमराजत्खेन तेजोमहिम्ना
शिखरिभिरिभवर्ष्या वर्ष्मणां स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-
स्तिसृभिरपि गुणौघैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।
अनमदधिपतित्वं यो **महाराष्ट्रकाणां**
नवनवतिसहस्रग्रामभाजां त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणां स्वगुणैस्त्रिवर्गतुङ्गा विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।
अभवन्नुपजातभीतिलिङ्गा यदनीकेन स**कोसलाः कलिङ्गाः** ॥२६॥

पिष्टं पिष्टपुरं येन जातं दुर्गमदुर्गमम् ।
चित्रं यस्य कलेर्वृत्तं जातं दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

संनद्धवारणघटास्थगितान्तरालं
नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।
आसीज्जलं यदवमर्दितमभ्रगर्भा-
केणालमम्बरमिवोर्जितसांध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्धूतामलचामरध्वजशतच्छन्नान्धकारैर्बलैः
शौर्योत्साहरसोद्धतारिमथनैर्मौलादिभिः षड्विधैः ।
आक्रान्तात्मबलोन्नतिं बलरजःसंछन्नका**ञ्चीपुरः**
प्राकारान्तरितप्रतापमकरोद्यः **पल्लवानां** पतिम् ॥ २९ ॥

कावेरी द्रुतशफरीविलोलनेत्रा **चोला**नां सपदि जयोद्यतस्तस्य (?) ।
प्रश्चद्योतन्मदगजसेतुरुद्धनीरा संस्पर्शं परिहरति स्म रत्नराशेः ॥ ३० ॥

चोलकेरलपाण्ड्यानां योऽभूत्तत्र महर्द्धये ।
पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥
उत्साहप्रभुमन्त्रशक्तिसहिते यस्मिन्समन्ताद्दिशो
जित्वा भूमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातापीं नगरीं प्रविश्य नगरीमेकामिवोर्वीमिमां
चञ्चन्नीरधिनीरनीलपरिखां **सत्याश्रये** शासति ॥ ३२ ॥
त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादितः ।
सप्ताब्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वब्देषु पञ्चसु (३७३५) ॥३३ ॥
पञ्चाशत्सु कलौ काले **षट्सु पञ्चशतासु च** (६५६) ।
समासु समतीतासु **शकाना**मपि भूभुजाम् ॥ ३४ ॥
तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य
सत्याश्रयस्य परमाप्तवता प्रसादम् ।
शैलं जिनेन्द्रभवनं भवनं महिम्नां
निर्मापितं मतिमता **रविकीर्त्ति**नेदम् ॥ ३५ ॥
प्रशस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।
कर्त्ता कारयिता चापि **रविकीर्त्तिः** कृती स्वयम् ॥३६॥
येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।
स विजयतां **रविकीर्त्तिः** कविताश्रित**कालिदासभारवि**कीर्त्तिः ३७

[प्राचीनलेखमाला, प्रथमभाग, ले० १६, पृ० ६८–७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाद्गी) जिलेके हुङ्गुण्ड तालुकाके ऐहोळेके मेगुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है। लेखमें कुल १९ पंक्तियाँ हैं, जिनमेंसे १८ वीं पंक्ति पूर्ण और १९ वीं छोटी पंक्ति बादमें किसीकी जोड़ी हुई हैं और जिनमें महत्त्व-पूर्ण कोई बात नहीं है।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्त्तिका बनाया हुआ है। वे (रविकीर्त्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमें थे। यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था। इन्होंने शिलालेखवाले जिनालयमें जिनेन्द्रकी मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा की। प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी द्वितीय (रविकीर्त्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोंकी प्रशस्ति है । इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योंका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डा० फ्लीटने दिया है[1] ।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोंका है । इनको रविकीर्त्ति के आशयानुसार, रघुवंशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी-सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है । इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्त्तिका कालिदासके रघुवंशका तथा भारविके किरातार्जुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्तिः कविताश्रित-कालिदासभारवि-कीर्तिः' सचमुचमें ठीक है ।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गूर्जर लोग अपने-आप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं ।]

[इं० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७-७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

—[?]—

जयत्यतिशयजिनेर्भासुरस्सुरवन्दितः ।
श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्त्ता दयोदयः ॥

देहहिमरि (इह हि स्वस्ति) ॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुष्वतीतेषु **रणपराक्रमाङ्क**महाराजो भवत्तद्राजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्चतुस्समुद्रान्तस्नाततुरङ्गेभपदातिसेनासमूहः **एरेय**नामधेयः श्रीमान् ॥

---

१ देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed., especially p. 51; और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p. 349 ff.

स्वस्ति श्रीमत् जितं भगवता जिनवर-वृषमेण वृषमेण पुरा कलि-अवसर्पिण्यां द्वावरे युगे लोक-स्थितिरक्षार्त्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना पुरुषोत्तमेन सूर्य्य-वंश-व्योम-सूर्य्येण महारथेन दाशरथिना **राम-स्वामिना** प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हतः परमेष्ठिनः सर्व्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात् पाण्डवजनन्या **को(कु)न्तिदेव्या** पुनर्न्नवीकृत-संस्काराय भूमिदेव्यास्तिलकायमानाय स्वर्ग्गापवर्ग्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धरणेन्द्रस्य फणा-मणि-लीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निध्यात् पावनाय परम-तीर्त्थाय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय **श्रीकुन्दा**ख्याय (यहाँ बन्द हो जाता है)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्प्पिणीके द्वापर-युगमें, सूर्यवंशके गगनमें सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा अर्हन्त-परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया। बादमें, पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढ़ी, सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (बिम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत, परमतीर्थ, जिसमें जगह-जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख खतम हो जाता है।[1])

[EC, X, Chik-ballapur tl., no. 29.]

११९

बेलवत्ते—कन्नड़।

विना काल–निर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[बेलवत्ते-मैसूर तालुकेमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरेयर्दि एर्देनु मुने········ऌलियु प्रभिन्न-वाग्वि बिह्लोरु गुर्रि····

---

१ प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमें लगा देनेसे यह लेख संभाव्य-रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमें चतुर्थी विभक्ति होती है, जो यहाँ है।

दुं एल्दु दवे तम्म क्षेमकिरदल्लि-मेच्चिर ताव्वदु परत्रे यपुदेवदेरू महा-प्रभु-**गोवपय्यन्** इन्त् इळ्दपु समाधियोळे मुडिपि ताब्दिदन्तितमरेन्द्र-भोगमं ॥ पदेदोम् **श्री-पुरुषय्यल्** आम्मु-मोदलोळ् कल्नाडन् अन्दों बळेक् एदेयोळ् अक्कुडु भूतिमूतुगानो दोन धाण धीक्षे सळे पडेदे····पितृ-कळत्र-मित्र-जनमं काव्यान्य ताव्दू अप्पोडी-नुडियल् वेल्कुमे पेम्पन् ओप्प गुणते तोळमिकिळ्द गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुषकी तरफसे भूमि-दान मिला था और वे (गो. प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl., no. 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड़ ।

विना कालनिर्देशका (संभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कूडनहल्लि तालुका), मारीगुडीके पूर्वमें]

स्वस्ति **श्रीपुरुष**-महा·········पृथुवी-राज्यकेये **अरट्टि**····रम्मगन्दिर् **सिंगं** दीक्षे वीळ्दु **अरट्टि-तीरर् कुडलूरद** गोट्टे **मडिओडे**-यम्बर् आळ्वकय

(पृष्ठभागपर)

नोकज-ओडे आगदीकाड·········कोट्ट नेल तेनेन्धक काळेर्कु साक्षी कुडल्ल पोक्कुलरं एळमडियरं एळिरियरं मदुगरं कागब्बरं साक्षि आग कोट्टदु आळ् आळ् किडिशिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-पार्वर् कोन्द कोले आक्का कोडिशिदोनु·········कडुवेडिळोनुडि तेन्ने··· ळ्दि खचोनु····अरट्टिग तळर कुडल्लर् आव्वत्ति

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे;—अरट्टि·····के पुत्र सिंगम् के (जिन) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मां) अरट्टितिने कुडलूर् किलेके मडि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमें भूमिदान किया ।]

[EC, III, Mysore tl., no. 25.]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

शक सं० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णय्यके ताम्रपत्रोंपर]

(IIb) स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमज्जाह्नवेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणभूषितः काण्वायन-सगोत्रः श्रीमत्**कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाधिराजः** तस्य पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृकुशलो **दत्तकसूत्रवृत्तेः** प्रणेता श्रीमान् **माधवमहाधिराजः** तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्धरिवर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो (IIa) नारायणचरणानुध्यातः श्रीमान् **विष्णुगोपमहाधिराजः** तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजबलपराक्रमक्रयक्रीतराज्यः कलियुगबलपङ्कावसन्नधर्म्मवृषोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान् **माधवमहाधिराजः** तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिनः **कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य** प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरितान्तरात्मा निरवग्रहप्रधानशौर्यो विद्वत्सु ? (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

कोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः **अन्दरि-आलत्तूर्-प्पोरुलर्रे-पेल्लनगरा**द्यनेकसमरमुखमखहुतप्रहतशूर-पुरुषपशूपहारविस्रसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-सर्ग- (IIb) टीकाकारो **दुर्व्विनीत**नामधेयः तस्य पुत्रो दुर्दान्तविमर्द्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-युगलनलिनो **मुष्कर**नामधेयः तस्य पुत्रश्चतुर्दशविद्यास्थानाधिगत-विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः **श्रीविक्रम**प्रथितनामधेयः तस्य पुत्रः अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात-व्रणसंरूढभास्वद्वि-जयलक्षणलक्ष्मीकृतविशालवक्षस्थलः समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वस्समा-राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरितर् प्रतिदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो **भूविक्रम**-नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कवाटोत्थितास्रग्-
धारास्वाद-प्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्दभीमे ।
संग्रामे **पल्लवेन्द्रं** नरपतिमजयद्यो **विळन्दा**-भिधाने
राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥
तस्यानुजो ननतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
लक्ष्म्या स्वयम्वृतपति**र्नवकाम**नामा
शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्त्तिः ॥

तस्य **कोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारा**परनामधेयस्य पौत्रः सम-वनतसमस्तसामन्तमुकुटतटघटितबहलरत्नविलसदमरधनुष्खण्डमण्डितच-

रणनखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटासं-घट्टदारुणसमरशिरसि निहितात्मकोपो भीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्त्तोऽलोकधूर्त्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धलब्धविजय-सम्पद हितगजघ (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी । अपि च ।

यो गङ्गान्वयनिर्म्मलाम्बरतलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः ।
सौराज्यं समुपेत्य राज्यसमितौ राजन् गुणैरुत्तमै-
राज-**श्रीपुरुषश्चिरं** विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथतनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये बलारिर्ब्बहुमहसि रविस्त्व-प्रभुत्वे धनेशः ।
भूयो विख्यातशक्तिस्स्फुटतरमखिलं प्राणभाजं विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजानां पित(पति)रिति कवयो यं प्रशंसन्ति नित्यं ॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहघोषमुखरितमन्दिरोदरेण **श्रीपुरुष**प्रथमनामधेयेन **पृथुवीकोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-[षु] षट्च्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेष्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्य्ये संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने मान्यपुर**मधिव-(IVa)सति विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनन्दित**नन्दिसङ्घान्वये एरेगित्तू-र्नाम्नि गणे पुलिकल्ल**गच्छे स्वच्छतरगुणकिर[ण]प्रततिप्रह्लादितसकललोकः चन्द्र इवापरः **चन्द्रनन्दी**नाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-कपरिरक्षणदक्षमात्मशक्तिः परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारद्वितीयः **कुमार-ण(न)न्दी** नाम मुनिपतिरभवत् तस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्त्तिः **कीर्त्ति(र्त्ति)नन्द्याचार्यो** नाम महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्म्मव्योमावभासनभास्करः **विमलचन्द्राचार्य**स्समुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धर्म्मोपदेशनया श्रीमद्द्राणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाप्रखण्डितारिमण्डलद्रुमषण्डो **दुण्डु**प्रथमनामधेयो **नीर्गुन्द**युवराजो जज्ञे तस्य प्रियात्मजः आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः चरितार्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूळ**प्रथमनामधेयश्रीपृथुवीनीर्गुन्दराजोऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजायां सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म्म**णो जाता **कुन्दाच्चि**नामधेया भर्तृभवन आबभूव भार्य्या तया सततप्रवर्त्तितधर्म्मकार्य्यया निर्म्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्व्वते **लोकतिलक**नाम्ने **जिनभवनाय** खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्म्मप्रवर्त्तनार्थं तस्यैव पृ(Va)**थिवीनीर्गुन्दराज**स्य विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री**जसहितदेवेन** नीर्गुन्दविषयान्तर्पाति **पोन्नवळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्यां दिशि नोलिबेळदा बेळगल्-मोरेदि पूर्व्वदक्षिणस्यां दिशि पण्यङ्गेरी दक्षिणस्यां दिशि बेळगल्लिगेरेया ओळगेरेया पल्लदा कूडळ् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या बेळगल्-मोरेदु पश्चिमायान्दिशि पोङ्केवि तालुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्यां दिशि पुणुसेया गोट्टेगाला कल्लुकुप्पे उत्तरस्यां दिशि सामगेरेया पोल्लदा पेर्म्मुरिकु उत्तरपूर्वस्यां दिशि कळम्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दुण्डुमुद्रदा वयलुळ् किरुदारामेगे **पदिर्क्कण्डुगं** मण्णं **पळेया एरेनल्लूरा** ऊर्प्पाळु ओर्क्कण्डुगं **श्रीवुरदा दु** (Vb) **ण्डुगामुण्डरा** तोण्टदा पडुवायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयलुळ् कर्म्मग्गट्टिनल्लि इर्क्कण्डुगं कळनि पेग्गेरेया केळगे आरुगण्डुगमेरे पुलिगेरेया कोयिलगोडा एडे इर्प्पत्तुगण्डुगं ब्बेडे आदुवु श्रीवुरदा बडगण पडुवण कोणुळळ् **देवङ्केरि** मदमने ओन्दं

अपि च ।

यस्यैकस्यापि सर्व्वं जगदपि स-रुषो नाग्रतस् स्थातुमीष्टे
दित्सा-सम्भूत-बुद्धेरपि नव निधयो यस्य नालं नृपस्य ।
जिह्रे तीव्राभिमानात् कपट-विजयिनां यद्-धृतेर्न्नाकधाम्नाम्

[रा] ज्ञां विज्ञातकीर्ति [स्स] सकल-जगतां नन्दनो **मारसिंहः** ॥

यश्च सतत-सम्पादित-कमलानन्दोऽप्यप्रचण्डकरः पुण्य-जन-सत्त्व-समेतोऽप्यनृशंस-मानसः मत्त-मातङ्ग-स्कन्ध-लालितोऽप्यति-शुचि-स्वभावः प्रिय-धनुरप्यमार्ग्गणः समनुष्ठित-दण्ड-नीतिरप्यदण्डक्रम-गतिः ॥

अपि च ।

धूसरीकुरुते यस्य चरणाम्भोज-जं रजः ।
प्रणतानन्त-सामन्त-चूडामणि-मधुव्रजम् ॥

तेन **लो** (५ व) **क-त्रिनेत्रा**पर-नामधेयेन समधिगत-यौवराज्य-पदेन भगवत्सहस्र-किरण-चरण-नलिन-षट्चरणायमान-मानसेन ॥ तस्मिंश्च प्रसाधिताशेष-सामन्त·····अखण्डं **गङ्ग-मण्डल**मनुशासति श्री**मारसिंहा**भिधाने आसीत् समस्त-सामन्त-सेनाधिपतिः परमार्हतः परम-धार्म्मिकः मन्त्र-प्रभूत्साह-शक्ति-सम्पन्नः **श्रीविजयो** नाम यश्च सहस्रदीधितिरिव तिरोहिताखिल-पर-तेजः पर-तेजः-प्रसरोऽपि असन्तापित-भूतलः सुनाशीर इवाखण्डित-सकल-जनाह्लोऽपि अगोत्र-भेदन-करः गुह इव शक्ति-समुत्सारिता-वर्गोऽपि अकृत-बल-भावःशिशिरगभस्तिरिव प्रह्लादनोद्योतनसमर्थोऽपि अदोषाश्रित-विग्रहः वारिराशिरिव अपरिमित-सत्व-समाश्रयोऽपि अपङ्क-मल-गृहीतः विनतानंद [न] इव अतिदूर-द [र्श] नोऽपि अपिशिताशनः शतक्रतुरिव बुध-गुरु-मित्र-परिवृतोऽपि न [प] र-दार-रति-शक्तः झषकेतन इव स्ववशीकृत-सकल-जनोऽपि अप्र (प)

हृत-बलाबलो-तप....यश्च अमृतमयो भृत्यानां सुखमयो मित्राणां सुधामयो रामाणामुत्साहमयः प्रजानां विनयमयो गुरूणां नयसूस्त्र (६ अ) लद्-वृत्तीनां अग्रणी रसिकानां स्रष्टा काव्य-रचनानां उपदेष्टा नयानां द्रष्टा स्वामि-कार्य्याणां विद्वेष्टा कृत-दोषाणां यष्टा महा-मखानां परिमार्ष्टा पापानां प्रष्टा निर्म्माण-हेतूनां परिकृष्टा श्रितागसाम् ।

अपि च ।

उदन्वानिव गाम्भीर्य्ये विवस्वानिव तेजसि ।
शशलक्ष्मेव लावण्ये नभस्वानिव यो बले ॥
मनोभूरिव सौरूप्ये मघवानिव सम्पदि ।
सुरमन्त्रीव शास्त्रार्थे उशनेव च यो नये ॥
ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभां योऽनेकं वसतिं प्रभुः ॥
स **मान्यनगरे** श्रीमान् **श्रीविजयो**ऽकार [य] च्छुभम् ।
जिनेन्द्र-भवनं तुङ्गं निर्म्मलं स्व-महस्-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेष-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-**मारसिंह**स्यानुज्ञया **श्रीविजयो** महानुभावः **किषु-वेक्कूर**-ग्राममादाय **मान्यपुर**-विनिर्म्मिताय भगवदर्हदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (**यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है**) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-**तोरणाचार्य्यः** कोण्डकुन्दान्वयोद्भवः
स तै [द] ह्विषये धीमान् **शाल्मली**ग्राममाश्रितः ॥
निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
स्वतेजोद्द्योतित-क्षोणिः चण्डार्च्चिरिव यो बभौ ॥

तस्याभूत् **पुष्पनन्दी**ति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः ।
तच्छिष्यश्च **प्रभाचन्द्रः** तस्येयं वसतिः कृता ॥

(३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

इदष **शक-वर्ष एळनूरा पत्तोम्भत्तु वर्षंगु मूषु तिङ्गळुमाषाढ-शुक्ल-पक्षदा पञ्चमियुमुत्तराभाद्रपतेयुं सोमवारमुं** शासनं निर्मितं । अस्य दानस्य साक्षिणः **षण्णवति-सहस्र**-विषय-प्रकृतयः योऽस्यापहर्त्ता लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्तां पर-दत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् ।
(७ अ) षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठा [यां जा] यते कृमिः ।
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ब्रह्मस्वं तु विषं घोरं न विषं विषमुच्यते ।
विषमेकाकिनं हन्ति देव-स्वं पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-**विश्वकर्म्माचार्य्येण**दं शासनं लिखितं चतुष्कण्डुक-व्रीहि-बीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्गु-क्षेत्रं तदपि देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्गा)-कुलके स्वच्छ आकाशमें चमकते हुए सूर्य; काण्वायन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराज थे ।
(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज थे ।

(३) उनके पुत्र श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराज थे।

(४) ,, ,, श्रीमान् विष्णुगोप-महाधिराज थे।

(५) ,, ,, ,, माधव-महाधिराज थे।

(६) उनके पुत्र, जो कदम्ब-कुलवंशीय कृष्णवर्म्म-महाधिराजकी प्रिय बहिनके पुत्र थे, अविनीत नामके श्रीमान् कोङ्गणि-महाधिराज थे।

(७) उनके पुत्र दुर्विनीत थे। इन्होंने अन्दरि, आलसूर, पोरुलणे, पेळ्नगर और दूसरे स्थानोंके युद्धोंको जीता था। इन्होंने किरातार्जुनीय के १५ सर्गोंपर टीका की थी।

(८) इनके पुत्र मुष्कर थे।

(९) उनके पुत्र श्रीविक्रम थे, वे चौदहों विद्याओंमें पारङ्गत थे।

(१०) उनके पुत्र भूविक्रम थे। इन्होंने विलन्दकी भयानक लड़ाईमें राजा पल्लवेन्द्रको जीता था, और सौ लड़ाइयोंमें विजय लाभ करनेसे इनको 'राजश्रीवल्लभ' भी कहते थे।

(११) उनका छोटा भाई नव-काम था।

(१२) शिवमार-कोङ्गणि महाराजका नाती श्रीपुरुष था, उन्हें पृथिवी-कोङ्गणि-महाधिराज भी कहते थे।

(१३) उनके पुत्र, प्रसिद्ध गंगवंशके स्वच्छ आकाशके सूर्य, कोङ्गणि-महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-शिवमार-देव थे। इनकी बहुत-सी प्रशंसाका वर्णन है।

(१४) उनके पुत्र, मारासिंह थे।

जब वे अखण्ड गङ्ग-मण्डलपर राज्य कर रहे थे;-उनका एक श्रीविजय नामका सेनापति था। उसकी प्रशंसा। उसने मान्य-नगरमें एक शुभ, विशाल जिनमन्दिर बनवाया। उसे श्रीमारसिंहसे किपु-वेक्कुरु गाँव मिला था, वह उसने इसी अर्हत्-मन्दिरको भेंट कर दिया। इस गाँवकी सीमायें।

शाल्मली गाँवमें रहनेवाले, कोण्डकुन्दान्वयके तोरणाचार्य्य थे। उनके शिष्य पद्मनन्दि थे। उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जिन्होंने अपना आवास यहीं बना लिया था। जडियके तालाबोंकी नीचेकी जो जमीनें उनको दी गई थीं उनकी विगत। यह शासन (लेख) शक वर्ष ७१९ के ३ महीने बाद, आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी, उत्तरभाद्रपद, सोमवारको निकला था।

इस दानके साक्षी–९६००० के विद्यमान अफसर (अधिकारी गण)। ये ही श्रापात्मक श्लोक।

विश्वकर्म्माचार्य्यने इस शासनको लिखा था। प्रभाचन्द्र देवको दी गई भूमिकी विगत।]

[EC, IX, Nelamangala, tl., n° 60]

१२३

मन्ने—संस्कृत।

शक ७२४=८०२ ई०

[मन्नेमें, शानभोग नरहरियप्पके अधिकारके ताम्रपत्रोंपर]

(१ ब) स वोऽव्याद् वेधसां धाम यन्नाभि-कमलं कृतम्।
हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलङ्कृतम्॥
भूयोऽभवद् बृहदुरुस्थल-राजमान-
श्री-कौस्तुभायत-करैरुपगूढ-कण्ठः।
सत्यान्वितो विपुल-बाहु-विनिर्जितारि-
चक्रोऽप्यकृष्ण-चरितो भुवि **कृष्ण-राजः**॥

पक्ष-च्छेद-भयाश्रिताखिल-महा-भूभृत्-कुल-भ्राजितात्
दुर्लङ्घ्यादपरैरनेक-विपुल-भ्राजिष्णु-रत्नान्वितात्।
यश्चालुक्यकुलादनून-विबुधा[····]श्रया [द्] वारिधेः
लक्ष्मीं मन्दरवत् स-लीलमचिरादाकृष्टवान् **वल्लभः**॥
तस्याभूत् तनयः प्रता [प]-विसरैराक्रान्त-दिङ्-मण्डलश्
चण्डांशोस्सदृशोऽप्य-चण्ड-करतःप्रह्लादित-क्ष्माधरो।
धीरो धैर्य्य-धनो विपक्ष-वनिता-वक्त्राम्बुज-श्री-हरो
हारीकृत्य यशो यदीयमनिशं दिङ्-नायिकाभिर्धृतम्॥

ज्येष्ठोल्लंघन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
योऽभून्निर्म्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोषाकरो न क्वचित् ।
कर्णाधः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशां प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
अन्यैर्न्न जातु विजितं गुरु-शक्ति-सारं
आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
येनेह बद्धमवलोक्य चिराय **गङ्गान्**
दूरे स्व-निग्रह-भियेव कलिः प्रयातः ॥
एकत्रात्म-बलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुध्वा घनान्
निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुचः प्राप्यानतात् **पल्लवात्**
तच्चित्रं मद-लेशमप्यनुदिनं यस्स्पृष्टवान् न क्वचित् ॥
हेला-स्वीकृत-**गौड**-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
उन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिबलैर्यो **वत्सराजं** बलैः ।
गौडीयं शरदिन्दु-पाद-धवल-च्छत्र-द्वयं केवलम्
तस्मादाहृत-तद्-यशोऽपि ककुभां प्रान्ते स्थितं तत्-क्षणात् ॥
लब्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
उत्सार्य्य शुद्ध-चरितैर्धरणी-तलस्य ।
कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेषम्
चित्रं कथं **निरुपमः** कलि-वल्लभोऽभूत् ॥
प्राभू-(२ ब)द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्य्यथा वारिधेः
शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-संसक्त-पादस्तथा ।
पद्मानन्दकरः प्रताप-सहितो निल्योदयस्सोन्नतेः
पूर्व्वाद्रेरिव भानुमानभिमतो **गोविन्दराजः** सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-**राष्ट्रकूटा**न्वयो
जाते **यादव**-वंशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्घ्यः परैः ।
दृष्ट्वा सावधयः कृतास्सु-सदृशाः दानेन येनोद्धताः
युक्ताहार-विभूषिताः स्फुटमिति प्रत्यर्थिनोऽप्यर्थिनः ॥
यस्याकारमनानुषं त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
कृष्णस्येव निरीक्ष्य यच्छति पदं यद्याधिपत्य भुवः ।
आस्तां तात तवेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठिका
किन्त्वाज्ञैव मया धृतेति पितरं युक्तं स तत्राभ्यधात् ॥
तस्मिन् स्वर्ग-विभूषणाय जनने याते यशश्शेषताम्
एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधित्सया ।
वि-च्छायान् सहसा व्यधत्त नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
ख्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्संवर्त्त (२ अ) कोल्कानिव ॥
येनात्यन्त-दयालुनोग्र-निगल-क्लेशादपास्यानतम्
स्वं देशं गमितोऽपि दर्प्प-विसरद् यः प्रा [····]कूल्ये स्थितः ।
लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नालक्ष्यते
विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादाबद्ध-गङ्गः पुनः ॥
सन्धायासि शिलीमुखान् स्व-समयात् बाणासनस्योपरि
प्राप्तं वर्द्धित-बन्धु-जीव-विभवं पद्माभिवृद्ध्यान्वितम् ।
सर्व्वं क्षेत्रमुदीक्ष्य यं शरद्-ऋतुं पर्ज्जन्यवद् **गूर्जरो**
नष्टः क्वापि भयात् तथापि समयं स्वप्नेऽप्यपश्यन्····॥
यत्पादानति-मात्र····क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-धिया
दूरान् **मालव**-नायको नय-परो यत्रातिबद्धाञ्जलिः ।
यो विद्वान् बलिना सहाल्प-बलवान् स्पर्द्धां न धत्ते पराम्
नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्वेदनम् ॥

४० चिन्तामणिरिति ध्रुवं यं वदन्त्यर्थिनः । नित्यं प्रीत्या प्राप्तार्थ-सम्पदसौ **प्रभूतवर्ष** इति वि–

४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [॥] तस्यानुजः **धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधि–**

४२ **राजपरमेश्वरः** खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्डः पुण्डरीक[1] इव बलिरिपु-मर्दना–

४३ क्रान्त-सकल-भुवनतलः सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्वहन-समर्थः हिमशैल-वि–

४४ शालोरःस्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालिंगन-तुङ्ग-कुच–

तीसरा पत्र; पहली बाजू

४५ संग-सुखोद्रेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन स्व-भुजासि-धारा-दलित-समस्त-[2] गलित-मुक्ताफल-वि–

४६ सर-विराजितारि-बल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घट्टित-घनीकृतेन विराजमानः त्रिपुर–

४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटांस-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-चामर-चयः फेन-पिण्ड–

४८ पाण्डुर-प्रभावोदितच्छविना वृत्तेनापि चतुराकारेण सितातपत्रेणाच्छादित-समस्त-दिग्-विव–

४९ [3]रो रिपुजनहृदयविदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

---

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पढ़ो। २ 'दलितमस्त' पढ़ो। ३ आगे ४९ वीं पंक्तिसे प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है।

लामुत्पादयता प्रहतपटहढक्कागम्भीरध्वानेन घनाघनगर्जनानुकारिणा अस्याचितो विनोदनिर्गमः (?) स्वकीयां साङ्गलतां (?) परनृपचेतोवृत्तिषु दातुमिवोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्नः (?) तुरङ्गमखरखुरोत्थितपांशुपटलमसृणितजलदसंचयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमितमहीपरागः ।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फालना-
न्निर्भिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये संचलच्चेतसः । (?)
तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं संत्यज्य राज्यं रणे
भग्ना मोहवशात् स्वयं खलु दिशामन्तं भजन्तेऽरयः ॥
इदं कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातुं महत्संकटमित्युदग्रम् ।
स्वस्यावकाशं न करोति यस्य यशो दिशां भित्तिविभेदनानि ॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः **धारावर्ष** इति जगति विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया **वल्लभ** इति । तस्यात्मजो निजभुजबलसमानीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलातपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलखलायमानधवलशृङ्खलारवबधिरीकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमाह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशावष्टब्धजनमनःपरिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्यः **प्रभूतवर्ष-श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य** प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसंवत्सरेषु वदत्सु[1] । चारु**चालुक्या**न्वयगगनतलहरिणलाञ्छनायमान**श्रीन-लवर्म**नरेन्द्रस्य सूनुः स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिरःशेखरार्चितचरणयुगलो **यशोवर्म**नामधेयो राजा व्यराजत । तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरां धीराजमानो

१ 'वहत्सु' पाठ मालूम पड़ता है ।

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीयः (?) रणचतुरश्चतुरजनाश्रयः श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत। असौ महात्मा

कमलोचितसद्मजान्तर**श्रीविमलादित्य** इति प्रतीतनामा।
कमनीयवपुर्विलासिनीनां भ्रमदक्षिभ्रमरालिवक्त्रपद्मः॥

यः प्रचण्डतरकरवालदलितरिपुनृपकरिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्णितरुचिरक्ताब्धिकान्तिरुचिरपरीतनिजकलत्रकण्ठः शितिकण्ठ इव महितमहिमामोद्यमानरुचिरकीर्तिरशेषगङ्गमण्डलाधिराज **श्रीचाकिराजस्य** भागिनेयः भुवि प्रकाशत[1] यस्मिन् **कुनुन्गिल**नामदेशमयशःपराङ्मुखो[2] **मनु**मार्गेण पालयति सति **श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे** [3]**श्रीकित्या**चार्यान्वये बहुष्वाचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरणकू**विलाचार्य्या**णामासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहारः स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदयः **विजयकीर्ति**नाममुनिप्रभुरभूत्।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तमः।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम्॥

तस्मै मुनिवराय तस्य **विमलादित्य**स्य शरणेश्वर (?)पीडापनोदाय **मयूरखण्डि**मधिवसति विजयस्कन्धावारे **चाकिराजे**न विज्ञापितो वल्लभेन्द्रः **इडिगू**र्विषयमध्यवर्तिनं **जालमङ्गल**नामधेयग्रामं **शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुर**वरापरदिग्विभागालंकारभूत**शिलाग्रामा**जनेन्द्रभवनाय दत्तवान् तस्य पूर्वदक्षिणापरोत्तरदिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालूम पड़ता है। २ 'पराङ्मुखे' यह अपेक्षित है। ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है। ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालूम पड़ता है।

बेल्लिन्द-गुडुनूरत्तरिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एवं चतुर्णां ग्रामाणां मध्ये व्यवस्थितस्य **जालमङ्गलस्यायं** चतुरावधिक्रमः[1] पुनस्तस्य सीमा-विभागः ईशानतः मुकूडल्दक्षिणदिग्विभागमवलोक्य एल्तगकोडल-मूडग-केल-बन्दु इर्प्पेय-कोषदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरिये कोदेयालि-बेलने सयकने-बन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए बिदिरूग्गेरे मुकू-डल् ततः पश्चिमतः पुलिपदिय तेङ्कण पेर् ओल्बेये पेर्बिलिके एल-गल-करण्डलो मुकूडल् अन्ते सय्कने पोगि नाय्मणिगेरेय ताय्गण्डि मुकूडल् ततः उत्तरतः बल्लगेरेय पडुव गजगोड पलम्बे पुणुसेये आने-दलो गेरेए पुल्पडिये एलगल्ले पुलिगारद गेरे मुकूडल् ततः पूर्वतः निडु विलिड्के····दविन पुल्पडिये कञ्चगार गल्ले पोल एल्ले पुणुसये बट्टपु-णुसये बेलने बन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्तू । राचमल्लगाम-ण्डनु शीरनु गङ्गगामुण्डनु मारेयनु बेल्गोरेय् ओडेयोरु मोदबागे-एल्पदि-म्बरु कुनुन्गिल्-अयसार्बरु साक्षियागे कोट्टत्तू । नमः ।

अद्भिर्दत्तं त्रिभिर्भुक्तं षड्भिश्च परिपालितम् ।
एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥
स्वं दातुं सुमहच्छक्यं दुःखमन्यस्य पालनम् ।
दानं वा पालनं वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुंधराम् ।
षष्टिं वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥
देवस्वं[हि] विषं घोरं कालकूटसमप्रभम् ।
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एण्टिक्वेरी १२।१२–१६)
[एपिग्राफिका इण्डिका, ४।३४०–३४५]

१ 'चतुरवधिक्रमः' यह पाठ मालूम पड़ता है ।

[इस शिलालेखमें बताया है कि राजा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने विजयी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७३५ में जालमङ्गल नामका गाँव जैन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया। यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी। कारण यह था कि कुनुम्बिल जिलेके शासक विमलादित्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?)की पीड़ासे उन्मुक्त किया था।

इस लेखमें पं० १–६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओंकी प्रशंसामात्र है। इसमें उनकी वंशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	=गोविन्द प्रथम
(२) कक्क	=कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	=इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	=दन्तिदुर्ग या दन्तिवर्म्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष [वैरमेघका चाचा (पितृव्य)]	=कृष्ण प्रथम
(६) प्रभूतवर्ष	=गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा]-राजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	=गोविन्द तृतीय

३४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कण्णेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था। पंक्ति २९–३० से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था। पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखण्डीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे।

पंक्ति ६५–७५ में विमलादित्यकी वंशावलीका उल्लेख हुआ है। उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके बाबा नरेन्द्र बलवर्मा थे। चालुक्योंसे इस कुलका संबंध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओंमें इन नामोंके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हें एक स्वतन्त्र शाखाका माना है। विमलादित्य कुनुन्गिल देश (ज़िले) का राजा था। विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है। चाकिराजको गङ्गों (अशेष-गङ्गमण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है। इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था।

पंक्ति ७५–८० में दानपात्रका विशेष वर्णन है। उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये कूविल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे। यह मुनि श्री यापनीय नन्दिसंघके पुंनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे। इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दितचरणः' है।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है। लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोंके नाम भी दिये गये हैं जिनके सामने यह दान किया गया था। अन्तके चार वे ही साधारण शापात्मक श्लोक हैं।]

१२५

नौसारी—संस्कृत।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[H. H. Dhruva, Zeitschr. d. deut. morg. Gesell., XL, p. 321, n° VII, a.]

१२६

कांगड़ा—संस्कृत।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ? (बूल्हर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका।

[EI, I, n° XVIII (p. 120), t. & tr.]

१२७

कोन्नूर (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

[शक सं० ७८२=८६० ई०]

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपस्सुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः ।
दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रियं ममाद्यः परमां **जिनेन्द्रः** ॥ १ ॥
अनन्तभोगस्थितिरत्र पातु वः प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः ।
सु-राष्ट्रकूटोर्जितवंशपूर्व्वजस्स **वीर-नारायण** एव यो विभुः ॥ २ ॥
तदीयभूपायत**यादवा**न्वये क्रमेण वार्द्धाविव रत्नसञ्चयः ।
बभूव **गोविन्द**महीपतिर्भुवः प्रसाधनो **पृच्छकराज**-नन्दनः ॥ ३ ॥
इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभाविना ।
महोजसा वैरितमो निराकृतं प्रतापशीलेन स **कर्क्कर**-प्रभुः ॥ ४ ॥
ततोऽभवद्दन्तिघटाभिमर्द्दनो हिमाचलाद्दुर्जित-सेतु-सीमतः ।
खलीकृतोद्वृत्तमहीपमण्डलः कुलाग्रणीः यो भुवि **दन्तिदुर्ग्ग**-राट् ॥ ५ ॥
स्वयम्वरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्षं **शुभतुङ्गवल्लभः** ।
चकर्ष **चालुक्य**कुलश्रियं बलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-भारिणीं ॥ ६ ॥
जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सितातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज)हा ।
अकालवर्षोर्जितभूपनामको बभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः ॥ ७ ॥
ततः **प्रभूतवर्षो**ऽभूद्**धारावर्ष**सुतश्शौरैः ।
धारावर्षायितं येन संग्रामभुवि भूभुजा ॥ ८ ॥ तस्य सुतः—

यज्जन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्टं वृषभो भुवः ।
भोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्य्यन्ताम्बुधिमेखलाम् ॥ ९ ॥
ततः **प्रभूतवर्ष**स्सन् स्वयम्पूर्णमनोरथः ।
जगत्तुङ्गस्सुमेरुर्वा भूभृतामुपरि स्थितः ॥ १० ॥

इस लेखके दो भाग हो जाते हैं। श्लोक १ से लेकर ४३ तक दानकी प्रशस्ति है। यह दान ८६० ई० में राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष प्रथमने दिया था। श्लोक ४४ से लेकर लेखके अन्तिम गद्य तकका भाग जैनधर्म और दो मुनियों–मेघचन्द्र त्रैविद्य और उनके शिष्य वीरनन्दीकी प्रशंसा करनेके बाद, हमें यह सूचित करता है कि वीरनन्दिके पास एक ताम्रशासन (तांबे के ऊपरका लेख) था, जिसको बादमें कोळनूर (कोन्नूर जहांका यह शिलालेख है) के महाप्रभु हुलियमरस तथा औरोंकी प्रार्थनापर प्रस्तुत शिलालेखके रूपमें उत्कीर्ण किया गया। इस कथनके अनुसार शिलालेखका आदिसे लेकर ४३ श्लोक तकका भाग, जिसमें दान-प्रशस्ति है, ताम्र-शासनके लेखपरसे लिया गया है। वीरनन्दी और उनके गुरु मेघचन्द्र त्रैविद्यके कालसे इस पाषाण-लेखके कालका निर्णय एफ् कीलहॉर्नने स्थूल रूपसे ईसवीकी १२ वीं सदीका मध्य निश्चित किया है। यह काल शिलालेख-निर्दिष्टकाल ८६० ई० (शक सं० ७८२) से भिन्न पड़ता है।

शिलालेखके मुख्य भागमें (श्लोक १–४३ तक) यह उल्लेख है कि आश्विन महीनेकी पूर्णिमाको सर्वग्राही चन्द्रग्रहणके अवसरपर, जब कि शक सं० ७८२ बीत चुका था, और जगत्तुंगके उत्तराधिकारी राजा अमोघवर्ष (प्रथम) राज्य कर रहे थे, उन्होंने अपने अधीनस्थ राज्यकर्मचारी बङ्केयकी महत्त्वपूर्ण सेवाके उपलक्ष्यमें कोळनूरमें बङ्केयद्वारा स्थापित जिनमन्दिरके लिये देवेन्द्रमुनिको तलेयूर गाँव पूरा तथा और दूसरे गाँवोंकी कुछ जमीन दानमें दी। ये देवेन्द्र पुस्तक गच्छ, देशीय गण, मूलसंघके त्रैकालयोगीशके शिष्य थे। शिलालेखके प्रारम्भिक भाग (श्लोक ३ से ११) में अमोघवर्षकी वंशावली दी हुई है। १७–३४ तकके श्लोकोंमें बंकेय की सेवाओंकी प्रशंसा वर्णित है। इस भागके अन्तिम अंशमें (४२ वें श्लोकके बादके गद्य अंश और ४३ वें श्लोकमें) लेखकका नाम वत्सराज तथा बङ्केयराजके मुख्य सलाहकारका नाम महत्तर गणपति दिया हुआ है।

इस शिलालेखपरसे अमोघवर्षकी जो वंशावली निकलती है तथा दूसरे ताम्र-पत्रोंपर जो उत्कीर्ण है उसमें कुछ अन्तर पड़ता है। पाठकोंके जाननेके लिये हम यहाँ दोनों वंशावलियाँ दे देते हैं।

इस शिलालेखपरसे	दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे
१ यादव वंशमें,	
पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द	गोविन्दराज प्रथम
२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर	उसका पुत्र कक्कराज या कर्कराज
	उसका पुत्र इन्द्रराज
३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग	उसका पुत्र दन्तिदुर्ग
४ शुभतुंगवल्लभ—अकालवर्ष	शुभतुंग-अकालवर्ष (कृष्णराज प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)
५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोविन्दराज द्वि०)
६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुंग (गोविन्द)
७ अमोघवर्ष	उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक सं० ७८४=८६२ ई०]

१ [ओं ?] [।।] परमभट्टार [क]-मह [ा] राजाधिराज-परमेश्वरश्री-**भो-**

२ **जदेव**-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये

३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महासामन्त-श्री-[वि] ष्ण [ु]-

४ [र] म-परिभुज्यमा [के][1] लुअच्छगिरे श्री-शान्त्यायत [न]-

५ [सं] निधे श्री-**कमलदेवा**चार्य-शिष्येण **श्री-देवेन** कारा-

६ [पि] तं इदं स्तम्भं[2] ।। **संवत् ९१९ अस्व (श्व) युज-शुक्ल-**

७ **पक्ष-चतुर्दश्यां वृ (बृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-**

१ 'माने' या 'मानके' । २ 'कारितोऽयं स्तम्भः' यह शुद्ध रूप पढ़ना चाहिये ।

८ दा-नक्षत्रे[1] इदं स्तम्भं समाप्तमिति ॥०॥ वाजुआ—
९ गगाकेन गोष्ठिक-भूतेन[2] इद स्तम्भं घटितमिति ॥०॥
१० [श]ककाल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि
७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढ़का ही एक नाम मालूम पड़ता है—[एफ० कीलहॉर्न]) महासामन्त विष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमें बनकर तैयार हुआ था। बनानेवालेका नाम गोष्ठिक[3] वाजुआगगाक था। इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरों और अङ्क दोनोंमें, ७८४ का निर्देश करती है।]

[El, IV, n° 44, A]

१२९

बड़नगर—संस्कृत।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

१ नर प्रसिद्धम् श्री * * * क राज्ये यदु-कुल म्ल कु * ।
२ क्ल्यत्रयिवियनो ततक्षेत्र मिर्व्विभावितं अक्षोदेः श्री *
३ दिग्भागो धनपतेः ककुभि निर्ध मार्ग्गः अस्य मुदद्रुन् *
४ मिमस्य शशाङ्क तपनस्थितेः उमनेयं नवहट्टक।

---

१ '०त्रेऽयं स्तम्भः समाप्त इति' ऐसा पढ़ो। २ '-भूतेनायं स्तम्भो घटित इति' पढ़ो। ३ प्रो० बूल्हरकी रायमें 'गोष्ठिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं।

५ स्यम् सं ९३३ वैशाखो सुदि १४ ।†

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे बारो या बड़नगरके ध्वंसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित हैं। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गड़रियेका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशामें छोटे-छोटे जैन मन्दिरोंका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A. Cunningham, Reports, X, p. 74]

१३०

सौंदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ७९७=८७५ ई०]

लेख

द्वादशग्रामाधिष्ठानस्य **सुगन्धवर्ति**सम(सम्य)न्धिनि ॥ ग्रामे **मूलुगुन्दा**ख्ये । **सीवटे** पड़ निवर्त्तनं । तेनस्य (स्वं) नि(गु)रते दत्तं । नमस्यं (स्यं) **कंन**भूभुजा ॥ तस्य दक्षिणे भागे । तिन्तिणीवृक्षयोर्द्वयोः । मध्ये या स्थिता भूमिद्ध (र्द) त्ता श्री**कन्न**भूभुजा । **सुगन्धवर्त्तिय** सीमेयिन्द पदु (डु) वल् पिरियकोलल् मत्तर् ६ ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलांछनं [।] जीयात्रै(त्रै)लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ श्रीमन्**मैळाप**तीर्थस्य गणे **कारेय**नामनि [।] बभूवोग्रतपोयुक्तः मूलभट्टारको गणी ॥ तच्छिष्यो गुणवान्सूरिः

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमें) अधूरा ही है, इसलिये कनिघम साहब इधर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्त्तिके बजाय इसके पूर्णरूपसे समझनेमें असफल रहे हैं। अतएव इसका विशेष सारांश भी नहीं दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वरः [।] तस्याथामीं (सीर्दि)**द्रकीर्त्ति**स्वामी काममदापहः ॥ तच्छात्रः **पृथ्वीरामः** लक्ष्मीरामविराजितः [।] सत्यरत्नप्ररोहाद्रिः (मे)चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्री**कृष्णराज**देवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [।] नम्रभूपालवृन्दस्य पादाम्बुर्ह(रुह)सेवकः ॥ यस्य बालप्रतापाग्निज्वालानिकरशोषितस्समुद्री (द्र) त्पासुहृद्दर्प्परसो निश्शेषको यथा । यस्य राजन्वती भूमिर्ज्जितानन्दकरैः करैः [।] राज्ञो यो धीमतो नीतिमार्गो दुर्ग्गभयंकरः ॥ यस्य संक्रीडते कीर्त्तिहंसी लोकसरोवरे [।] यद्राख्यं प्रश्र(स्र)तं जातं प्रणतारातिभूपतेः ॥ **समस(श)त्या नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (षु) समसु** [।] स(श) ककालेश्व (ष्व) तीतेषु **मन्मथा**ह्वयवत्सरे ॥ ग्रामे **सुगन्धवर्त्ता**ख्ये तेन भूपेन कारितं [।] जिनेन्द्रभवनं दत्तं तस्याष्टदशनिवर्त्तनं ॥ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधिराज (जं) परमेश्वरं (र) परमभट्टारकं **राष्ट्रकूट**कुलतिलकं श्रीमत**कृष्णराजदेव**विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं बरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं वीरलक्ष्मीकान्तं विरोधिसामन्तनगवज्रदण्डं विद्वज्जनकमलमार्त्तण्डं सुभटचूडामणि भृत्यचिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन **पृथ्वीरामेण** (न) स्वकारितजिनेन्द्रभवनाय चतुर्षु स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्तनं सर्व्वनमश्यं (स्यं) दत्तं ॥ पृथ्वीरामेण (न) यद्दत्तं निवर्त्तनं कार्त्तवीर्येण भूयः स्वगुरवे दत्तं सर्वबादा (धा) विवर्ज्जितं ॥ सूर्योपरागसंक्रान्तो (न्तौ) **कार्तवीर्य**प्रकान्तया । श्रीभागला(लां)बिकादेव्या नमश्यं (स्यं) कृतमंजसा ॥

[सौंदत्तिमें जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्ती है, एक छोटे जिनमन्दिरकी बाईं ओर दीवालमें जड़े हुए पाषाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया है। लेखमें अनेक विशेष दान हैं। यह बहुत-कुछ राजाओंकी वंशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते हैं कि रट्टोंमें प्रथम जिसने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उसको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक धार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधियां हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में[1], जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्त्तिमें उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निवर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयमें खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पंक्तियोंमें राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढ़ी आगे हुआ है, एक दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्तिके मुलगुन्दके 'सीवट' में किया गया था।

लेखका वंशावलीका भाग लेख नं० २३७ की 'रट्टवंशोद्भवः ख्यातो' पंक्तिसे शुरू होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्त्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या सोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू. इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०४०–१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९–७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्त्तवीर्यने ही कुहुण्डी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोंका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमायें निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढ़ी बीतनेपर चौथी पीढ़ीमें कार्त्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पेर्माडिदेव या विक्रमादित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p. 194–198, ins. n° 2, 1st part]

१३१

बिलियूर—कन्नड़।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशासनाय (।) शक-नृपातीता (त) काल-संवत्सरंगळे-

[1] मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।

न्तुनूरोम्बत्तनेय वर्षं प्रवर्त्तिसुत्तिरे स्वस्ति **सत्यवाक्यकोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज** कुवलाल-पुरवरेश्वर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-**पेर्म्मनडिय** राज्याभिषेकं गेय्द पडि नेण्टनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-मासद श्री-पञ्चमे यन्दु **शिवणन्दि**-सिद्धान्तद-भटारर शिष्यर् **स्सर्व्वे (र्व्व) णन्दि**-देवर्ग्गे **पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालयक्के** पेङ्गोरें-गरेय **बिळियूर्**-प्पन्निर्प्पळ्ळियुमं सर्व्व-पाद-परिहार पेर्म्मनडि कोट्टो नोम् भट्टरु-सासिर्व्वरुं अय्-सामन्तरुं बेङ्गोरेंगरेय एळपदिम्बरुं एन्तोक्कलुं इदक्के साक्षी मले-सासिर्व्वरुं अय्मुर्व्वरुमं (अय्नूर्व्वरुं) अय्-दामरिगरुं इदक्के कापु इदनळिदों बारणासियुमं सासिर्व्वर्प्पार्व्वरुमं सासिरं कविले युम-नळिदोम् पञ्चमहापातकनक्कु **सेदोज**न लिखित (तं) **बेळियूर** ऎम्बत्तु-गद्याण पोन्नु एण्टु-नूरु-बट्टमु तेरुवोम् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्म्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वां वर्ष चालू था, उन्होंने शिवनन्दि-सिद्धान्त- भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेङ्गोरेंगरेके अन्तर्गत बिलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान वगैरः से मुक्त करके, दिये। यह दान पेन्न-कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था। ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज' पेर्म्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है। ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं, अलग-अलग नहीं। ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे।

आगे लेखमें साक्षियों तथा संरक्षकोंका परिचय है। इस दानको भङ्ग करनेवालेको अमुक-अमुक पापका भागी बताया है। यह लेख सेदोजका लिखा हुआ है।

बिलियूर की आमदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (नाप) तन्दुल (चावल) की है।]

[EC, I, coorg. ins., n° 2]

तीत-संवत्सर-सतङ्गल् एण्टुनूर-मूवत्त-नाल्कनेय प्रजापति-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्तं काल्का-देवय्यरन्व-यदोळ् **कलिविट्टरसर् बनवासिपन्निच्छांसिर**मनालुत्तिरे **नागरखण्ड-मेल्पत्तकं सत्तरर् नागार्ज्जुन** नाळ्-गावुण्ड गय्युत्तु श्री-**कलिविट्ट-रसर्** बेसदोळतीननादोडातन गावुण्डगरसर् नाळ्-गावुण्ड-पत्तमनित्तोडे **जक्कियब्बे** नाळ्-गावुण्डु गेय्युत्तिरे **नण्डुवर कलिगं** पेर्ग्गडेतनं गेय्ये **सन्दिगर** कुडिवुल्दं **कोडङ्ग**यूर्ग्गे पेर्ग्गडेतनं गेय्युत्तिरे एळपदिम्बरुं मूणूर्व्वरुं जक्कियब्बेयोळ् **नुडिदवुतवूरं** बिडिसिदोर् **जक्कियब्बे नागर-खण्डमेळपतर्क** अवुतवूरोळाद नाळ्-गावुण्डवागमं बिसुतोळ् देवारके **जक्किलियो**ळ् नाल्कु मत्तल् केय्यं कोट्टल् ॥

वृत्तं ॥ उत्तम-प्रभु-शक्ति-युक्ते जिनेन्द्र-शासन-भक्ते कान्- ।
त्यात्त-विभ्रमे **जक्कियब्बे** समन्तु **नागरखण्डमे**ळ् ।
पत्तुमं वधुवागियुं निज-वीर-विक्रम-गर्व्वदिम् ।
पेत्तवं प्रतिपालिसुत्तोसदिव्दळिळदवसानदोळ् ॥
तनु रुजेयं पुदुङ्कुलिसे संसृति-भोगमसारमेन्दु निच् ।
चिनिसि निज-प्रियात्मजेगे सन्ततियं करेदित्तु मोह-बन् ।
धनद तोडर्प्पिनोळ् तोडल्दु मोहिसि नि···र बल्ले बन्दु **बन्-** ।
दनिकेय तीर्त्थदोळ् तोरदुदत्वरियं····**जक्कियब्बेया** ॥
वसु-जलरासि-चारिदपथं शक-भू····ताब्द-संक्ये वर् ।
त्तिसे बहुधान्यमेम्ब वरिषं त्रिक-मासद काळ-पक्षदोळ् ।
दसमियोळार्क्य-वारदुदितोदित-वेळेयोळण्मि भक्तियिम् ।
बसदिगे वन्दु नोन्त मपूर्व्वतरं गड **जक्कियब्बेया** ॥

बरेदोम् **नागवर्म्म** देवारके कोट्ट केय् ग अवुतवूर्गं काळान्तरदोळ् मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनक्कु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(बाजूमें) ई-कल्ल **सन्दिगर** कुळि····**मुद्दन्** निरिसिदोम्····**बेलेयम्म**न मगम्

[जब प्रजापति संवत्सर शक वर्ष ८३४ में, महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-रसर्-अन्वयके महासामन्त कलिविट्टरस बनवासि १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-गावुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जक्कियब्बेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया। जक्कियब्बेने भी जकलिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल चावलकी भूमि दी। एक बीमारीके समय उसने शक सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमें, पूर्ण श्रद्धासे बसदिमें आकर समाधिमरण ले लिया।]

१४१

गिरनार—संस्कृत-भग्न।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है। पाषाण टूटा हुआ है।]

॥ स्वस्ति श्रीभृति

॥ नमः श्री**नेमिनाथाय** ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्री**महीपाल**

॥ **वयरसिंह**भार्या **फाउ**सुतसा

॥ सुतसा० **साईआ** सा० **मेलामेला**

॥ जसुतारूडीगांगीप्रभृती

॥ नाथप्रासादा कारिता प्रातिष्ट

॥ ····द्रसूरि तत्पट्टे श्रीमुनिसिंह

॥ ············कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री धृति············श्री नेमिनाथको नमस्कार... ...वर्ष......फाल्गुन सुदी ५, बृहस्पतिवार, श्री············श्रीमहीपाल, महाराज और············के तिलक......फाऊ नामकी वयरसिंहकी भार्या; उसका पुत्र माननीय············उसके पुत्र माननीय साईआ और मेलामेला············उसकी पुत्रियाँ रूडी, गांगी इत्यादि। इन सबने एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा........द्रसूरिके पट्टपर विराजमान श्रीमुनिसिंहने की··············कल्याणत्रय···।

[ASI, XVI, p. 353-354, n° 11

१४२

सूदी (जिला-धारवाड़)·संस्कृत और कन्नड़।

शक सं. ८६०=९३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्व्विभाति सुवि (धी)र्य्यस्य निरवद्य [।] निरत् (य्) अया तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्म्मोपदेशिने ॥ जित [-] भगवता [गत]-घनग-[ग]नाभे—

३ न पद्मनाभेन [॥] श्रीमज्जाह्नवीय-कुला[म]ल-व्योमावभासन-भास्करः ॥

४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-बळ-पराक्रमो दारुणा–

५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-व्र (व्र)ण-विभूषण-भूषितः क[ा]ण्वा-

६ यन-सगोत्र [:] श्रीमत्-**कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म**महाराजाधिराजः [।।]

७ तत्पुत्रः । पितुरन्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः

८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-वि-का–

९ ञ्चन-निकषोपळ-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-

१० सूत्र-वृत्ते(:)-प्रणेता श्रीमन्**माधव**महाधिराजः ।(।।) ओं तत्पुत्र[:] पितृ-पैता-

११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[ि] दन्[त]अ-युद्ध[ा]वाप्त-चतु-

द्वितीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

१२ रुदधि-सळीळाश्वादित्यशाह श्रीम[ा]न् **हरिवर्म्म**-महाधिराजः [।।]

१३ तत्पुत्रः श्रीमान् **विष्णुगोप** मह[ा)धिराजः [।।] ॐ तत्पुत्रः

१४ स्व-भुज-बळ-पराक्रम-क्रय-क्र[ी]तराज्यः कलियुग-बळ-पङ्कात्र-

१५ सन्न-धर्म्म-वृषोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् **माधव**-महाधिराजः । (।।) ओं

१६ तत्पुत्र[:] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः । **कृप(ष्ण)वर्म्म**-स(म)-

१७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-

१८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौर्य्यो विद्वत्पु[1] प्रथम-गण्य[:]श्रीमान्

---

१ 'विद्वत्सु' पढ़ो ।

१९ **कोङ्गुणिवर्म्म**-व (ध)र्म्ममहाराजाधिराज-पु(प)रमेश्वरः श्रीमद्-**अविनीत**-प्रथम—

२० नामज (धे) यः [॥] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रयः **अन्द**-**रि-आलत्तूर**-पुरुळरे-पेर्ण्ण—

२१ गराद्यनेक-समर-मुख-मख-ह(यु)त-प्रहत-शूरपुरुष-पशूप-हार-विध—

२२ स-विहस्ति(स्ती)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयस्य पञ्चदश-सर्ग-टीकाकार[:]

दूसरा ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

२३ श्रीमद्-**[द]ुर्व्विनीत**-प्रथम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रो दुर्ज्जन्त-श(वि)मर्द्द-मृदिते(त)-विश्व[ ]भरा—

२४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(ा)-मकरन्द-पु[ ]ज-पि[ ]जरीक्ष (क्षि)-यमाण- चरणयुगल-नलिनः श्री **[मुष्क]र**—

२५ प्रथम-नामधेयः। [॥] ओं तत्पुत्रश्चतुर्द्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-मतिर्व्विशेषतो [नि] र—

२६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक् [तृ]-प्रया (यो) क्तृ-कुशलो रिपु-तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-भा—

२७ स्करः श्री-**विक्रम**-[प्र]थम-नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-समर-संप्राप्त-विजय—

२८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थलः समधिगत-सकल-शास्त्रार्थ[:]श्री-**भूवि**-**क्रम**-प्रथम—

२९ प्रथम[1] -नामधेयः [॥] ओं तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-(जि) त-नल-भूपा—

---

१ इस शब्दकी अनावश्यकरूपसे पुनरावृत्ति हुई है।

३० काराश्शिवमा[र-प्रथम-ना]मध[ ]यः [॥] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-
प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो

३१ हलुळ-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-
परमेश्वरः

३२ श्रीसु(पु)रुष-प्रथम-नामधेयः।(॥) तत्पुत्रो विमल-ग[ ]गान्वय-
नभ[:]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीकों-

३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ि]व-
मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।

३४ शैगोत्तापरनामा [॥] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः। (॥)
र (त)त्पुत्रस्समधिगत-राज्य-

३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्मम-
हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू.

३६ ज-परमेश्वर[:]श्री-राजमल्ग(ल्ल)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-
(? दि)-समर-संहा-

३७ लिप(रि)तोदार-वैरि-वि(वी)रपुरुषो नीतिमार्ग्ग-कोङ्गुणि-वर्म्म-
धर्मराजाधिराज-परमेश्वर[:]

३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः[॥]ओं तत्पुत्रः सामिय-
समर-सञ्जनित-विज-

३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्भमहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:] श्री-राजमल्ल-

४० प्रथम-नामधेयः । (।।)ओं तसु(स्य)कनीयान् निह्लोरि(ठि)तै-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द्]मोघवर्षदेव

४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया[२] श्रीमदब्बलब्बायाव्ह(याः) प्राणेश्वर[:]
श्रीबूटुग-प्रथम-ना-

४२ मधेयः गुणदुत्तरङ्गः। (।।) ओं तत्पुत्रः । एळे(रे)यप्प-पट्टबन्ध-
परिष्कृत-लला[मो]ज(? वं)-

४३ टेप्पेरुपेञ्जेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रबन्ध-प्रकवि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[:]
श्री-[नी]त[ि म्]ार्ग-

४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजावि(धि)राज-परमेश्वर[:] श्रीमदेळे
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेयः

४५ कोमर-वेडेङ्गः ।(।।)ओं तत्पुत्र[:]श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[:]

४६ श्रीमन्नरसि[ं]घदेव-प्रथम-नामध[े]यः बी(वी)रवेडङ्गः ।। ओं
तत्पुत्रः कोट्टमरद·····················

४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिमार्ग-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[:] श्री-र[ाजम]ल्ल-

४८ प्रथम-नामधेयः । कच्चेय-गङ्गः । (।।) ॐ त्रि(वृ) [।।]
तस्यानुजो निजभुजार्जित-सम्पदार्थो

तृतीय ताम्रपत्र; दूसरी बाजू

४९ भूवल्लभ [-] समुपगम्य ल(ड)हाड़देशे श्री-बद्देगं तदनु त-

५० स्य सुतां सहैव वाक्कन्यया व्यवहदुत्तवि (म)-धीस्त्रिपु-

---

१ 'निल्लुण्ठिल' और भी शुद्धरूप होगा। २ 'सुतायाः' पढ़ो।

५१ र्य्यां [॥] अपि च ॥ लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्तुं गतवति दिवि यद् **बोद्देगाङ्कि** (के)
५२ महीशे ह [ ]त्वा ल [**ल् ?] एय**-हस्तात्करि-तुरग-सितच्छात्रंनि[1] (सिं)-
५३ हासनानि । प्रा[दा]त् **कृष्णाय** राज्ञे क्षित [ि]-पति-गणनाम्र-
५४ ग्रणीर्य्य(:)प्रतापात् राजा श्री-**बूटुगा**ख्यस्समजनि विजि-
५५ नाराति-चक्रः प्रचण्डः ॥ कन्नातः किन्ते[2] नागा**दळचपुर**-पतिः
५६ **कक्कराजो**ऽन्तकस्य **बिज्ञा**ख्यो **दन्तिवर्म्मा** युनि (धि) निज-**बनवासी** त्व-
५७ म **राजवर्म्मा** शान्तत्वं शान्तदेशो नुळुवु-गिरि-पतिर्दाम-रिर्दर्प-भङ्ग [ः]

चतुर्थ ताम्रपत्र; पहिली बाजू

५८ मध्येऽन्तं **नागवर्म्मा** भयमतिरभसाद् **गङ्ग-गाङ्गेय**-भू-
५९ पात् ॥ **राजादित्य**-नरेश्वरं गज-घटाटोपेन संदर्पित (म्)
६० जित्वा देशत एव गण्डुगमहा निद्रोव्य[3] **तञ्जापुरीं नाळ्कोटे**-
६१ प्रमुखाद्रि-दुर्गा-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् **कृष्णा**-
६२ **य** प्रथितन्धनं स्वयमदात् श्री-**ग[ं]ग-नारायणः** [॥]
६३ आर्य्या ॥ एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्भेदं ॥ (।)
६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरो**जयदुत्तरङ्ग**-नृपः ॥ गद्यम् ॥
६५ **सत्यनीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म**-धर्म्ममहाराधिराज-परमेश्वर [ः]

---

१ 'सितच्छत्र' पढ़ो। २ संभवतः यह पाठ 'किन्नातः किन्तु' रहा होगा। ३ 'निर्द्राव्य' पढ़ो।

१२ **विष्णुवर्द्धन**ष्षट्त्रिंशतम् । **नरेन्द्रमृगराजा**ख्यो मृगराजपरा-
क्रमः[।]**विजयादित्य**-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टभिः

१३ [॥२]तत्पुत्रः **कलिविष्णुवर्द्धनो**ध्यर्द्धवर्षं । त-

१४ त्पुत्रः **परचक्रराम**ापरनामधेयः[।]हत्वा भूरिनो**डंबराष्ट्र**नृपति-
मंगिम्महासंग-

१५ रे **गंगा**नाश्रित**गंगकूट**शिखरान्निर्जित्य स**ड्ड[ह]ला**धीशं **संकि-
लमुग्रवल्लभ**युतं यो भ [।]-

१६ ययित्वा चतुश्चत्वारिंशतमब्दकांश्च **विजयादित्यो** ररक्ष क्षितिं ।
[३] तदनुजस्य लब्ध-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर।

१७ यौवराज्यस्य **विक्रमादित्यस्य** सुत**श्चालुक्यभीम**स्त्रिंशतं[।]
तस्याग्रजो **विजयादित्यः**

१८ षण्मासान् [।] तदग्रसूनु**रम्मराज**स्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य
बालं **चालुक्यभीम**मपि-

१९ तृव्य**युद्धमल्लस्य** नन्दन**स्तालनृपो** मासमेकं । नाना-सामन्तव-
र्गैरधिकबलयुतैर्म्म-

२० त्तमातंगसेनैर्हत्वा तं **तालराजं** विषमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते-

२१ जाः [।] एकाब्दं सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्धरित्रीं श्रीमां-
श्चालुक्य-

२२ **भीम**क्षितिपतितनयो **विक्रमादित्य**भूपः । [४] पश्चादहमह-
मिकया **विक्रमादि**त्यास्त-

२३ म [य]ने राक्षसा इव प्रजाबाधनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिला-
षिणो **युद्धमल्लरा**-

२४ **जमार्त्तण्डकण्ठिकाविजयादित्यप्रभृतयो विग्रहीभूता आसन्** [।] विग्र—

तीसरा पत्र, पहली ओर ।

२५ हेणैव पंचवर्षाणि गतानि [।] ततः [।] योऽवधीद [।] **जमा-र्त्तण्डन्तेष**[।] येन रणे कृतौ [।] **क**—

२६ **ण्ठिकाविजयादित्ययुद्धमल्लौ** विदेशगौ [५] अन्ये मान्यमही-भृतोपि बहवो दु—

२७ ष्टप्रवृत्तोद्धता (:) देशोपद्रवकारिणः प्रकटिताः कालालयं प्रापिताः [।] दोर्द्दण्डेरि—

२८ तमण्डलाग्रलतया यस्योग्रसंग्रामकाग्राज्ञा[1] तत्परभूनृपैश्च

२९ शिरसो मालेव सन्धार्य्यते । [६] नादग्ध्वा विनिवर्त्तते रिपुकुलं कोपाग्निरामूल—

३० तः शुभ्रं य [स्य] यशो न लोकमखिलं सन्तिष्ठते न भ्रमत् [।] द्रव्यांभोधरराशिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृशं दारिद्र्योग्रतरातपेन जनतासस्ये न नो वर्षति । [७] स **चालुक्यभीम**नप्ता **वि**-

३२ **जयादित्य**नन्दन[ः।] द्वादशाब्दसमास्सम्यग् **राजभीमो** धरा-तलं । [८] तस्य महेश्वरमू—

तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

३३ र्त्तेरुमासमानाकृतेः कुमाराभः[।] **लोकमहादेव्याः** खलु यस्सम-भवद्**म्म[रा]**—

३४ **जाख्यः** ॥ [९] जलजातपत्रचामरकलशांकुशलक्षणां[क]**करेच्चर**-

---

1 शायद "सांग्रामिकस्याज्ञा" पढ़ो ।

णतलः [।] लसदाजा–

३५ न्वलंबितभुजयुगपरिघो गिरीन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] विदितधरा-
धिपविद्यो विविधायु–

३६ धकोविदो विलीनारिकुलः [।] करितुरगागमकुशलो हरचरणांभोज-
युग–

३७ लमधुपश्श्रीमान् ॥ [११] कविगायककल्पतरुर्द्विजमुनिदीनान्ध-
बन्धुजन-

३८ सुरभिः [।] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्म्महोग्रमहसा द्युमणिः
॥ [१२] गिरिरिसर्वसु–

३९ संख्याब्दे शकसमये मार्ग्गशीर्षमासेस्मिन् [।] कृष्णत्रयोदशा–
दिने भृगुवारे मैत्रनक्षत्रे [॥ १३]

४० धनुषि रवौ घटलग्ने द्वादशवर्षे तु जन्मनः पट्टं [।] योवादुदय-
गिरीन्द्रो रविमिव लोका–

चतुर्थ पत्र; पहली ओर।

४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजा-
धिराजपरमेश्वर×परम[धा]–

४२ र्म्मिकोम्मराजकम्मनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटु-
म्बिनस्सर्व्वा[ं] नित्यमाज्ञापयति [।]

४३ आर्य्या[:]। किरणपुरमधाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यत्त्रिपुरमिव महे-
श× पा(ण्डु ?)रंग[:]प्रतापी [।] तदिह [मु]–

४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यशक्यं गणनममलकीर्तेस्तस्य सत्साहसानाम् ॥
[१५] तस्य[ा]त्म-

४५ जो **निरवद्यधवल[:]** कटकराजपट्टशोभितललाटः [।] तत्तनयो **विजयादित्य**कट-

४६ काधिपति[:] । वृत्तं । तत्पुत्रो **दुर्ग्गराज**×प्रवरगुणनिधिर्द्धार्मिक-स्सत्यवादी ख्यागी भो[गी]

४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [।] **चालुक्यानां** च लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षण[यै]-

४८ व वंश[:] ख्यातो यस्यापि **वेंगी**गदितवरमहामण्डलालंबनाय । [१६] तेन कृतो **धर्म्मपु[रीद]**-

४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [।] **कटकाभरण**शुभांकितनाम[1] चैं पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थ पत्र; द्वितीय ओर ।

५० [श्री] **यापनीयसंघ**प्रपूज्य**कोटिमडुवगणे**शमुख्यो यः [।] पुण्या-**र्हनन्दिगच्छो जिननन्दि**मुनीश्वरो [थ] ग-

५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्य×प्रथितो धरायाम् (।) **दिव[ा]कर**ाख्यो मुनिपुंगवोभूत् [।] यत्केवलज्ञाननिधि-

५२ र्म्महात्मा स्वयं जिनानां सदृशो गुणौघैः ॥ [१९] **श्रीमान्दि-रदेव**मुनिस्सुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[ा]न् [।] य-

५३ म्प्रातिहार्य्यमहिम्ना संप्पन्नमिवाभिमन्यते लोकः [॥ २०] तद-**धिष्ठितकटक[ा]भरणजिनालय[ा]**-

५४ य **कटकराज**विज्ञप्ते खण्डस्फुटनवकृत्यावलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थमु-

---

1 इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामाङ्कित' अपेक्षित है, जिसके रख-नेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ नरायणनिमित्ते **मलियपूण्डि**नामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(म्)
मुदक-
५६ पूर्व्वं कृत्वा दत्ता । अस्य ग्रामस्यावधयः पूर्व्वतः **मुंजुन्यरु**[1] ॥
दक्षिणतः **यिनिंमिलि** ॥ पश्चि[म]-
५७ तः **कल्वकुरु** ॥ उत्तरत[:] **धर्म्मवुरमु** ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रा-
वधयः पूर्व्वतः गोछनि-
५८ गुण्ठ ॥ आग्नेयत[:] रावियपेरिय ꣳ वु । दक्षिणतः स्थापित-
शिला ॥ नैर्ऋत्यां स्थ[ा] पितशिलैव [।]

पञ्चम पत्र ।

५९ पश्चिमतः **मल्कप** ꣳ ꣳ को ꣳ बोयुनट[ा] कश्च ॥ वायव्यतः
स्थापितशिलैव । उत्तरतः दुब[न्ने] ꣳ वु [।]
६० ऐशान्याम् (।) **कल्वकुरि** ऐव्वोकचेनि सीमैव सीमा ॥

[चूंकि लेखमें एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अतः इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है । पंक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वंशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छठे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वंशावली है । वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (पं० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (पं. २२-३२) में चालुक्यभीम द्वितीयका अभिषेक अर्थात् राजतिलक है ।

शिलालेखमें वर्णित मङ्कि नोलम्बवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्किल दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पड़ता है । अन्तमें इस शासन (लेख) में विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (पं० १४) आता है । विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक युद्ध-मल्ल, राजमार्त्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लड़ाई होती रही । अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्तण्डका वधकर, कण्ठिका-

१ या सम्भवतः 'मुंजुन्युरु' ।

विजयादित्य और युद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं शान्तिके स्थापनमें सफल हुआ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (पं० ५४) किया गया था। दानपात्र एक जिनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १७) के दक्षिणमें तथा यापनीयसंघके एक मुनिके अधिकारमें था । इसकी स्थापना 'कटकराज' (पं० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-जिनालय (श्लो० १७ तथा पं० ५३) कहलाया। उसकी प्रार्थना पर (पं० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है। कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और तदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये। उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पट्ट दिया गया था (पं० ४४)। उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (पं० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था।

दान की गई चीज मलियपूण्डि (पं० ५५) नामका एक छोटा गाँव था; यह कम्मनाण्डु (पं० ४२) जिलेमें था । इसकी सीमाएँ पंक्ति ५६ में दी गई हैं। उत्तरकी सीमा धर्म्मवुरमु (धर्म्मपुरी) के दक्षिणमें यह जिनालय था।]

[EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरू (जिला अत्तीली)— संस्कृत तथा तेलुगू।

[विना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओं स्वस्ति श्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमान**मानव्य-सगोत्राणां हारिति**-पुत्राणां कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्**मातृगण**परिपालितानां **स्वामिमहासेन**पदानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-लाञ्छनेक्षणक्षणवशीकृतारातिमण्डलानामश्वमेधावभृतस्नानपवित्रीकृतवपुषं **चालुक्यानां** कुलमलंकरिष्णोस् **सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य** भ्राता [।]

श्रीपतिर्व्विक्रमेणाद्यो दुर्जयाद्बलितो हृतां
अष्टादशसमाः कुब्ज-विष्णुर्जिष्णुर्महीमपालयत् ।(।।)
तदात्मजो जयसिंहस्त्रयस्त्रिंशतं [।] तद—

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

गजेन्द्रराज-नन्दनो **विष्णुवर्धनो** नव । तत्सूनुर्म्मञ्ची-युवराजः पञ्चविंशतिं । तत्पुत्रो **जयसिंहस्त्र**योदश ।। तस्य द्वैमातुरानुजः **कोकिलिः** षण्मासान् [।] तस्य ज्येष्ठो भ्राता **विष्णुवर्द्धन**स्तमुच्चाट्य सप्तत्रिंशतम् । तत्सुतो **विजयादित्यभट्टारको**ऽष्टादश ।तत्सुतो **विष्णुवर्द्धनः** षट्त्रिंशतं । तत्सुतो **नरेन्द्रमृगराज**स्साष्टचत्वारिंशतं । तत्पुत्रः **कलि-विष्णुवर्द्धनो**ऽध्यर्द्ध-वर्षं [।।] तत्सुतो **गुणग-विजयादित्य**श्चतुश्चत्वारिंशतं । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो **गुणग-विजयादित्य**-पतिरं—
ककारस्साक्षाद्**वल्लभनृप**-समभ्यर्च्चितभुजः
प्रधानः शूराणामपि सुभट—

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ
चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिमभुनक् ।।
तद्भ्रातुर्युवराजस्य **विक्रमादित्य**भूपतेः ।
शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निभः ।।
जित्वा संयति **कृष्णवल्लभ**महादण्डं सदायादकन् (?)
दत्वा देव-मुनि-द्विजातितनयो धर्म्मार्थमर्थम्मुहुः ।
कृत्वा राज्यम[क]ण्टकन्निरुपमं संवृद्धवृद्धप्रजं
भीमो भूपतिरन्वभुंक्त भुवनं न्यायात् समास्त्रिंशतं ।।

तदनु **विजयादित्य**स्तस्य प्रियतनयो महा-
नधिकधनदस्सत्य-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
परहृदयनि[र्]भेदी नाम्नैव **कोल्लविगण्ड**-भू-
पतिरकृत षण्मासान् राज्यन्नयस्थितिसंयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्ति**रम्म**-
राजः पराजितपरात्रनिराजराजिः ।
राजाभवद्विदित**राजमहेन्द्र**नामा
वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मज**विजयादित्य**बालमुच्चाट्य श्री**युद्धमल्ला**त्मज-**स्तालप**राजो मासमेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य **चालुक्य-भीम**तनयो **विक्रमादित्यो** विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-पालयत् ॥ ततो **युद्धमल्लस्तालप**-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि **गृही-**त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदित**कोल्लविगण्ड**-सूनो
द्वैमातुरो विनुत-**राजमहेन्द्र**-नाम्नः
भीमाधिपो विजितभीमबलप्रतापः
प्राचीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमय्यन्-धळग-मुरुत्त(त)रन् **तातबिक्कि** प्रचण्डं
बिज्जं स[ज्जं च] युद्धे बलिनमतितरा**मय्यपं** भीममुग्रं
दण्डं **गोविन्द**-राज-प्रणिहितमधिकं **चोळपं लोवबिक्कि**
विक्रान्तं **युद्धमल्लं** घटितगजघटान् सन्निहत्यैक एव ॥
भीतानाश्वासयन् सच्छरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
सन्नान् कुर्वन् सुगृह्णन् करमपरभुवो रञ्जयन् स्वं जनौघं ।

५. पञ्चाङ्गुल-वाटिका ?
६. आम्र-वाटिका, या आमके पेड़ोंका बगीचा
७. धङ्क-वाड़ी, या धङ्क उद्यान-भवन।

ए० कनिंघमने सम्वत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पढ़ा है। शिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहोर्नने इस तरह शुद्ध किया है:—

निजकुलधवलोयं दिव्यमूर्त्तिः सुशीलः
क्षमदमगुणयुक्तः सर्वसत्त्वानुकम्पी।
सुजनजनिततोषो धङ्कराजेन मान्यः
प्रणमति जिननाथं भव्यपाहिल्लनामा ॥ १ ॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माधवसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकभा (खो ?) दिता[1]

[सुहानियामें माधवके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित की। संवत् १०१३।]

[JASB, XXXI, p. 399, a; p. 410, t.]

[इं० ए० जिल्द ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पंक्तियाँ]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है।

स्वस्ति जितं भगवता गतघनगगनाभेन **पद्मनाभेन** [।।] श्रीमज्जाह्नवीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः स्वखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्तम्भलब्धबलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलब्धव्रणविभूषणविभूषितः **कण्वायन**सगोत्रः श्रीमान् **कोङ्गणिवर्म्म**धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर-**श्रीमाधव**प्रथमनामधेयः ।। तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता **श्रीमन्माधव**महाराजाधिराजः ।। तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(ऽ)नेकचतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्वादितयशः श्रीमद्**हरिवर्म्म**महाराजाधिराजः ।।

अपिच ।। वृत्त ।।

आसीज्जगद्दहनरक्षणराजसिंहः
क्ष्मामण्डलाब्जवनमण्डनराजहंसः ।
श्रीमारसिंह इति बृंहितबाहुकीर्त्ति-
स्तस्यानुजः कृतयुगक्षितिपालकीर्तिः ।।

आदेशाद्देवचोलान्तकधरणिपतेर्ग्गंगचूडामणिस्त्वां
वेगादभ्येति योद्धुं त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्प्पम् ।
गङ्गामुत्तीर्य गन्तुं परबलमतुलं कल्पयेत्पाप दूतै-
र्व्विज्ञप्तं गूर्ज्जराणां पतिरकृति तथा यत्र जैत्रप्रयाणे ।।

पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणिः
संत्रासग्रहविह्वलीकृतरिपुक्ष्मापालरक्षामणिः
विद्वत्कण्ठविभूषणीकृतगुणप्रोद्भासिमुक्तामणि-
र्द्देवस्सज्जनवर्ण्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणिः ।।

मन्दाकिन्या जिनेन्द्रस्नपनविधिपयस्स्यन्दसम्पादितायाः
कालिन्द्या चण्डवैरिप्रहतगजमदश्वेतनिर्व्वर्त्तितायाः ।
सम्भेदे श्रीनिकेताङ्गणभुवि भवतो गङ्गकन्दर्पभूपे-
व्यातन्यो दिग्वधूनां विधुविजयी (यि) यशो हारमाचन्द्रतारम् ॥

अपि च ॥ वृत्त ॥

निर्व्वादोज्ज्वलबोधपोतबलतस्सिद्धान्तरत्नाकरम्
चारित्रोत्प्लुतयानपात्रबलतस्संसारमीनाकरम् ।
उत्तीर्ण्णस्समुदीर्ण्णभक्तिविनतैर्बन्धाभिधानो बुधै-
रासीद् देवगणाग्रणीर्गुणनिधिर्देवेन्द्रभट्टारकः ॥

उद्दामकामकलिनिर्द्दलनैकवीर-
स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।
शिष्यो बभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो
रत्नत्रयं शिरसि यच्चरणद्वयं च ॥

महितस्य तस्य महितैर्म्महतां, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।
जयदेवपण्डित इति प्रथितः, प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविणः ॥

अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-वाक्य-कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-नामधेयः गङ्गकन्दर्प्पः ॥ शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेष्वष्टसु-नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे गङ्गवसति-तीर्थव-सतिमण्डलमण्डनस्य गङ्गकन्दर्प्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्यां दिशि तल-वृत्तिं दत्ते स्म [॥] तस्या-स्सीमा समाख्यायते तद्यथा ।

---

१ शुद्धपाठ संभवतः 'भूपस्यातेने' होना चाहिये ।

कुमारीसरसः पूर्व्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तरादुपलयुगलाद्दक्षिणस्यां
दिशि **बेल्कनूर**ग्रामपश्चिमसीम्नः पावकदिशि **कोशितटाक**पुरोवर्त्तिन-
शिलासरसस्समीरणदिक्कोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्यां दिशि **वट-तटाक**-
पुरोनिकटनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपाषाणादुत्तरस्यां दिशि **नागपुर**ग्राम-
मार्गाद्दक्षिणस्यां दिशायां **मळिगमार्त्तण्ड**गृहक्षेत्रादैशान्यां दिशायामानी-
लशिलायाः पुनः पश्चिमस्यां दिशि **कृष्ण**सरस उत्तरजलप्रवाहनिर्गमा-
दुत्तरस्यां दिशि **नीलिकार**-तटाकागतप्रवाहादुत्तरस्यामाशायामेकनिव-
र्त्तनान्तरे वायव्यदिक्कोणवर्त्तिरक्तपाषाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्शम्याः । पूर्व्वदि-
ग्मुखेनागत्योत्कीर्ण्णादरुणपाषाणा**न्नागपुर**ग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्वदि-
ग्मुखेन गत्वोत्तरदिशं प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे
पूर्व्वोत्तरदिशि कृष्णपाषाणाद्दक्षिणस्यामाशायां शमी-**कन्थारी**गुल्मान्त-
र्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपाषाणयुगले सङ्गता सीमा
[॥] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तीनि षण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरी-
कृत्य सुष्ठि(स्थी)कृतानि षष्टि-शतं निवर्त्तनानि ॥ तस्मादेव नगरा-
द्वरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समाम्नायते तद्यथा । **देशग्रामकूट**-
क्षेत्राद्वायव्यां ककुभि त्रिशमीरक्तोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आख-
ण्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपाषाणादाग्नेयकोणवर्त्तिनो विशालशमी-
कन्थारीजालात्पश्चिमस्यां दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्गमाद् **वल्ल**-
भराजमार्गात् पूर्व्वस्यामाशायां कन्थारीगुल्मात् **सवसी**-ग्राममार्गाद्दक्षि-
णतश्शमीकन्थारीकुञ्जात् कुबेरककुभो वायव्यायामाशायां **ज्येष्ठलिङ्ग**-
भूमेर्निर्ऋत्या हरितकृष्णपाषाणात् पूर्व्वस्यां दिशि **वल्लभराज**मा-
र्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्गत**किक्कर**-
पाषाणाद् दक्षिणस्यां दिशायाम**न्धकार**क्षेत्रात् पश्चिमसीम्नि प्राक्प्र-

कटीकृतादेशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्यां दिशि त्रिशमीशोणपाषाणे सीमा समागता । एवं पश्चिमदिग्वर्त्तीनि चत्वारिंशच्छतं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख-वसतेर्व्वासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पु×प(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च निवर्त्तनद्वय-द्वयदो (?) पु×प(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमा-णमाख्यायते [।] पूर्व्वतः बाळबेश्वरपश्चिमप्राकारः पावकदिशि चर्म्म-कारदेवगृहसीमान्तम् [।] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमां कृत्वा दक्षिणस्यां दिशि पु×प(ष्प)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः श्रीमुकरवसतेः पश्चिमस्यां दिशि गोपुरपर्य्यन्तात् पश्चिमदिग्वर्त्तिदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य मरुदेवीदेवगृहस्य पश्चाद्भागादुत्तरस्यां दिशि चन्द्रिकाम्बिकादेवगृहात् पूर्व्वतः मुकरव-सतिं प्रविष्टीकृत्य रायराचमल्लवसतिं(ति)दक्षिणप्राकारः ततः पूर्व्वतः श्रीविजयवसतिदक्षिणप्राकारः ई (ऐ)शान्यां दिशि कम्मटेश्वरदेवगृहं तद्दक्षिणतः पूर्व्वोक्तबाळबेश्वरपश्चिमसीमा [।।] देवनगरा-त्पश्चिमदिशि पु×प(ष्प)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा पृथक्क्रि-यते [।] परवसरसः पूर्व्वदिशि तपसीग्रामपथादुत्तरतो पु×प(ष्प)वाटनिव-र्त्तनमेकं । गङ्ग-पेम्मोडिचैत्यालयपु×प(ष्प)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेकं नागवल्लीवनम् । एवं गङ्गकन्दर्प्पभूपाळजिनेन्द्रमन्दिरदेवभोगनिमित्तं निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्रं पु×प(ष्प)वाटत्रयमुर्व्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्र-भृतिबाधापरिहारं मनोहरमिदम् ॥ श्लोक ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
पापादपेतमनसो भुवि भाविभूपाः ।

ये पालयन्ति मम धर्म्ममिमं समस्तं
तेषां मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

[यह शिलालेख धारवाड़ जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रियासतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खबसति नामके मन्दिरमें पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमें ८२ पंक्तियाँ हैं। अक्षर दशवीं शताब्दिकी पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके हैं। इसमें तीन विभिन्न शिलालेख समाविष्ट हैं।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वी पंक्तितक गङ्ग या कोङ्गु वंशका शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और जब विभव संवत्सर प्रवर्त्तमान था, मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा, के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित (पण्डित) को किया गया था। विभव संवत्सर शक ८९० ही था और शक ८९१ शुक्ल संवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया हुआ है। यह दान पुलिगेरे (जिसका अर्थ होता है चीतेके तालाबका नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगेरे' नगरको मिस्टर फ्लीटने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके लिये, जिसे इसमें 'गङ्गकन्दर्प जिनेन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया था। इस मन्दिरको स्वयं मारसिंहदेवने बनवाया या उसका जीर्णोद्धार किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—

माधव-कोङ्गणिवर्मा
(या माधव प्रथम)
|
माधव द्वितीय
|
हरिवर्मा | मारसिंह

मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा,
या
गङ्ग-कन्दर्प

[इं० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१–१११, नं० ३८ (१–५१ की पंक्तियाँ)]

१५०

कडूर—कन्नड़

[शक ८९३=९७१ ई०]

[कडूरमें, किलेके दरवाजेके एक स्तम्भपर]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण-मुख्यर् देवे-न्द्रसिद्धान्त-भटार-रवर पिरियशिष्यर् चान्द्रायणद्भटाररवर-शिष्य-गुणचंद्र-भटाररवर-शिष्यर् श्रीमदभयणन्दि-पण्डित-देवर नाण-ब्बे-कन्तियर शिश्शिन्तियर्पडियर-दोरपय्यन पिरियरसि पाम्बब्बे तले-वरिदु मूवत्त-वरिसं तपं गेय्दध्दं नोन्तुच्छम-ठाणमेरिदर्बरेदोन-वर मगं विडि················

(उत्तरमुख) परसे महा-प्रसाददोळोरेवकनिम्मडि-चोरनोल्दु-तन्न्- ।

अरसुममौल्य-वस्तुगळुमं कुडे बूतुगनक्कनेन्दु विस्- ।
तरिसे धरित्रि जीय बेसनेनेने सन्दिवु सन्दवक्केविन्द् ।
अरसु दलेन्दु पाम्बबेगळन्तु तपो-नियमस्तरादोर् (आदोर्) आर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मोनानुष्ठान-परायणे(यणे)यरप्प श्री-पाम्बब्बे-कन्तियरय्दं नोन्तुच्छम-ठाण-मेरिदर् । बरेदोनवर मगनर्हद्-भक्तम् ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका श्लोक, जो 'परसे' इत्यादिसे शुरू होता है, यहाँ दुहराया गया है ।]

ये दोनों खम्भवत् (विशाल) मूर्तियाँ (विक्रम सं० १०३८ और ११३४ [शि० ले० नं. २११]) दिसम्बर १८८९ में, श्वेताम्बर संप्रदायके मालूम पड़नेवाले मध्यवर्ती मन्दिरके पास मिली थीं।

महमूद गजनवी (गजनीका रहनेवाला) के द्वारा मथुराका विनाश ई० सन् १०१८ में हुआ। उक्त प्रतिमा (सं० १०३८=९८१ ई० की) इस विनाशसे पहिलेकी स्थापित हुई हैं और शि. ले. नं. २११ की इस घटनाके करीब ६० साल बाद। आक्रामकने चाहे-जितना विनाश किया हो, लेकिन यह स्पष्ट है कि जैन लोगोंके पास उनके पवित्र स्थान विना किसी ज्यादा बाधाके बने रहे।]

[Antiquities of Mathura (ASI, XX), p. 53, t.]

१६२

श्रवणबे-लगोला—कन्नड़-भग्न।

[वर्ष चित्रभानु=९४२ ई० (लू. राइस)]

[जैन शि० ले० सं०, भाग १]

१६३

श्रवणबे-लगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[जैन शि० ले० सं०, भा० १]

१६४

हेमावती—कन्नड़

[शक ९०४=९८२ ई०]

[हेमावतीमें, पूर्वकी तरफके खेतमें पाषाणपर]

उद-वळमेळेवरेम्बुदे।
बिदं मुन्नल्लि कडुपिनोळ् बहु-विधदिन्द्।
उद-वळमेळेदु मुरिगुम्।
बिद्दमेनल् बलळ्द पोरगनेळेव-चेडङ्गम्॥

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकाण्मे कोळ्व तेरनल्लदें ।
नेरेये बरल् तक्कडियल्लि बिसुवल्लिये बिस अरिदयिल्ल ।
परियना दिट्टि मुरिवल्लि कडुपिनोळ् मुरिदयिल्लिल्लिय बिन्नणवन् ।
नेरेये कल्पदे बीरर बीरनं गिडेगळाभरणनं नेडिकल्ल ॥
आसुवनुं कूसुवनुम् ।
बीसुवनुं गडेय नेगळ्द तक्कडियोळेनुत्त् ।
आसदेयुं कुङ्कदेयुम् ।
बीसन्देयु बिद्द मेळेगु**मेळेव-बेडङ्गम्** ॥
एरगळरियदे मेण्टुकम्मगुळ्दुं बरलणमरियदे तप्पा पिन्दम् ।
तेरेननरियदे भागमनिक्कियुं मूरेडेगल्लदे कद्दाडियुं मुरिये पायिसिद ।
तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयिवनेनिसदं ।
नेरेये कडु-जाणनेनिसल्के बर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदन्नम् ॥
कालाळ कय्गळ तुरगद ।
कोलाळ तिणिवुगळोळल्लि बच्चिसुतेळेगुम् ।
गेल्गुमेने नेगळ्द मार्गदं ।
गेल्गुमे बणेदल्लि **कीर्त्ति-नारायण**नम् ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाळ-काळमं ।
नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-
दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्दिदम् ।
जन-सुत**निन्द्र-राज**नखिळामर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[**एरेव-बेडङ्गम्, कीर्ति-नारायणके युद्धमें शौर्यके कार्योंका वर्णन । (उक्त मितिको) अनाकुल चित्तसे व्रतोंको पालते हुए, प्रसिद्ध**

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई–(अर्थात् मर गये)[1]।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27.]

१६५

श्रवण-बेल्गोला—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६६

अङ्कडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्कडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने)·····**सुद पञ्चमी-बृहस्पति वारदन्दु**

स्वस्ति····यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरप्प द्रविळ-संघद····अद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद **त्रिकालमौनि**-भट्टारक शिष्यर् श्रीम**दिरिव-बेडेङ्ग**····ळन गुरुगळ् **बिमलचन्द्र-पण्डित-देवर्** सन्यासन-विधियिं मुडिपि मुक्तियनेय्दिदर् ॥ (पीछे) श्रुत-विमळादिचन्द्र·····श्रीमनु·····पण्डिताह्वयसु-**विमळचन्द्र**-मुनिः ॥

नमो **विमळचन्द्राय** कळाकळित-मूर्त्तये ।
सत्त्वात् सद्-बुधसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-**विमळचन्द्र**-पण्डित-देवर गुड्डी **हवुम्बेया** तङ्ग **शान्तियब्बे** तम्म गुरुगळ्गे परोक्ष-विनयं गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोंसहित), द्रविल-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य,—श्रीमद् ईरिव-बेडेङ्ग···के गुरु,–

---

१ उसका काल और अंतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणबेलगोला नं० ५७ के शिलालेखमें हैं। इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था।

विमलचन्द्र-पण्डितदेवने, संन्यास-विधिसे मरण कर, मुक्ति प्राप्त की। पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ शिष्या हवुम्बेकी छोटी बहिन शान्तियब्बेने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यमें स्मारक खड़ा किया।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—तामिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति [॥]

२ [को] विराजराज [क] ` [सर] 'वि [न्] मर्कु याण्डु ८ आ [व]दुपडुवूर्क[ो]ट्टतुप्पेरुन्-तिमिरिनाड्डुत्तिरुप्प[ा]नूमलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्प्]ाडि [इ] रैयिलि प[ऌ]ळिच्चन्दत्त की [ऌ]-प्-[प]ग[लां]ड[इ]लाडर[ा]जर्गेऌ कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्द[मं]मङ्क

४ ट्टप्पोगि[न्]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळ्वि-प्पवर्-[ग] ण्डर् मग[ना]र् [वी]रशोळर् तिरु[प्पान्]मलैदेवर्-त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देऌुन्]द[रु]ळि इ [र्]उक्क इ[व]र् देवियार् इलाडमह[ा]देवि[य]ार कर्पूर-विलैयुमन्नियाा[य]त्रावद[ण्ड]विरै [यु] म [ो]-

६ ळ्ळिन्द[रुळ वे]ण्डुमेन्रु विण्णप्पञ्जेय् [य उ]डै[या]र् [वी] र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्नियाा[य] वावदण्[ड]विरै-

७ युमो [ऌ] ि ञ्जोमेन्रुच्चेय्य अरि[य्]ऊर् किळ [वन्]ा गि[य वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र्] ` य[यु]डैयार् [क] न्मियेया]-

८ णत्तियागविदु[1] कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमोळि
ञ्जु शासनाञ्चेय्द-पडि [।] इदु [व]-

९ ल्ल [द्] उ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिच्चन्द-
त्तैक्कोळ्[व्]ान **गङ्गैयि-**

१० डै [कुमरिय्] इडैच्चेय्दार् शे[य्] द पा [व]क्कोळ्वारिदुवल्लदिप्प-
ळिच्चन्दत्तै केडुप्यार वल्लव[रै]

११ ····[न]रु[व] [।] [इ]-द्र [र्म्मत्] ते [र]क्षिप्पान् पादधूळिय्
एन्-[रलै] मे[ल]न [।] अर[म]रवर्क अरमल्ल तु[ण]ैयिल्लै ॥

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पंक्तियोंका है। लेखकी दूसरी पंक्तिमें राजराज-केशरीवर्मनके राज्यका ८ वां साल इसका काल बताया गया है। प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है। यह ९८४-८५ ई० में गद्दीपर बैठे थे। इस लेखमें किसी विजयका वर्णन नहीं है। इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना चाहिये, क्योंकि चोल राजाओंका वह चिह्न रहा है।

लेखमें (पंक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है। वह चोल राजा राजराजका कोई अधीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योंकि राज्यकाल उसीका (राजराजका) दिया हुआ है। लाटराज वीर-चोल पुगळिवप्पवर गण्डका पुत्र था। वीर-चोल और उनके पूर्वजोंके नामके पहले लाटराज ऐसा बिरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय लाट (गुजरात) से आये थे।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना पर वीर-चोलने तिरुप्पान्मलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगम्पाडि गाँवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी।

यद्यपि चैत्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पान्मलैका देवता' दिया गया है, परंतु 'पल्लिचन्दम्' इस शब्दसे मालूम पड़ता है कि यह कोई जैन

---

१ 'इन्द' पढ़ो।

चैत्यालय होना चाहिये। शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है। उसमें यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है। यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिचन्दं' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है:—एक तो कर्पूरविले (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अन्नियाय वावदण्डविरै' की। कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमें आ जाती है, लेकिन उत्तरकी आमदनी 'अन्नियाय-वावदण्डविरै' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है। इसके भी दो अर्थ किये जाते हैं: एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करघा) इरै (कर)। इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोंपरका कर' (The tax on unauthorised looms)। दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय +आव+दण्ड+इरै। 'आव'का अर्थ होता है बाणोंका तूणीर। इसका तात्पर्य यह है कि विना अधिकारपत्र पाये जो धनुषबाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था।

[EI, IV. n° 14, B.]

१६८

श्रवण-बेलगोला—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६९

कुम्बरहल्लि—कन्नड़—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कूहनहल्लि परगना) में, बसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना···क पुणि-समय

[इसमें अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है।]

[EC, III, Mysore tl., n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया (Boulder) पर]

श्रीमतु **कलुकर्रे-नाड्** आळ्वरु **चोक**-जिनालयके **मत्तिकेरेय** नट्ट कल चतुस्सीमान्तरेषु बिट्ट दत्ति इदं किडिसिदवं कविले बाह्मणनुव कोन्द ब्रह्म······एय्दुगु

[कलुकर्रे-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरेका दान दिया।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 92.]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ अर्काट)-तामिल

[१००५ ई०]

१ स्वस्ति श्री [।।] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे-

२ ल्वियुन् तनक्के युरिमै पूण्डमै मनक्कोळ **कान्दळुर्** चालै कलम-रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुङ् गङ्गपाडियु

३ नुळंबपाडियु न्तडिगै पाडियुङ् कुडमलैनाडुङ् कोल्लमुङ् कलिङ्गमुं एण्डिशै पुगळ्तर विळमण्डलमुं तिण्डिरल् वेन्रि त्त-

४ ण्डार्कोण्ड[त्ते]ळिल् वळरुळि एल्लायाण्डुं तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डे चेळिआरैत्तेचु कोळ् श्री**कोवि**-

५ **राज इराजकेशरिपन्मरान** श्रीइराजइराजदेवर्क्कु याण्डु २१ आवदु अंलपुरियुं पुनर् **पोन्नि** आरुडैय **चोळन्**

६ **अरुमोळिक्कु** याण्डु इरुपत्तोन्रावदेन्रुङ्गलै पुरियुमतिनिपुणन् वेण् किळान्

७ **गणिशेखरमरुपोऱ्चुरियन्रन्** नामत्ताल् वामनिलै निऱ्ऱुकुड्—

८ कलिङ्गचिङ्ग नीमिर् **वैय्गैमलैक्कु** नीडुळि इरुमरुङ्गुं नेल् विळैय—

९ क्कण्डोन् कुलै पुरियुं पडै अरेचर कोण्डाडुं पादन **गुणवीरमा-मुनिवन्**

१० कुळिर् वैय्गैक्कोवेय् [॥]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेसरिवर्मन्, उर्फ राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्नि, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दोंमें)।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु-पोर्चुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बनवाई थी। तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैय्गैमलै" नामसे है।]

[South Indian Ins., I, n° 66 (p. 94–95), t. & tr.]

१७२

वेलूरु—कन्नड़-भग्न

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[वेलूरु (कोत्तत्ति परगने)में, तालाबपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भि-कुम्भ-दळन-पञ्चास्य समुदित-श्रीम···· ळ-विमुक्त-**चोळ**-भूपाळ····लिन····जिन-वीर-**लक्ष्मी** आश्रित-भक्त-मला-पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भ श्रीमद् अ····**गङ्गमण्डलेश्वर** प्रभु-पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-**नाभि**-कानीनम समर-जित-भूप-जीव-प्रदनुं अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्········ **तिगाङ्गनेयं** सौच-**गाङ्गेयं** शरणागत-वज्र-पञ्जरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम् तन्त्र-रक्षामणि मन्त्री-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-**पेर्गडे-हासम्**

विश्व-बिस-हासर् प्पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-कालातीतसंवत्सर-शतङ्गळ् ९४४ नेय दुर्म्मुखि (दुर्म्मति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध-पञ्चमी-सोमवार पुनर्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्म्मनडिगळु कर्णाटनाळुत्त-मिरे तम्म स्व-दोराळदन्दुं········नव जिनालयक्के पेर्म्मनडि जीवितम् ·········द बलोर-कट्टलाळ्वाद केरॆय मेट्टुकं बोय्सि कट्टेय कट्टिसि तूबनिरसि मुन्नं तव····कोळग मण्णु बिट्ट दोन्द···केर्रेगे········मुमं बिट्ट मिदनळिद कोटि-कविलेयं ब्राह्मणरुं काशियुमनळ्किरे

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्गडे-हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, बलोर-कट्टके गहरे तालाबकी सीढ़ियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या मोरीके बनाये जाने, तथा············एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र है। उसके समयमें कण्णाट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्म्मनडि शासन कर रहे थे। यह पुण्यकार्य पेर्म्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था।]

[EC, III, Mandya II., n° 78]

१७३

मथुरा — संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः सूरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।
आचार्यविजयसिङ्ह-

२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]
सुश्रावकैर्नवग्रामस्थानादिस्थै स्वसक्तितः ।

---

१ संवत्सर 'दुर्म्मुखि' दिया हुआ है: यह स्पष्टतः गल्तीसे लिखा गया है। इसकी जगह 'दुर्म्मति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है।

१७८

अङ्गडि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०४० (?) ई०
(लू० राइस) ।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, हरमक्कि दोड्ड-उडवेमें पाषाणपर]

.................राज्यं गेये....**द्रविणान्वयद मूल-सं**...........
....**पण्डित**...............तु तर्काचाळितामा....जलधि-यशो...कुतू-
हल...शय **वज्रपाणि पण्डित**-चरण ॥ एनिसि सले **गङ्गवाडिय** ।
मुनि-वररिं **राजमल्ल**-भूपालकनीमनु-नीति-मार्गनभयं । जन-पति-सम्य-
क्त्व-**मार**-नृपतिय गुरुगळ् ॥ वृ ॥ इरदापत्तिगळङ्गळिं तळ...व्यत्त
हो....। दुरितारण्यमनेय्दे सुड्डु **सोसवूरोळ्** बिळद् कालान्तदोळ् । ....
रे सन्यास-विधानदिं मुडिपि पूज्यं **वज्रपाणि-व्रतीश्वरर**त्युत्तम-मुक्तियं
पडेदरेम् पुण्यक्कवर् नो.... ॥

(बायीं ओर)...............**रविकीर्तिमुनीन्द्र**नेन्दु पट्टळिगेये
पेळदेनेळव **कल्नेले-देवर** साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कल्नेले-देवर्त्तम्म
गुरुगळ्गे निषिधिगेयं माडिसिदर् मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके...पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोंमें जब ..राज्य कर रहा थाः- गङ्गवाडिके मुनियोंमें प्रसिद्ध राजा राजमल्ल था । इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोसवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमें संन्यास-मरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 18]

१७९

क्या(बया)ना (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० ११००=१०४४ ई]

[IA, XIV, p. 8-10 n° 151, t. & a.]

---

१ यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

१८०

दोड्डु-कणगालु—कन्नड़।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (ल० राइस)।]

[दोड्डु-कणगालुमें, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गुळेश्वरद बलिय·····**शुभचन्द्र-देवर** प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प **प्रभाचन्द्र-देवर** निसिधि **तारण-संवत्सर**-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्तरादरु।

[श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गुलेश्वर बलिके···शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि (निसिधि)। (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

वेळगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर** विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पल्लवोपशोभितोत्तमाङ्गं स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **वनवासि-पुर**-वरेश्वरं **महालक्ष्मी**-लब्ध-वर-प्रसादं त्याग-विनोदमायदाचार्य्यनसहाय-शौर्य्यं गण्डर गण्डं गण्ड-भेरुण्डं मूरु-रायास्थान-कलि विरुद-मण्डलिक-वृषभ-शंकरं कलिगळ मोगद कयि विरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **चा-ण्ड-रायरसर बनवासि-पन्निर्-च्छासिर**मनाळुत्तमिरल् राजधानि-**बल्लिगावेय** नेले-वीडिनोळ् **शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति**-श्री-**शान्तिनाथ**-सम्बन्धियप्प **बळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारक**र-शिष्यरप्प **केशवनन्दि-अष्टोपवासि-भळा(ट्टा)रर** बसदिगे पूजा-निमित्तदिं धारा-पूर्व्वकं **जिड्डुळिगे ७० र** बळिय राजधानि-बल्लिगावेय पुल्लेय-बयलोळ् मेरुण्ड-गळेयोळ् कोट्ट गळ्दे मत्तरय्दु अदर सीमे (**सीमाओंकी चर्चा**)

धर्म्मेण शौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।
गण्ड-भेरुण्ड-सादृश्यो न भूतो न भविष्यति ॥
(**हमेशाके अन्तिम श्लोक**)
बनवासे-देसदोळगण ।
जिन-निळयं विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।
मुनि-गण-निळयमिवं रा- ।
यन बेसर्दि **नागवर्म्म**-विभु माडिसिदम् ॥

[**जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था:—बनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-भेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदों सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस बनवासी १२००० पर शासन कर रहा था;—बळिगावे राजधानीमें, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्तिनाथके साथ सम्बद्ध बळगार गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि-भट्टारकी बसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राजधानी बल्लिगावेके मृगवनमें, 'भेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया । (भूमिकी सीमाएँ) ।**

गण्ड-भेरुण्ड' की प्रशंसा। हमेशाके अन्तिम श्लोक।

बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके लिये निवास। ये, रायकी आज्ञासे, नागवर्म्मा-विभुने बनवाये।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्त्य**मोघवर्षदेव**-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंबरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-तपश्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं **कुवलाल**पुरवरेश्वरं **पद्मावती**लब्धवरप्रसादितं कोङ्गणि-पट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजयभेरीनिर्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणं सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरणं विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरणं सारस्वतजनितभापात्रयकवितालालितवाग्ललनालीलालालामं गजविद्याधामं श्रीमत्-**शिवमार**ाभिधान**सैगोट्टु**गङ्ग-पेर्म्मानडिगळ् मरदलुमेतेयागे **गङ्गवाडि**-तोम्भत्तारु-सासिरमं सुखसङ्कथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तिव्दु **कादलवल्लि**-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोळ् **जिनेन्द्र**मन्दिरमं माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु **गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु** विलसद्गङ्गभूपालराम्नायद
कीर्तिश्रीविहारास्पदकरमिदु **गङ्गावनीनाथ**रौदार्य्यद
जन्मस्थानमेम्बन्तिरे विबुधजनानन्दमं भव्यसंपत्पदमं
सैगोट्टु-पेर्म्मानडि जिनगृहमं माडिदं भक्तियिन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरक्के । वृ० ।

विमळश्री**गुणकीर्तिदेव**रवरंतेत्रासिगळ्-

नागचन्द्रमुनीन्द्ररेंदपल्यरुदू**जिनचन्द्राख्य**-

र्त्तदीयात्मजर्द्दमिताघर**शुभकीर्तिदेव**रेसेद-

र्त्तच्छिष्यरुद्यद्वचो-रमणीयर्स्सले **देवकीर्त्तिगुरुगळ्**वादीभकण्ठीरव[र् ॥]

आ परमेश्वरर्प्परवादिविध्वंसिगळुं विदिताशेषशास्त्ररुं **मैलापान्वय** मेनिसिद [क]**ारेयगण**गगनचूडामणिगळुमप्प **देवकीर्तिपण्डित-देवर** काळं कर्च्चि ॥ ॐ **शकवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य (ष)-बहुल-चतुर्द्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोट्ट-गङ्ग कुम्मुदवाड**मेम्बूरं बिट्टनल्लिये मत्तं दानसालेगे पोल्नुमं कुम्मुदव्बेय देगुलर्दि बडग पोगि मूड मुखं केरिवुमं बसदियिं मूडलु दानसालेगे पत्तिर्क्कयि-निवेसणमुमं । ऊरिं मूड **सपसि(?)गे-गर्द्दे**युं बयलुमं बिट्ट-॥-ना ग्रामद सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डर्दि । सिडिलनेरिलिं । समेयदातनकेरेयिं । मलप्प-बूदर्नि । नोळप-बळप-बिळियळरियिं । गङ्गरोळादुव-संकिय-केरेयिं । हिच्चलगेरेय कोडियिं । निन्दबेलिं । सिन्दगिरि-बोब्भगादिं । सून्दिगेरेय नीर तट-बोब्भगादिं । सिङ्गस-गेरेयिं । कदिकोट्ट-बळिवळि-गर्द्देयिन्दोळ-गुळ्ळ भूमि **कुम्मुदवाडक्के** ॥ मत्तमूरिं तेङ्क दानसालेय पोलक्के एरप-केरेय मूडण कोडिय बडगण गुत्तिय तेङ्क मुखदे मूडल्मेरे । तेङ्क [लु] बळिवळि-गर्द्देयुं । आलिगोण्डमुं मेरे । बडगलिंविन-केरेय मध्यं मेरे । पडुवलु बिक्किय-बेट्टद तेङ्कण बागोळगागि मेरे ॥ (।) इल्लिन्दोळगुळ्ळ भूमि दानसालेगे ॥ ओम् [।।]

ॐ **स्वस्ति** समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं **कुवलाल**-पुरवरेश्वरं **पद्मावती**लब्धवरप्रसादितं **कोङ्गुणि**पट्टबन्धविराजितं शासनदेवीविजय-

मेरीनिर्ग्घोषणं भगवदर्हन्मुमुक्षुपिञ्छध्वजविभूषणनुमप्प श्रीमत्कश्चरस-
स्सैगोट्ट-गङ्गनिं बन्द धर्म्ममं समुद्धरिसिदनिदन्तप्पदे प्रतिपालिसिदातं
वारणासियोळ् सासिर्व्वरु ब्राह्मणर्ग्गे सासिर कविलेय[म्] कोट्ट फलम् ।
इदनळिदातं वाणरासियोळ् सासिर कविलेयुमं सासिर्व्वर्त्तपोधनरुमं
सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [।।] ओम् [।।]

सामान्योऽयं धर्म्मसेतुं नृपाणाम्
काले-काले पालनीयो भवद्भिस्-
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्त्थिवेन्द्रान्
भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (।।)

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ।।
न विषं विषमित्याहुः देवस्वं विषमुच्यते
विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्र-पौत्रिकम् ।।
बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।।

ॐ [।।]

[कल्भावी बम्बई प्रान्तके बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीब ९ मील दूर एक गाँव है। इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पंक्ति ८, १५, और २१ में 'कुम्मुदवाड' दिया हुआ है। लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११ वीं शताब्दिका मालूम पड़ता है।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अन्वय और कारेय गणके देवकीर्त्ति नामके जैन गुरुके पादों (चरणों) का प्रक्षालन किया था। उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैगोट्ट-पेर्मानडि या सैगोट्ट-गङ्ग-पेर्म्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कलभावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जिनेन्द्रका मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया। इस दानका काल शक-संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है। लेकिन, जे० एफ० फ्लीटकी रायमें, यह काल जाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उत्तरार्ध में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त दान बीचमें या तो ज़ब्त कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द कर दिया गया था और उसे कञ्चरस नामके किसी दूसरे गङ्ग महामण्डलेश्वरने फिरसे चालू किया। भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ० फलीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है। मौलिक दानपत्रके खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पड़ी है। लेखमें खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष' नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन-सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा था। मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला जा सकता है। प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है, क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पड़ता है।]

[Ind. Ant., Vol. XVIII, pp. 309-13.]

१८३

नल्लूर्—संस्कृत तथा कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; लगभग १०५० ई० (लूई राइस)]

[नल्लूर् (हलुगड्डुनाड्) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालाबके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने ।
कु-तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प····धनं परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।
कुडे त····ताळ्दि····य **तिग····मतिग**····भया····दन्तम····।

संघदरुङ्गळान्वयद **गुणसेन-पण्डित-देवर्ग्गे** माडिसि धारा-पूर्व्वकं कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक)।

[धर्म्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळवने, अपने पिता द्वारा निर्मित बसदिके लिये हेरुवनहळिळ, अरकनहळिळ, तथा निडुत गोडलुमें तीन खण्डुगका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोंमें (जिनके नाम दिये हैं)।

और राजाधिराज कोङ्गाळवकी माँ पोचब्बरसिने अपने गुरु द्रविळ-गण, नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गळान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्व्वक इसे समर्पित की । शाप ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ बस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री **राजेन्द्र-चोळ्ळ-कोङ्गाळ्वन** पुत्र श्री—रा····**कोङ्गाळ्व**···· वास-स्थानमं तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गळान्वयद नन्दि-संघद **गुणसेन-पण्डित-देव**र्ग्गे धारा-पूर्व्वकं कोट्टं मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळवके पुत्र रा···कोङ्गाळवने तिवुळ-गण, अरुङ्गलान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें···दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री **गुणसेन-पण्डित-देवर** अगळिसिद नागवावि नकरद धर्म्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित-देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपमें खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 42]

१९२

सोमवार—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; लेकिन संभवतः लगभग १०६० ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) में, बसवण्णं मन्दिरकी बाहरी दीवाल के पाषाणपर]

धरेयोळ्**एचल-देविगे** ।
गुरुगळ् **गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम्** ।
वर- **नन्दि-संघ**मन्वय-।
मरुङ्ग······नगदेन्दडेम्बणिणपुडो ॥
भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ-गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयके, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस संसारमें कैसे हो सकता है ? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 98.]

१९३

कडवन्ति—कन्नड़-भग्न ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवतः लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमें, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय श्रीमत्-दान····**खचर-कन्दर्प्प सेनमार** पृथुवी-राज्यं गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद **महेन्द्र-बोळलं** पडेद **अङ्कदेव-भटारर** शिष्य**महीदेव-भटारर** गुड्डं **निरवद्यय्यं मेळसरय** मेगे **निरवद्य-जिनालयमं** माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरवद्यय्यं मानियं पडेदु जक्कि-मानियेन्दु पेसरनिट्टु निरवद्य-जिनालयके कोट्टं

एडेमलेय सासिर्व्वरुं गळ्देय मेक्कळ तम्म तम्म गळ्देय मेगे एल्ला-कालमुं पलं दप्पदे **जक्कि**-गोळगमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् मादेर रचिपन्दूरुगं एक्कलिग सिरिपुरसनुमित्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोकुळि-मक्किय पलिसिन तारनित्तरुज्जेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तरर्द्दवाडियोळपिन्दगर-ण्डुग मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोळ्····················मूगण्डुगमित्तं शालादित्यर कम्पिगमिर्क्कण्डुगं·········मुळियर कुन्द कोण्टार्प्पन्दियो सार·········
·········मेदुकय्यं किरगादण्ण मू-गण्डुगं मण्ण···म् इकुळ-भत्तमुमन·····
·····न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डु············मित्तर्·····योळ श्री-त्र·····

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थेः—निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अङ्कदेव-भटारके शिष्य महीदेव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-बोळलुको पाया था,—मेलस चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प्प सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया।

और एडेमले हजारने अपनी हरएक धान्यके खेतोंकी फसलसे कुछ धान्य (चावल) दानरूपमें हमेशा के लिये दिया।

और भी जिन लोगोंने अनाजका दान किया उनके नाम दिये हैं।]

[EC, VI, Chikmagalur tl., n° 75]

१०४

अङ्गडि—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना] में, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) **सोसवूर** सेट्टिगळ **लोकजित**निगे निषिधिय कल्ल नखर-समूह नट्टरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी लोगोंने खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl., n° 16.]

१९५

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक्क-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-**वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्म्माडिसिद पुस्तक-गच्छद** बसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळ्व-देवने पुस्तकगच्छकी बसदि बनवाई]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 22.]

१९६

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-वस्तिमें, दरवाजेपर पड़े हुए पत्थरोंपर]

दशाशिर-प्रहारियप्प **रामस्वामि** विट्ट **परमेश्वर**-दत्तियं शकनोड **विक्रमादित्यं** पडिसलिसि-तान·····मुन्निनन्ते बडगण-तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु नेलनं ख·····ताम्र-शासन-पूर्व्वक कोट्टरदं **मारसिंह-देव** पडिसलिसलेन्ता-**परमेश्वर**-दत्तिय बडगण तूम्बिन नीर्व्वरिदनितु·····मुन्निनन्ते कादना-**रामर** दत्तिय ताम्र-शासन पडिय·····**मडि** ईयक्कर बरेदवदं **नन्नि-चङ्गाळ्व-देवर्प्पुनर्ण्णवं** माडिसिद बसदिय तूम्बिनलक्करवु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदर्गे कविलेगे तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सींची गई सारी जमीन,-दशशिर (रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड़ दी गई थी, परमेश्वरने जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी दिया था,—ताम्बेके शासन (लेख) पूर्वक·····दी । परमेश्वर-प्रदत्त तथा उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया ।

......मच्चिने रामके दिये हुए इस ताम्बेके शासनपर दानके अक्षर लिखे और बसदिके पानीकी राहके फाटकपर मूर्त्तियाँ और अक्षर खोदे । इस बसदिको नन्नि-चङ्गाळ-देवने फिरसे बनवाया ।]

[EC, IV, Yedotore tl., n° 25.]

१९७

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सूळे बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-सुरासुर-
मस्तक-मुक्तांशु-जाल-जल-धौत-पदम् ।
प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-
मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥

स्वस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर**राज्यं सलुत्तमिरे ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-**मधुरा**-धीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च्च-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्ब्भ-त्रयाधिक-दानं वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कळा-कीर्ण्णं शान्तरादित्यं सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं रिपु-बल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिर**मुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमाळुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि स्वस्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डनं नखर-मुख-मण्डनं शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोस(ष)-निवारणं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीनं विशद-यशो-निधानरप्प

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-**नोकय-सेट्टि** **म (श) क-वर्ष ९८४ शुभकृत्-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु** तन्न माडिसिद **पट्टण-स्वामि-जिनालयक्के वीर-सान्तर-देवङ्गे** (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) सर्व्व-बाधा-परिहार-मागि माडि तन्न सधर्म्मिगळ् **सकलचन्द्र-पण्डितदेवर्गे** कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्याव-यव आते हैं)।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलवं सले तिन्दवम् ।
सिट्टि-मेले परमात्मने बन्देडेगोवदम् ।
कट्टिकोण्ड बिदिरन्ते कुल-क्षयमागुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक ।)

अक्कर ॥ ईवरेन्दत्ति पल्लिरिदरदप····तागि बेळदपर् ल्लेज्जेगेट्टु कावरेन्दल्····मरणेन्दु वन्दपर् त्तावञ्जि मरेवक्कुं बाल्वेमेन्दु साम-बह्नदा मरेवक्कु वन्······बिडियुं निदे पट्टियदन्दु

जीवमुजीवक्के तक्कके बारदे किळवड्डु बरवेके **बीर-देव** ॥
धुरदोळमि-ल्लतेयनुच्चिदड्डु ।
अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील् ।
नरतरदिनुळिच्चदवु निज- ।
कर-खळगमवर्क्के कीले **शान्तर**-नृपति ॥
बीरुगन दोरेगे दोरे पेर- ।
रारुं बन्दवर्रा-कृत-युगं त्रेते द्वा- ।
परं कलि-युगदोळगण ।
बीररुदार-प्रतापिगाळ् धर्म्म-परर् ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्म्मक्कतिशय-विभवं मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्दं सन्तोसं (ष) माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
स्तरदिन्दं चिन्ते-गेय्युन्नत-गुण-[....] युतं **पट्टण-स्वामिनोकं-** ।
वरमारब्भव्यक्कळन्ता-पुरुप-रतुनदिं **बीरदेवं** कृतार्थम् ॥
पुदिद् तमम्-तमः-पटलं ओन्दिद् चिन्ते तगुळ्दु तळ्तु प- ।
त्तिद रुजे पेर्चि सार्चिद् दरिद्रते बट्टेयोळाद सेदे बड्-
गिद्पुदु कण्ड काण्केयोळे तप्पदु पट्टण-सावि नोक्कनि- ।
ळ्ददे बळल्दु बन्द बुध-मण्डलिगी-मले सू (शू) न्यमागदे ॥
बल्वलनप्प पेर्व्बुमिय बय्किगे भाजनमाद दोळ्गे बी- ।
ळल् बरिवन्ते नेल्द नरे-गट्टद दोड्डर बेल्लवातुगळ् ।
कोल्गुमवार्के केम्मनेडेयाडदिरोवेले शिष्ट बेडिको- ।
ळ्ळोल्वडे नम्म धर्म्मद तवर्म्मने पट्टण-सामि नोक्कनम् ॥
जिननं बण्णिप पूजिप ।
जिनागमोक्तियाडे नेगळ्व जिन-पदमं भा- ।
वनेयं निच्चं ताळ्दुवन् ।
एने पट्ट[ण]-सावि ये जिनागम-निधियो ॥

वचनम् ॥ **सम्यक्त्व-वारासियुमेनिसिद पट्टण-स्वामि** नोक्कय्यं.... हुरदोळु देवर वल्लभरनेरगिसि रत्नङ्कळम् ग्वचियिसि । पोन्न बेळ्ळिय पवळद महा-मणिय पञ्च-लोहदोळं प्रतिमेगळं माडिसिदं । (**यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है** ।) **सकळचन्द्र-पण्डितदे**वर गुड्ड **मल्लिनाथं** बरेदम् ॥

सुजन-जन-कुमुद-चन्द्रन ।
सुजन-जनानन-विलोक-मणिमुकुरनना- ।

सुजन-जन-वनज-हंसन ।
सुजनजनं पोगळे मल्लिनाथं नेगळ्दम् ॥

गुडिवयलुमं बिट्ट (**सिरेपर**) पट्टण-स्वामिय परि नेम-व्रतवेरेदन्दे तुरवनिन्तिदु···गेय्यद·····येत्तिद य····सा····सन्तोस(ष)-दान-विनोद·····॥ श्री-पट्टण-सामिय गुरुगळ् श्रीमद्-**दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवरु** श्री-बिरुद-सर्व्वज्ञं **बीर-सान्तर-देवम्** ॥

पुसियदिरारोळंब-नदिं पर-नारिय त्तपोगे तप्पु ।
एसगदिराव-जीवदेळमेवडेयेम्बुदनेन्तुमोल्छदिर् ।
कुसियदिरायदिं पोणर्दु तळ्तेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।
बिसडदिरेम्बुदी-बरेद····सने **सान्तर-बीर-देवनम्** ॥
नेगर्दुम्रान्वय-पद्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोर्व्वीशनु- ॥
दृव-गुणाम्भोनिधि बीरुगं बिरुद-सर्व्वज्ञं धरा-मण्डळम् ।
पोग[ळि]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यशं धर्म्माधिकं ताळ्दिदम् ।
जगदोळ् **पट्टण-सामि**-वट्टमनिदम् **नो**क्कं यशो-भागियो ॥

पट्टणस्वामि-जि**नालयद** शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्तमान था—जब, (उन्हीं पदों सहित जिनसे अलङ्कृत नन्नि-शान्तर शि० ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य-मल्ल-वीर-शान्तर-देव शान्तलिगे हज़ार-पर एकछत्र राज्य कर रहा था; —

तत्पादपद्मोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं० २११ में हैं) । पट्टण-स्वामि नोक्कय्य-सेट्टिको (उक्तमितिको) अपने बनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १०० गद्याण भेंट करने पर, मोलकेरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमायें । इसने

लक्कद् सव-लेक्कद् मरु- । वक्कं निन्दपुवे समर-संघट्टनदोळ् ॥
(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत घिसा हुआ है और अन्तिम पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा है ।

छेनी और बसिको पकड़नेवालोंमें प्रधान, अर्थात् पाषाणशिल्पियोंमें प्रधान बियावान पोय्सळाचारिके पुत्र माणिक-पोय्सळाचारिने यह बसदि बनवाई ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोऽसलके गुरु मुल्लूरके गुणसेन-पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ्-गण्डकी प्रशंसा । "रक्कस-होय्सळ" इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (हमेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Mūḍgere tl., n° 13.]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़
[शक ९८६=१०६४ ई०]
मुल्लूर (निडुत परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ् ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तत्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गळवारं पूर्व्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्मिनोदयदल् ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगळं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमामृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरप्प श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवरम्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दर् (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पटुगळ् **पुष्पसेन-व्रतीन्द्रर्** ।
वर-सङ्घं नन्दि-सङ्घं द्रविळ-गण-महारुङ्गळान्वय-नाथम् ।
परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शास्त्रागमादि- ।
स्थिर-षट्-तर्क्क-प्रवीणर् व्रति-पति-**गुणसेना**र्य्यरार्य्य-प्रणूतर् ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया। उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे। गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ-गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुङ्गलान्वायके नाथ थे । ये सब विद्याओं—व्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे।]

[EC, IX, Coorg tl. n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमें, चन्द्रप्रभ बस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा)·····स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथिवी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळति-ळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर्** चतुस्समुद्र-पर्य्यन्त-पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर**नुत्तर-मधुरा**धीश्वर पट्टि-**पोम्बुर्च्चे**-पुर-वरेश्वरं महोग्र-वंश-ललामं पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्ब्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज- विराजित-राजमानं मृग-राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्नं बहु-कलाकीर्ण्ण सान्तरादित्यं सकळ-जन-स्तुत्यं कीर्त्ति-नारायणं सौर्य्य-परायणं जिन-पदाराधकं रिपु-बळ-साधकं नीति-शास्त्रज्ञं विरुद-सर्व्वज्ञं नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-भुजबळ-शान्तर-देवं शान्तळिगे-सासिरमं निरर्द्दयादवुं निरा-

कुळं माडि राज्यं गेय्युत्तिळ्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय विश्वावसु-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्च्चदोळ् भुजबळ-शान्तर-जिनालयक्के माघ-मासद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रमण-दन्दु तम्म गुरुगळ् कनकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि हरवरियं बिट्टम्। (यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है)।

जिनशासनके कल्याणकी कामना। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर रहे थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि शि० ले० नं० १९७ में दिखाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजबल-शान्तर-देव, शान्तळिगे हजारको उपद्रवों और कष्टोंसे मुक्तकर शासन कर रहे थे;—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्चमें भुजबल-शान्तर जिनालयके लिये अपने गुरु कनकनन्दि-देवको हरवरिका दान किया था: इसकी सीमायें। बसदिका ऐसा शासन (लेख) है।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 59]

२०४

बलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[बलगाम्बेमें, बडगियर-होण्डके पासके आंगनमें पाषाण-खण्डोंपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर ········भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्त्रैलोक्य-मल्लनाहवम········सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरेयिरे॥

वृत्त॥ मलेपर् म्माराम्परिळ्कमदि····तराटर्प्परिळुर्कि दर्कुन्-।
दले-वाय्युद्वृत्तरिळ्ळोड्ज़ि-वेरसु कुरुम्बर्त्तरुम्बिर्प्परिळे-।

त्तलु····बर्प्प दळ्ळेन्दुरित्र रिपुगळ्ळिळेम्बिनं **कुन्तळो**र्व्वी- ।
तिळकं **त्रैलोक्यमल्ल**-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो····क-चक्र ॥

लाट-कलिंग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चोळ-क- ।
र्ण्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्ण्ण-सुकोशल-केरळादि-दे- ।
शाटविकाधिपर् म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्म्मिता- ।
घाटदोळिर्प्प····अळवी-दोरेता**हवमल्ल-देव**न ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
तां तळेदु सुखदे पल-का- । लन्तव तत्र-निधिगधीशनाह**व-मल्लम्** ॥

वृत्त ॥ **म ···धावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाञ्चाळ-लाळा**
दिगळं पेसेळे कोन्दुं कवर्दुमसदळं कोट्टजं गोण्डुमाळो- ।
ळिगे दण्डुं तोळ-तीनुं मनद तवकमुं पोगदेन्दिन्द्रनं का- ।
डि गेलल् कर्प्पं गोडल् वरिसि तळर्दनेकांगदिं सार्व्वभौमम् ॥

गगन-नवाङ्क-संख्ये शक-काळदोळागिरे कीळकाब्दकम् ।
नेगळे तदीय-चित्र-बहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम्·········द्रेयोळ् ।
जगदधिपं त्रिविष्टपमनेरिदना**हवमल्ल**-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चाळुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्म्मगं धरा-तळमं गो-
त्राचळ-जळधि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाळ्व महात्मं ॥

····दित-**व्योम-नवाङ्क-संख्ये सक-काळं वर्त्तिसल् कीळका-**
ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
वृत्तं ॥ रदोळत्यन्त-कुळीर-लग्नदोळिभाश्व-व्रात-रत्नातप- ।
च्छद-सिंहासन-पूज्य-राज्य-पदमं **सो[मे]श्वरं** ताळ्दिदम् ॥

वृत्तं ॥ जयमं धर्म्मके धर्म्मान्वयमनसदळं साधु-वर्ग्गके वर्ग- ।
त्रयमं तन्नन्तरङ्गक्कोडरिसि धरेयं कूडे सन्मान-दान- ।
भ्रयदिं सन्तय्से काळं कृत-युग-मयमातेम्बिनं तन्न राज्यो- ।
दयदोळ् लोकक्के रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्व्वभौमम् ॥

आ-प्रस्तावदोळ् ॥

वृत्तं ॥

नव-राज्यं वीर-भोज्यं पुगलिदवसरं सुत्तुवें गुत्तियं मु- ।
त्तुवेनेम्बी-गर्व्वदिं चोळिकनधिक-बळं मुत्ति मार्-गुत्तियं प- ।
ण्णुवुदं केळ्देत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सय्तागदभ्रा- ।
हवदोळ् बेङ्गोट्ट सोमेश्वर-नृपन बळक्कोडिदं वीर-चोळम् ॥
पेसरं केळ्दळ्कि बेळ्कुर्त्तुदु पर-धरणी-मण्डलं गण्डु-गेट्टाळ्- ।
वेसनं पूण्दत्तु शौर्य्योन्नतिगगिदसुहृन्मण्डळं मेल्पनावर्- ।
ज्जिसिदोन्दाज्ञा-विसेपक्केळसिदुदु सुहृन्मण्डळं सन्तमिन्ता- ।
देसकं कैगण्मे सोमेश्वर-नृपति मही-चक्रमं पाळिसुत्तम् ॥
अन्तःकण्टकरं पडल्वडिसि दुर्ग्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
मन्त-द्रोहरनुद्धताटविकरं निर्म्मूळनं गेय्दु वि- ।
क्रान्तारातिगळं कळल्चि धरेयं निष्कण्टकं माडि नि- ।
श्चिन्तं श्री-भुवनैकमल्ल-महिपं राज्यं गेयुत्तिर्प्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-महेश्वरं चलके बल्गण्डं शौर्य्य-मार्त्तण्डं पतिगेक-दाशं संग्राम-गरुडं मनुज-मान्धातं कीर्ति-विख्यातं गोत्र-माणिक्यं विवेक-चाणिक्यं पर-नारी-सहोदरं

वीर-वृकोदरं कोदण्डपार्थं सौजन्य-तीर्थं मण्डलिक-कण्ठीरवं परचक्र-भैरवं राय-दण्ड-गोपाळं मलय-मण्डलिक-मृग-शार्दूळं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देव**-पाद-पङ्कज-भ्रमरं श्री-**भुवनैकमल्ल**-वल्लभराज्य-समुद्धरणं पति-हिता-भरणं मण्डलिक-मकरध्वजं विजय-कीर्ति-ध्वजं मण्डळिक-त्रिनेत्रं रिपु-राय-मण्डलिक-यम-दण्डं जयाङ्गनालिङ्गित-दोर्-द्दण्डं विसुळर-गण्डं गण्ड-भूरि-श्रवनेम्बिव मोदलागे पलवुमन्वर्थाङ्क-मालेगळिन्दलंकरिसि ॥

कं ॥ **त्रैलोक्यमल्ल**-वल्लभन् - । आळेनिसिदरोळगे मिक्क पसयितनुं मि-
क्काळुं मिक्कण्मिन ब- । ल्लाळुं **लक्ष्मण**ने पेररनरिवरुमोळरे ॥
भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळं ताने मानसं ताने महा- ।
व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयितं **लक्ष्म**-नृपम् ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाळ् कार्य्यद शौर्य्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्य-राज्यक्के का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्तनक्के नेरेदाळ् कट्टायदाळ् मिक्क म- ।
न्नणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळदाळ्
रणदाळाळ्दन नच्चुगावेडेयोळं विश्वासदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडुं राज्यदोळं प्रजा-परिजनं कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
व्वेरु मोरन्दद कूर्म्मेयिन्दे **बनवासी**-देशम शासनम् ।
बरेदश्व-द्विप-पट्टसाधन-समेतं कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयल्मण्डलिक-त्रिणेत्रनेसेदं भू-भागदोळ् लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेर्म्माडि-देवङ्गे ने-
र्गिरियं वीर-नोणम्ब-देवनेनगं पेर्म्माडिगं सिङ्गिगम् ।
किरियै नीं निनगेल्लरुं किरियरेन्दग्गयिसि कारुण्यदिम् ।
नेरे कोट्टं प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदमं लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे बनवासे-नाळ्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-।
डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळंपुरमादियाद भू-।
मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमाशेगे नीळ्द लाड-वि-।
ण्डिगेयेने कण्डु कोट्टनवर्गा-नेलनं भुवनैक-वल्लभम् ॥
मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जनं वीर-नी-।
रद-दुर्व्वार-समीरणं वितरण-क्रीडा-विनोदं प्रता-।
प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केळी-कुञ्जरं लञ्चिका-।
मदनाङ्कं चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मनं **लक्ष्मणं** ॥
कं ॥ बलिवलेव मलेव केलेवद-टलेव पळञ्चलेव मलेपरेल्वं मुरिदं ।
मलेयद केलेयद बलियद । मलेपरनिसुवेसके बेससिदं **लक्ष्म**-नृपम् ॥
वृ ॥ धाळियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोक्किदपं तगुळ्दु कोम्बू-।
एळुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना····मुञ्चि मुक्कि नि-।
म्मूळिसिदप्पनेन्दु मलेपर्त्तले दोरदे रायदण्ड-गो-।
पाळ-नृपङ्ग मुन्दुवरिदेन्दु ऽनेन्दपरेम् प्रतापियो ॥
आळवलमुळ्ळडश्व-बलमिल्ल भटाश्व-बलङ्गळुळ्ळडम् ।
तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर्-ब्बलमुळ्ळडमेर्व्वलङ्गळिल्ल् ।
आळ् वेसगेय्यदेके बलिवर् मलेपर् म्मलेयेम्बुदेनदम् ।
बेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥
कवि दुग्ग चातुरङ्गं बवसे दळवुळं धाळि सूळेरेनिप्पा-।
हवदोळ् चालुक्य-रामं बेससे रिपु-बळक्केन्ननिन्द्रारियन्नम् ।
भवनन्नं भद्रनन्नं सिडिल बळगदन्नं ज्वळ-ज्वाळियन्नम् ।
जवनन्नम्मारियन्नं समर-समयदोळ् लक्ष्मणं रामनन्नम् ॥
कुदुरेय मेले बिल् परसु शूलिगे तीरिके भिण्डिवाळमे-।

शीकर कालानळनु (ने)............तदप्प (?) भयंकरवि[द्वि]ड्महिपाळ मेघलयकालोत्पातवातं क्षितीश्वर-चूडाम[णि]............[।।] श्रीवनि-तेशं कीर्तिश्रीवनिताधीशनुदित संशुद्धवच(च:)श्रीरमणीशं वीर (श्री) ....[।। जिन] नाराधिपदेवनुद्धचरितार्व्विद्यावन............ टासनधर्म्मा (?) रुगळ्विरो........जनकनुर्व्विजाते प्रत्यक्ष गोमिनि तायि मळलदेवियेन्दधिक................नोल्द् मतक्कवर्ण्प (?) री क्षितिपति सैनि (?) र वधूप्रकर.........दिति........आतन कुळांगने [।।] श्री वनिते ताने बन्दु मही वनितेगे तिळकमेनिसि कत्तन वक्ष (क्ष:) श्रीव-निते नेगर्द [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाग्रणियेनिकु ।। आ दंपति-गळगे गिरिसुतेगं हरंगमनुरागदे षण्मुखनेन्तु पुट्टवंत(वि)रे नेगर्द रुग्मि-णिगमा ह[रिगं] स्मरनेन्तु पुट्टुवन्तिरे सले कान्तिगं रविगमर्क्कतनूभव नेंतु-पुट्टुवन्निरलवग्गोल्दु पुट्टिदनु रगु कलि **सेन**भूभुज ।। अवनीपालानत श्री[पद]कमलयुगं तत्वनिर्णिक्तराद्धान्तविदं चारित्ररत्नाकरनमळ-वच(च:)श्रीवधूकान्तनं गोद्धवदर्प्पारण्यदावानळनुदितलसद्बोधसंशुद्धनेत्रं **रविचन्द्रस्वामि** भव्याम्बुजदिनपनघौघाद्रिसद्वज्रपात ।। कं ।। कंडु-गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड सुर-वेदण (ण्ड)[य]शशा×पिण्डन**हणंदि** मुनीन्द्र ।। मल्लिकामाले ।। कन्तु-राजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकरं कान्तवाग्वनितामनोरमनुप्रवी-रतपो]मयं शान्तमूर्त्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्रढा (ढाभिमानी रणभू-सेनानि रट्टान्वयश्रीनेत्रं बुधमित्र नुज्र (ज्ज्र) ळयशश्पात्रं नृपं रंजिपं आ सेनावनिपंगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिदं । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणभुजं विध्वस्तशत्रुव्र (व्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)स्तान्विता

भासं सूनृतवाग्विळासनवनीनाथोत्तमं कत्तमं ॥ आ विभुविन वधु पद्मलदेवी कळारूपविभवजिनमतदोळ्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-गेदु वसुदेवोपमकत्तमविभुगं श्रीपद्मलदेवियेम्ब मुनदेवकिगं ॥ प्रकटि-ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकररथांग सम्मदकर (रं) नियताभ्युदयप्रशोभिताधिकनिजमण्डलं जितकळंक पवित्रचरित्रनागि चन्द्रिकेगधिनाथनादनिदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुजं ॥ श्रीयुवतीशहेम-गरुडध्वजमंडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-भारधौरेयरनून दानजयधर्मधरर्व्विभु**कार्त्तवीर्य**लक्ष्मीयुत**मल्लिकार्जुन** महीश्वररादरतर्क्यैविक्रमर् ॥ परचक्रं निजविक्रमक्कगिदु तेजःच (जश्ज) क्रमं बिट्टु कोवर चक्रक्केणे यर्ष्पनन्तिरेविनं दिक्चक्रमं व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकड़ा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो मि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें कि पूर्वके दो लेख (नं. १३० और १६०) मिले थे। इसमें नहुषसे ले कर कार्त्तवीर्य द्वितीय तककी वंशावली मिलती है। का० द्वि० को चालुक्य राजा भुवनैकमल्लदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है। इसका काल सर डब्ल्यू. इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९–७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६–७ ई०) तक बताया है। इसमें उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलिके भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टतः ७ वी पंक्तिमें है जिसमें कार्तवीर्यकी सन्तान-परम्पराका उल्लेख है। यही कार्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा रहा होगा। दानगत लेखका भाग लुप्त है।]

[JB, X, p. 172, a; p. 213–216, t.; p. 217–219, tr. (ins. n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निडुत परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें तीसरे पाषाणपर]

.....यानिधि सल्या.....ल-देवि ॥ भूतल .....विनिर्गत.....लोक्यविख्याते.....यण मोक्षदे .....वर्ण्ण.....द्यामुलं.....पनिद....माळि..... नुर्व्वीपाळ-भूत....बरसिद कारुणियोदव.....न वचन काय वद्दिग .....तुळ्ळिन.....यम्बन्तिरे स.....त दिविजलोक ॥ खं .....**पृथुविकोङ्गाळवनरसि**....

[यह समस्त लेख बहुत बिगड़ा हुआ है। किसी मरे हुएका स्मारक है। और पृथुविकोङ्गाळवकी रानी.....]

[EC, IX, Coorg tl., n° 36]

२०७

बन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[बन्दलिकेमें, उसी बस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं **समन्तभद्रस्य पूज्यपाद**स्य सन्मतेः ।
अकलंक-गुरोर्भूयात् शासनाय जिनेशिनः ॥
श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
स्वस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्
यद्दोर्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विषट्-पार्थिवैः ।

यस्येयं वसुधा चतुर्जलनिधिव्यावेष्टिता प्रेयसी
जीयाच्छ्री-**भुवनैकमल्ल-नृपतिः** सोऽयं नतानन्दनः ॥

तेनेदं नरपाल-मौलि-विलसन्माणिक्य-लीढाङ्घ्रिणा
श्रीमद्-मल्ल-सुतेन शासनमहो दत्तं द्विषण्माथिना ।
आहारादि-चतुर्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
तेनाप्तं **कुलचन्द्र-देव-मुनिना** शुभ्राभ्र-सत्-कीर्त्तिना(म्) ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल**-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं-वरं सलुत्तमिरे **बङ्कापुर**द नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-**पृथ्वी-वल्लभ** महाराजाधिराज परमेश्वरं **कोळाळ-पुर**वरेश्वरं विक्रम-गङ्ग जयदुत्तरङ्ग.....मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्चा..... पेर्म्माडि भुवनैक-वीर**नुदयादित्य**नुं चालु.....ल-स्तम्भं नर-वैद्यं कुमार-मण्डलिकं बुद्धर.....गेय्यलु श्रीमद्-**भुवनैकमल्ल-देवरु भर** .....**क्रवर्त्ति**-नवीकृतमप्प **बन्दणिके**-य तीर्थ.....शान्ति-नाथ-देव.....त-नवीकार.....लाप्रवर्त्तन.....कालान्तरित-पु .....नव.....द कम्पणं **नागरखण्ड**.....बाड..... **शक-वर्ष ९९६** रनेय आ.....द पुष्य-मासदुत्तरायण-संक्रमण.... .....**श्री-मूल-संघान्वय-क्राणूर्-ग्गण**.....च्छद श्रीमदुभय-सिद्धान्त-वार्द्धि-चू.....**प्प राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर** शिष्यरु **कुळ**.....**देवर** कालं कर्च्चि सर्व्व-नमस्यं धारा-पूर्व्व..... ब्रशासनमुं शिला-शासनमुं माडि.....(**हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव**

और श्लोक)·····तं रितोक्ति-सहितं·····खं मुखाब्ज-लसित ·····मतोदयं सद·····मदनेम्बिनं नेगळ्द·····(हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना । श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा यह शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था। जिस समय (चालुक्य पदों सहित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे बंकापुरमें रहते थे:—तत्पादपद्मोपजीवी चालुक्य पेर्म्माडि भुवनैकवीर उदयादित्य शासन कर रहे थे;—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको), मूलसंघान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 221.]

२०८

बलगाम्वे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०७५ ई० ?]

[बलगाम्वेमें, चन्न-बसवप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी अक्षर)

स्वस्ति श्री **चित्रकूटाम्नाय**दावलि **मालवद शान्तिनाथ-देव**-सम्बन्ध श्री-**बलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** शिसिनु **अनन्त-कीर्ति-देवरु** हेग्गडे **केसव-देवङ्गे** धारा-पूर्वक माडि कोटेवु प्रथिष्टे पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है)।

[बलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्बन्धित चित्रकूटाम्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्त्ति-देवने हेग्गडे केशव-देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है)।]

[EC, VII, shikapur tl., n° 134.]

२०९

कुप्पुटूरू—कन्नड़

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।
निष्प्रत्यूह-नमपाकशासनं जिन-शासनम् ॥
पदिनाल्कु·····आस्पद्मा- ।
दुदशेष-लोकमल्लिर्-प्पुदु मध्यम-····एक-रज्जु-प्रमितम् ॥
आ-मध्यम-लोकद
·····नडुवण ।
पोम्बेट्टद तेङ्कलेसेव भरतावनि·····॥
·····बुजवदनेय कुन्तळव् ।
एम्बन्ते सेदत्तु ललित····· ॥
कुन्तळ-भूतळके तोडवादुदु तां **वनवासि-देश**मो- ।
रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळिन्दुरु-नन्दनालियिन् ।
दं तुरुगिद्द शालि-वनदिन्द्····· ।
क्रान्त-विरोधियिर्दु वनवासियोळ्नवय-राजधानियोळ् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर **वनवासि-पुर**-वराधीश्वर·····लब्ध-वर-प्रसादं **कादम्ब**-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डने-निसिद **कीर्त्ति-देव**न वंश-वीर्य्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी····· ।
वन-जैनाङ्घ्रि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्तास्त्र-शास्त्रं····।
····नुतोर्व्वीज-तळ-प्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।
जन-शीलं वनवासियागि·····इन्द्रोत्तमम् ॥

३२ न्दुमं प्रतिपालिसुवर्व्वगें **वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागे**यर्ग्घ्यतीर्त्थं मोदलागि पुण्यतीर्त्थङ्गलो-

३३ ळु सूर्य्यग्रहणदोळु सासिर कविलेयनलङ्कारसहितं चतुर्व्वेदपारगरप्प सासिर्व्वर्ब्राह्म-

३४ णर्ग्गेयुमयमुखियोळ् प(फ)लमक्कुवी धर्म्ममनळियल्लु मनंदवर्गगयिन्ती पुण्य-तीर्त्थङ्गळोळु सासि-

३५ रकविलेयुम [म्] सासिर्व्वर्ब्राह्मणरुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु ॥ ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-भे-

३६ रुण्डापरनामधेयरप्प **श्रीनन्दि**पण्डितदेवर्म्मत्तमा पडुवबोलदोळगे पन्निर्व्वगर्गावुण्डुगळ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि

३७ कोट्ट मत्तर्न्नूर पन्नोन्दु पेर्गडे प्रभाकरय्यन मग **रुद्रय्य**ङ्गे दयेगेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदि-

३८ नाल्कु । **सेनबोव हब्बण्णं**गे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्प्पदिनाल्कु **भूकियर-काबण्णं**गे दये-गेय्दुम्बळि-

३९ यागि कोट्ट मत्तरेळु **कन्तियर-नाकय्य**ङ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि कोट्ट मत्तर्न्नाल्कु कम्मवरुनूरु श्रीम**द्भुवनै**-

४० **कमल्ल-शान्तिनाथ-देव**र्ग्गे सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्प्पत्तु ॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-

४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ) लम् ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् षष्टिर्व्वर्षसहस्रा-

४२ यां (णि) मि (वि) ष्ठायां जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पंक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति ३) नामके 'पेर्गडे' की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू होता है । उसके समयमें श्रीनन्दि पण्डितदेव (पं. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदार्थोंके व्याख्यान करनेमें चतुर थे, जिनकी पदवी 'परवादि-शरभ-भेरुण्ड' (पं. ६) थी । जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अट्टोपवासिगन्ति' (पं. १०), या अट्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसक्त थे । और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्तर' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं० १२) (गाँवके) १२ 'गवुण्डु' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शास्त्र लिखनेवालोंके भोजनके प्रबंधके लिये किया । इसके बाद लेखमें एक 'सेनबोव' या पटवारी सिङ्गण्ण (पं. १३), सिङ्ग (पं. १४), या सिङ्गय्य (पं. २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था । यह सिङ्ग श्रीनन्दिका पटवारी था ।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो व्यतीत शक सं. ९९८ था, की श्राही या आश्रहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था । ये खेत, एक ताम्रपत्रके अनुसार, उस आनेसेज्जेय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्लभकी छोटी बहिन कुङ्कुममहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था । श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिङ्गय्य (पं. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्तर भूमि दी । सिङ्गय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुनियोंके आहारके प्रबन्धके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितों, १२ 'गावुण्ड' लोग, और शेष सभी धार्मिक लोगोंको (पं. २५) सौंप दिया । जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा । इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं ।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गावुण्डोंको १११ मत्तर (पं. ३६); 'पेर्गडे' प्रभाकरय्यके पुत्र रुद्रय्यको १५ मत्तर; सेनबोव हब्बण्णको १५ मत्तर (पं. ३८);

मूकियर-कावण्णको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकय्यको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं. ३९); और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये। भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुदवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या उसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी।]

[इं० ए०, १८, पृ० ३५-४०, नं० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफपढ़नेमें नहीं आता। कुछ भाग पढ़ा जाता है, कुछ नहीं। परन्तु लेख सिर्फ दो पंक्तियोंका है। इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है। डा० फूहरर् (Dr, Führer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर सम्प्रदायकी तरफ़से हुआ था। शेष लेख नं० १६१ के अनुसार जानना।]

[Antiquities of Mathura, (ASI, XX), p. 53, t.]

२१२

हुम्मच-कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, सूळे बस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-**वीरसान्तर**न पिरिय-मगं **तैलह-देवं भुजबळशान्तर**नेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि माडिसिद **तीर्थद-बसदिगे बीजकन-बयलं** बिट्टन् (वे ही शापात्मक वाक्यावयव)

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य्य-चतुस्त्रिंशदतिशय-

1 "Progress Report" for 1890-91, p. 16.

विराजमानं भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सद-सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरुं सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशु-द्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त- रत्नाकररप्प श्रीमद्-**दिवाकरनन्दि-सि-द्धान्त-देवर** गुड्ड स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डनं नरवर-मुख-मण्डनं **शान्तर**-राज्याभ्युदय-कारणं कलि-युग-दोष-निवारणं **शान्तळि**-देश-कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्थं कलि-युग-पार्थं **बोम्बुर्च**-कुलोद्भव-दिवाकरं जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीनं विशद-यशो-निधानं सम्यक्त्व-वाराशियुमप्प श्रीमत्**पट्टण-स्वामि-नोकय्य-सेट्टियर्** वृत्त ॥ जिन-तत्त्व व्याप्त-चित्तं जिन-मत-तिलकं जैन-कल्पावनीजं ।

जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं जिन-समय-सरोजाकरोत्तंस-हंसम् ।
जिन-राज-स्तोत्र-माळाविळ-मुख-कमलोद्भासि **सिद्धान्त-रत्ना-** ।
कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् **पट्टण**-स्वामि सन्दम् ॥

(उत्तरमुख) गुणिगळ् सिद्धान्त-रत्नाकररमळ-चरित्रर्म्महा-योगि-वृन्दा- ।
प्रणिगळ् श्री-शान्तिनाथ-क्रम-कमळ-युगाराधकर् ब्भारती-भू- ।
षणबुद्धर् ज्ञानिगळ् देशिग-गण-तिलकर् जैन-सिद्धान्तचूडा- ।
मणिगळ् श्री-**पट्टण**-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोकनन्तार् कृतार्थर् ॥

परम-श्री-जैन-धर्म्मकृतिशय-विभव मार्प्प विद्वज्जनक्का- ।
दरदिन्दं सन्तोसं माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यमं वि- ।
स्तरदिन्दं चिन्ते-गेय्दुन्नत-गुण-युतं **पट्टण**-स्वामि नोकम् ।
बरमार् ब्भव्यर्कळ् अन्ता पुरुष-रतुनदिं **बीर-देवं** कृतार्थम् ॥

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त बडव-ज्वाळालियिं बेन्द मी- ।
कर-पाठीन-तिमिङ्गिळाळियिनतिक्षोभक्के सन्दिळ्दग- ।
स्थिरिनप्-प्राशनकेय्दे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभं- ।

गुर-वाराशियोळन्तु पोलिपुदो पेळ् सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
सिरिगावासमनेक-रत्न-निचयोत्पत्त्याश्रयं भीरु-र- ।
क्ष-रतं चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुदं पीयूष-पिण्डास्पदम् ।
वर-वेळा-वळयामृतं समतेयिं वारासि पोल्तुं मनो- ।
हर-दानत्वदिनेय्दे पोलदे वलं सम्यक्त्व-वाराशियम् ॥
पट्टण-स्वामिय मगं **मल्लं** बरेदम् ।
(पूर्वमुख) जडरुं बाळकरुं बुध-प्रकरमुं तत्त्वार्थमं कल्तघम् ।
किडे सम्यक्त्वमनेय्दि सप्त-परम-स्ता(स्था)नाप्तियं निश्चयम् ।
पडेयल् माडिदरोप्पे··········**तत्त्वार्थसूत्रक्के** क- ।
न्नडदिं वृत्तियनेल्लिगं नेगळ्पिदं **सिद्धान्त-रत्नाकरर्** ॥
कन्तु-दर्प्प-हरं जिनं तनगाप्तनाब्दनवार्य्य-वि- ।
क्रान्तनोळगलि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् **दिवाकरणन्दि-सि-** ।
द्धान्त-देवरेनल्के **पट्टण-सामिनोक्क**ने सन्नुतम् ॥
स्नानं पञ्चामृताख्यं पटु-पटह-रणं झल्लरी-शब्द-रम्यम्
पूजां पुष्पाभिरामं मळयज-पयसा लेपनं दिव्य-धूपम् ।
नित्यं कृत्वा जिनानां सकळ-जन-दया-जीव-रक्षान्न-दानम्
पोम्बुर्च्चार्हत्-प्रतिष्ठा तत्र भवति परं लोक-विद्या-विवेकः ॥
दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
पञ्चाक्षरमिदं **मन्त्र पट्टण-सामि** ते जप-विबुधम् ॥
पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
असदळमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
टिसुव तवगिल्लदोळपम् ।

पसरिप नररणम-**नोक्कंनं** पोल्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारेनिपोळ्पिन **चन्द्रकीर्ति-भ-** ।

ट्टारकरग्र-शिष्यरघ-हारिगळार्हत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळशेष-विशेष-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेम्बिनं नेगळ्दरल्ते **दिवाकरणन्दि-सूरि**गळ् ॥

वचन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळुं त्रैविद्य-देवरुमेनिसिद श्री-**दिवाकर-णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर** शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि-नाथरुर्व्वेरा- ।

सकलदोळ् परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुभ-दन्तिगळ दन्तदोळ् करम् ।

प्रकटमागे बरेदं पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद **पट्टण-स्वामिनोक्क**य्य-सेट्टियर मगम् ॥

सुन्दर-रूपदिं विनयदिन्दभिमानदिनोळ्पिनिं जना- ।

नन्द-परोपकार-गुणदिं सुजनत्वदिनोजेयिं जगद्- ।

वन्दित-कीर्ति पुण्य-निधि तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द्- ।

अन्देले वैश्य-वंश-तिलकं नेगळ्दि**न्दर**नेम् कृतार्त्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजबल-शान्तर नामसे भी ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण-स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्थद-बसदिके लिये मन्दिरके दानके रूपमें, बीजकन-बयल्का, दान किया । (शाप)

भगवदर्हत्के द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन करनेमें निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा स्वामी नोक्कय्यसेट्टि थे। उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

वीरदेव भी सफल हैं। आगेके श्लोकोंमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है। पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अवबोधार्थ कन्नडमें तत्त्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी। पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे; उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे। (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोंके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोक्कीकी प्रशंसा।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिसूरिकी प्रशंसा। उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था। उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे।

पट्टण-स्वामीनोक्कय्य-सेट्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्दरकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 57]

२१३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चबस्तिके आँगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

शक-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क्कतारं सलुत्तमिरे । तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वरं **पट्टिपोम्बुर्च्च-पुर**-वरेश्वरं महोग्र-**वंश**-ललामं **पद्मावती**-लब्धवर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

व ॥ आतनिं किरिय वासव-महीभुजङ्गं त्रैलोक्यमल्लनेनिसिदाहवमल्लदेवन मावनप्पण रेबरसन तायू साथि निम्मडिगें किरियकल्लल-देविगं पुट्टिद गोविन्दरदेव ॥

क ॥ निरवद्य-चरितनन्वय- ।
धुरन्धरं सत्यवाक्य निर्व्वैर-गण्डम् ।
परचक्र-कर्कशं ग- ।
ण्डरमूकुति गण्ड-दल्लुळं नृप-तिळकम् ॥

वृ ॥ वसुधालंकारनारोहकर मोमद कै बल्कणि म्लानुप्रा- ।
रि-समूहोत्साह-शक्ति-प्रलय-कर-करामीळ-खङ्गं यशश्श्री-
प्रसर-प्रच्छन्न-दिङ्मण्डलनधिक-बळं गङ्ग-नारायणं र- ।
कस-गङ्गं गङ्ग-चूडामणि विरूप (नृप)-तिळकं वीर-मार्त्तण्डदेव ॥

क ॥ तळिर्यं दाढुव करियम् ।
घळिलेने किडिदुगियें निज-शिरं पेचकमम् ।
कळिदुदु करि-सिरमुरमम् ।
पळिलेने तागिदुदु कदन-कण्ठीरवम ॥

आतननुजं जगद्-वि- ।
ख्यातं कोमरङ्क-मीमनन्नलुकि-देवम् ।
नीतिज्ञनधिक-तेजन- ।
राति-बळ-प्रलय-काळनाहव-भीरम् ॥

व ॥ अन्तातङ्गे कदम्ब-मयूरवर्म्मनात्मजे जाकल-देविगं पल्लल-देवङ्गम् पुट्टिद सान्तियण्णरसिगं गुडिय-दडिगेगे पट्टं गट्टि राज्यं गेय्सिदनन्वयद बलवर्म्म-देवगं पुट्टिदब्बल-देविगे सहस्रबाहु-प्रतापनु

मही-हय-वंशोद्भवनुं ज्योतिष्मती-पुरवरेश्वरनुं मध्य-देशाधिपतियुं एनिसि-**दय्यण-चन्दरसङ्गं** पुट्टिद **गावब्बरसिगं अरुमुळि-देवङ्गम्** ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियुं दिन- ।
करनुं पुट्टिर्द्दुवेम्बिनं **चट्टलेयुम्** ।
वर-वधु **कञ्चले**युं सत्- ।
पुरुषोत्तमनेनिप **राज-विद्याधर**नुम् ॥
पुट्टे तनगन्दु राज्यद ।
पट्टं कै-सार्हुदेन्दु **रक्कस-गङ्गम्** ।
निट्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।
नेट्टने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिं बळेयुत्तिर्द्द कन्या-रत्नङ्गळिर्ब्बरिं पिरिय-**चट्टल-देवियं** तोण्डे-नाडु नाल्वत्तेण्छासिरक्कधिपतियुं **कञ्ची**-नाथनुवीश्वर-वर-प्रसादनुं वृषभ-लाञ्छननुमेनिसिद **काडुवेट्टि**गे रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडि विवाहोत्सवमं माडि चट्टल-देविगे **काडव-महादेवि**-पट्टमं कट्टि सुखदि निरिसिदन् । आ-**वीर-देवङ्गं कञ्चल-देवि**येनिसियुं वेरडनेय पेसरं ताळ्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरथन तनयरन्दमन् ।
एसेदिरे पोळ्तिर्द्द **तैलनुं गोग्गिग**नुम् ।
कुसुमास्त्रनेनिसिदो**ङ्ग**- ।
वसुधेसनुमन्तु **बर्म्म**नुं तनयरवर् ॥
पुट्टलोडमात्म-गृहदोळ् ।
पुट्टिदुदैश्वर्य्यमोळ्पुमार्प्पुं कूर्प्पुम् ।

नेट्टनरि-नृपर गृहदोळ् ।
पुट्टिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमारर् सुखदिं बळेयुत्तिरे यवरोळग्रजं **तैलप-देव**-नसहायसिंहनेनिसियुं तन्न बाहा-बळमे चतुरङ्ग-बळमागे दायिगरुमनाट-विकरुमं राज्य-कण्टकरुमं निःकण्टकं माडि तन्न दोर्ब्बळ-विक्रमदि सान्तर-वट्टमनवटय्सि **भुजबळ-शान्तर**नेनिसि सुखदिं राज्यं गेय्द ॥

भुजबळ-शान्तर-नृपतिय ।
भुजबळदळवुं प्रतापमुं शौर्य्यतेयुम् ।
विजिगीषु-वृत्तियुं निज- ।
विजयमुमी-लोकदोळगे भुम्भुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज **गोविन्दर-देवम्** ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।
आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेयं ।
काव पर-नृपरनळ्करे ।
सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ् नृपरादरेल्लरम् ।
भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततियं नेलेगेट्टु पोपिनम् ।
सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-बुगे काव सद्-गुणक् ।
आवनो निन्नवोल् नेरेद मण्डलिकर् **कलि-नन्नि-शान्तर** ॥
पिरिदेत्तं मेरुगं सागरमे जगदोळा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रं करं भाविसुवडे पिरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रकमाशालिये कडुपिरिदा-मेरुगं सागरकम् ।
धरणी-चक्रकमाशालिगमेले पिरियं **शान्तरादित्य-देव** ॥

ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।
बूतुग-वेर्म्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
मातीतं चक्रि कुडल पडेदनमोघ ॥
अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
नुर्द्धरनं चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुन्नतियं ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि तनगे नन्नियॆ निज-गुणमप्प कारणदिं नन्नि-शान्तरनेम्ब पट्टमं ताळ्दि पल-कालदिं परायत्तमाद भूमियं स्वायत्तं माडि जगदेक-दानियेनिसि लोकदर्त्थि-जनक्के पिरिदनित्तु सम्यक्त्व-रत्नाकरनुं जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेल्ला-समयगळं स्व-धर्मदिं नडयिसुतुं पराङ्गना-सहोदरनेनिसि वीरदोळं वितरणदोळं धर्मदोळं शौचदोळं लोकदोळ् पेररिल्लेनिसि नडेदु बन्धु-जनमुमं स्व-देशमुमं रक्षिसि चट्टल-देवियुं कुमारर् ओड्डमरसनुं बर्म-देवनुं तामु पोम्बुर्च्चदोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थमुमं भाविसियरुमुळि-देवङ्गं गावब्बरसिगं वीरल-देविगं राजादित्य-देवङ्गं परोक्ष-विनयमं माडले-न्दुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियं माप्युवोगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ ‘श्रीविजय-देवरुम्न-त- ।
पो-विभवर् ग्गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-सं- ।
भावितरेनिसल् चट्टल- ।
देवियॆ कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनकं रक्कस-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
विनुतर् श्री-विजयर् सुशिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हृण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोल्लासि तां गोग्गि-
नन्दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥
क ॥ केरे भावि बसदि देगुलम् ।
अरवण्टगे तीर्त्थ शत्रमारवे-मोदलाग् ।
अरिकेय धर्म्मादिगळम् ।
नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चट्टल-देवि ॥
उत्तुंग-प्रासादमन् ।
उत्तर-मधुरेशनप्प गोग्गिय ताय् लो- ।
कोत्तरमेने माडिसिदळ् ।
बित्तरदिं **पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम्** ॥
देसेयागसमेम्बेरडुमन् ।
असदळमेय्दिर्द्देवेम्बिनं पोस-गेरेयम् ।
बसदियुमं माडिसि तन्न ।
एसमं शान्तरन ताय् निमिर्च्चिदळेत्त ॥
वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिगं पेरारो मुन्नमेम् ।
नोन्तवरेम्बिनं नेगर्द **चट्टल-देवि** चतुस्-समुद्र-प- ।
र्य्यन्तमनेक-विप्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-वस्त्रमम् ।
सन्ततमित्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥
व ॥ अन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलेयेनिसि चट्टल-देवियुं **नन्नि-शान्तरनु**
बोडेय-देवर गुड्डगळप्प-कारणदिं श्रीमत्-**तियङ्गुडिय निडुम्बरे-ती-**
र्त्थद रुङ्गळान्वयद सम्बन्धद **नन्दिगणा**धीश्वररेनिसिद **श्रीविजय-भ-**

द्वारकर नामोच्चारणदिं शुभ-करण-तिथि-मुहूर्त्तदलवर शिष्यर् **श्रेयांस-पण्डितरु**र्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिगुन्नतमप्पेडेयल् करुवेनिसे केसर्क्क-ल्लिक्किदरवराचार्य्यावळियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थं प्रवर्त्तिसे **गौतमर् गन(ण)धररे**ने त्रि-ज्ञानिगळप्प मुनिगळ् सले यवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद **कोण्डकुन्दाचार्य्य**रिं केलव-कालं पोगे **भद्रबाहु-स्वामि**गळिन्दित्त कलिकाल-वर्त्तनेयिं गण-भेदं पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं कलि-कालगणधररुं शास्त्र-कर्त्तुगळुमेनिसिद **समन्तभद्र-स्वामि**गळवर शिष्य-सन्तानं **शिवकोट्याचार्य्य**रवरिं **वरदत्ताचार्य्य**रवरिं **तत्त्वार्थ-सूत्रकर्त्तुगळेनिसिदार्य्य-देव**रवरिं गङ्ग-राज्यमं माडिद **सिंहनन्द्या-चार्य्य**रवरिन्दे**कसन्धि-सुमति-भट्टारक**रवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छः
स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोजोर्व्विरविरळघुर्म्माधवो माधवस्तु ।
व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी
स्याद्वादामोघ-जिह्वे मयि विशति सति मण्डपं **वादिसिंहे** ॥

व ॥ एनिसि**दकलङ्क-देव**रवरिं **वज्रणन्द्याचार्य्य**रवरिं **पूज्यपाद-स्वामि**गळवरिं **श्रीपाल-भट्टारक**रवरिं **अभिनन्दनाचार्य्य**रवरिं **कवि-परमेष्ठिस्वामि**गळवरिं **त्रैविद्यदेव**रवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तियं बरे**दनन्त-वीर्य्य भट्टारक**रवरिं **कुमारसेन-देव**रवरिं **मौनि-देव**रवरिं **विमळचन्द्र-भट्टारक**रवरशिष्यर् ॥

क ॥ आदित्यन केळदोळ् चन्- ।
द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डलदोळ् ।
वादिगळेम्बी-टुण्टुक- ।
वाडिगळेसेदपरे **वादिराजन** केळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्ग गुरुगळेनिसिद **कनकसेन-भट्टारक**वर शिष्यर् शब्दानुशासनक्के प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद **दयापाळ**देवरुं **पुष्पषेण-सिद्धान्त-देवरुम्** ॥

वृ ॥ अळ्वे दिग्-दन्ति-दन्तं बरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
बलवे सर्व्वज्ञ-कल्पं बिरुदनुळिवुदिन्नन्य-वादीन्द्रनिं चा-
वळिसल् वेडोहो पत्रं गुडदिरेदळळिर् बेन्दपं पेळ्वोडिन्निन् ।
अळ्वल्लं वादिराजं पर-मत-कुमृत् आभीळ-वाग्-वज्र-पातम् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद षट्-तर्क्क-षण्मुखनुं जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद **वादिराज-देवरं** ॥ रक्कस-गङ्ग-पेर्म्मानडिगळ चट्टल-देविय बीरदेवन नन्नि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तसुभयं श्री-**हेमसेने मुनौ**
प्रा·····चिराभियोग-विधिना नीतं परामुन्नतिम् ।
प्रायश्**श्रीविजयेश**-देव सकलं तत्त्वाधिकायां स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा·····दृक् तपः ॥
शास्त्रं बुधानामुपसेव्····
यं दातुकामं यत एव दाता ।
ततोपि हि **श्रीविजये**ति-नाम्ना
पारेण वा **पण्डित-पारिजातः** ॥

व ॥ एनिसिद **श्री-विजय**-भट्टारकरुमवर शिष्यर् **चोळ**····· **शान्तादेवर् गुणसेन-देवर् दयापाल-देवर् कमळभद्र-देवरजितसेनपण्डित-देवर् श्रेयांस-पण्डितरन्तवरायुर्ब्बी**-तिळकमेनिसिद पञ्चकूट-वसदिय **शक-वर्ष ९३९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु** प्रतिष्ठेयं माडिया-वसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

विनुतर् **श्रीविजयर्** सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळसं-।
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खड्गोल्लासि तां **गोग्गि** नन्- ।
दनना-**चट्टल-देवि**गेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहक्कं धर्म्मक्कं जन्म-भूमियेनिसिद **चट्टल-देवियुं भुजबळ-शान्तर-देवनुं नन्नि-शान्तर-देवनुं विक्रम-शान्तर-देवनुं बर्म्म-देवनुं पोम्बुर्च्चदोळ्** सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु धर्म्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्त्थमं भाविसि तमगे श्रेयो-निबन्धनार्त्थं उर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-वसदियं मार्प्पुद्योगमनेत्ति कोण्डु तामेल्लरु **मोडेयदेवर गुड्ड** गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-संघद नन्दि-गणद रुङ्गुळान्वयद **श्रीविजय-देवर** नामोच्चारणं गेय्दवर शिष्यरु **श्रेयान्स-पण्डित**रिन्दुर्व्वी-तिळक-मेनिसिद पञ्च-वसदिगे सु(शु)भ-मुहूर्तदोळाचन्द्रार्क्क-स्थायियप्पन्तुन्नत-मप्पेडेयोळ् केसर्कल्लिक्किसिदरु अवराचार्यावळियेन्तेने । श्री-**वर्द्धमान-स्वामि**गळ तीर्त्थं प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प **गौतमर् ग्गणधररेने** त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ् पलंबरुं सले अवरिं चतुरङ्गुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद **कोण्डकुन्दाचार्यरुं** श्रुतकेवळिगळेनिसिद **भद्रबाहुस्वामि**गळ् मोद-लागि पलम्बराचार्य्यर् पोदिम्बळियं **समन्तभद्र-स्वामि**गळुदयिसिदरवर-न्वयदोळ् गङ्ग-राज्यमं माडिद **सिंहनन्द्याचार्य्य**रवरिं **अकलङ्कदेव**रवरिं रायराचमल्लन गुरुगळप्प वादिराज-देवरेनिसिद **कनकसेन-देवरु**मवर-शिष्य**रोडेय-देवरुं** रूपसिद्धियं माडिद **दयापाळ-देवरुं पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरुं** षट्-तर्क-षण्मुखरुं जगदेकमल्ल-वादियुमेनिसिद **वादि-राज-देव**रवरिं **कमळभद्र-देव**रवरिम्

एकास्यः चतुराननो गणपतिर्न्नेभाननो भारती
न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽशशधरः कामान्तको नेश्वरः ।

विद्यानां परिनिष्ठित-क्षिति-तळं तन्मूळमाळम्बनम्
चित्ते तेऽजितसेन-देव विदुषां वृत्तं विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद **शब्द-चतुर्म्मुखनुं तार्किक-चक्रवर्त्तियुं वादीभसिंह-नुमेनिसिद जितसेन-देवर** सह-धर्म्मिगळु

दुरित-कुळ-प्रध्वंसं ।
स्मर-माद्यत्-कुम्भि-कुम्भदळन-मृगेन्द्रम् ।
वर-वाग्-वनिता-कान्तम् ।
धरेयोळ् नेगर्दी-**कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम्** ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवरिं वैद्य-गज-केसरियेनिसिद **श्रेयान्स-देव**-रन्तवरायुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदियना- **शक-वर्षद९९९नेय पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-बिदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु** प्रतिष्ठेयं माडिया-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कमल्लिर्द ऋषि-समुदाय-दाहार-दानक्कं पूजा-विधानक्कमागे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमाने-यरप्प श्रीमतु-**चट्टल-देवि**यरुमन्तु तम्मं नाल्वरुमिर्द्दु **कमळभद्र-देवर** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे **भुजबळशान्त-रदेवं** कोट्ट ग्रामक्कळ् (जैसाकि कहा गया है) मत्तमाततनुजं **नन्नि-शान्तर-देवं** सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हादिगारु अदर कालुहळ्लि हल्लवनहळ्लियुं बिडेयुमं कोट्ट अन्तातन तम्मं **विक्रम शान्तर**-देवं राज्यं गेयुत्तमिर्द्दु पोम्बुर्च्च-नाडोळगण हालन्दूरु कल्लूरु-नाडोळ-गण केरेगोड समीपद मडम्बळ्लियुमं कोट्टरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवक्कं देवि-देरे अडे-गर्च्चु काणिके सेसे बिर्द्दु बीय-मोदलागे कुमार-गद्याणं किरु-देरे किरु-कुलायं साम्यं सलगे मोदलागि पेरवुं तेरेगळेम्ब सर्व्व-बाधा-परिहारवं माडिदर् । (**यहाँ सीमाएँ तथा हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव आते हैं**)।

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्पादपोपजीवी (ऊपरके शिलालेख नं० २१३ में जो उपाधियाँ नन्निशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेश्वर वीरण या वीर शान्तर-देव था। उसकी प्रशंसा। उसकी रानी वीरल-महादेवी थी। उनके चार लड़के—तैल, गोग्गिक, ओड्डुग, और बम्म—थे। इनमेंसे तैलका नाम भुजबल-शान्तर, गोग्गिक या गोविन्दर-देवका नन्नि शान्तर तथा ओड्डुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ। सबसे छोटे भाईका नाम कुमार बर्म्म-देव ही रहा। इनकी माँ चट्टल-देवी (वीरल महादेवी) थी। उसके पिता राजा रक्कस-गङ्ग, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोग्गि (नन्नि-शान्तर) थे।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणों और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजबल-शान्तर-देव, नन्नि-शान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और बर्म्मदेव पोन्वुर्च्चमें थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपार्जन करनेके लिये, उन्होंने 'उर्वी तिलक' नामकी पञ्च वसदिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया। ये सब ओडेय-देवके (श्रेयांस-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे। उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चवसदिकी नींव डाली।

श्रेयान्सदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए। उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालज्ञ मुनियोंके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकेवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्द्याचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क-षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-वादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशंसासहित) हुए। और अजितसेन-देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्मुख, तार्किक-चक्रवर्त्ती वादीभसिंह हुए। तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र। इनके बाद श्रेयान्सदेव हुए।

(उक्त मितिको) पञ्चवसदिकी नींव डालकर, चट्टल-देवी और चारों आइयोंकी उपस्थितिमें, कमलभद्रदेवके पैर धोकर, भुजबल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियाँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नन्नि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियाँ दानमें दीं और वसदिके इन दानोंको (जिसकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंसे मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्वचन।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 36]

२१५

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-निर्देशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमें, मानस्तम्भके ऊपर, दक्षिणकी तरफ़]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

नमो अर्हते॥

स्वस्ति-श्री-रमणी-विनोद-भवनं यस्योद्ध(द्व)-वक्षः-स्थलम्
वाग्-देवी-वनिता-विळास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम्।
वीर-श्री-युवतेरभूत् कुळ-गृहं यद्-बाहु-दण्ड-द्वयम्
यत्कीर्त्तिश्शरदिन्दु-कान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते॥
साक्षादुग्र-कुळ-प्रभुर्निज-भुज-प्रोद्भासि-कौक्षेयक-
प्रध्वस्तीकृत-भूरि-गर्व्व-बळवद्विद्वेषि-भूपाळकः।
दीनानाथ-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्ट-प्रदम्
स श्रीमान् भुवि **नन्नि-शान्तर** इति ख्यातो भृशं भ्राजते॥
विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः मानोगतो (?) वैरि-महीपतीनाम्।

सन्तापयत्येव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोड्डग-मण्डलेशः ॥
कुमार-चूडामणिरेष भाति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्द्यः ।
श्री-जैन-पादाम्बुज-युग्म-भृङ्गः यशोऽभिवेष्टयाखिळ-भूमि-भागः॥
श्रीमद्-राक्षस-गङ्ग-मण्डलपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः
दोर्-दण्ड-द्वय-वीर्य्य-भीषित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेर्म्मानडिः ।
स्याद् यस्या जनको मतो निरुपमो विख्यात-कीर्त्ति-ध्वजः
श्रीमच्चट्टल-देवि अत्र भुवने ख्याता वरीवृत्यते ॥
दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निळये पश्यज्जानानां मनः
पुण्यं सञ्चिनुते-तरामतितरामंहो हरत्यप्यलम् ।
पूजाभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा
श्रीमत्पञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्त्या यया निर्म्मितः ॥
संसाराम्भोधिमध्यान् निरुपम-गुण-सद्-रत्न-भेदाधिवासम्
निर्व्वाण-द्वीपमार्गं प्रतियत-मनसां पण्डितानां मुनीनां ।
कृत्वा श्रीमज्जिनेन्द्रालय-विलसित-नावं व्यधाद् यक्षिणामन्-
मानस्तम्भोल्लसत्-कूबरमपि च धनान्यर्थि-सार्थाय दत्वा ॥
आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दानैर्निरन्तरैः ।
श्रीमच्चट्टल-देवीयं वाभाति भुवन-स्तुता ॥
रोहिणी चेळिनी सीता देवता च प्रभावती ।
श्रूयन्ते वार्त्तया सेयं दृश्यन्ते विमलैर्गुणैः ॥
श्रीमद्द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
यद्-वाग्-वज्राभिघातेन प्रवादि-मद-भूभृतः ।
सद्भूर्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैर् **रूपसिद्धि**र्म्महात्मना ।
कृता येन स बाभाति **दयापालो मुनीश्वरः** ॥
श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-चक्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
जातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ला सरस्वती ॥
नम्रावनीश-मौळीद्ध-माला-मणि-गणार्च्चितम् ।
यस्य पादाम्बुजं भातं भातः **श्रीविजयो** गुरुः ॥
सदसि यद**कलङ्कः** कीर्त्तने **धर्म्मकीर्त्तिः**
वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्ष**पादः** ।
इति समय-गुरूणामेकतस्संगतानाम्
प्रतिनिधिरिव देवो राजते **वादिराजः** ॥
सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
बौद्धागमाम्बुनिधि-शोषण-वाडवाग्निः ।
जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
जीयादसा**वजितसेन**-मुनीन्द्र-मुख्यः ॥
श्रेयांस-पण्डितर् ग्गत- ।
मायादि-कषायरमळ-जिन-मत-सारर् ।
न्याय-परर् स्मित-कमळ- ।
श्री-युत-द-न-कुन्द-कुन्द-कीर्त्ति-पताकर् ॥
नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नन्नि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा ओड्डुग, ब्रह्म(बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशंसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल मुनीश्वर, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशंसापूर्वक उल्लेख ।

वादिराजदेवकी प्रशंसा। अजितसेन मुनींद्रकी प्रशंसा। श्रेयांसपण्डित-की प्रशंसा।]

नोटः—इस शिलालेखमें समय (काल) का कोई निर्देश नहीं है और न किसी कार्य या दानका इसमें उल्लेख है। यह लेख शुद्ध प्रशंसात्मक है।

[EC, VIII, Nagar,tl., n° 39.]

२१६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

[तीसरी पंक्तिमें 'स्वस्ति'से लेकर १७ वीं पंक्तिमें "कूडिर्प्प-सौभाग्यमं" तक शि० ले० नं. २१४ की ११ से ३१ की पंक्तितक मिलता है।]

एनिसिद वीर-देवनग्र-तनयम्॥]
अरि-बिरुद-भूभुजर्कळ।
बिरुदं बेरिन्दे किर्त्तु वीर-श्रीयोळ्।
नेरेददटुपमातीतम्।
धरेगेने भुजबळने शान्तरान्वय-तिळकम्॥
बिरुद-रिपु-नृपर शिरमम्।
भरदिं सेण्डाडि वीर-लक्ष्मि यनोलिसल्।
नरपतिगळारो धुरदोळ्।
निरुतं निन्नन्ते **नन्नि-शान्तर**-नृपति॥
उत्तर-मधुरापीश्वरम्।
उत्तम-गुणनुग्रवंश-तिळकं विबुध-।

बनवसे १२००० के जिडुलिगे ७० का मनेवने गाँव दिलवाया। यह दान गुणभद्रके शिष्य रामसेनको किया गया था। वे मूल-संघ, सेन-गण, और पोगरिगच्छके थे।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 124]

२१८

हट्टण—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०००=१०७८ ई०]

[हट्टण (कब्बनहळिळ परगना) में, बस्तिके चन्द्रशालेमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं। श्री-पृथ्वी-वल्लभं। महाराजाधिराजम्। परमेश्वरं परम-भट्टारकम्। सत्याश्रय-कुळ-तिलकम्। चालुक्याभरणम्। श्रीमतु **भूलोकमल्ल-सोमेश्वर**.....**देवरु**। विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं-बरं सल्लिसुतमिरे॥ श्रीमतु त्रिभुवनमल्ल **एरेयङ्[ग]**-होय्सळ-देवर्गम्। **येचल-देवि**ममुदितोदितमागलु बन्द वंशावतारमेन्तेन्दडे॥ स्वस्ति श्रीमनु-महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरम्। यादव-कुलाम्बर-द्युमणि। सम्यक्त्व-चूडामणि। मलपरोळु गण्ड। कदन-प्रचण्डम्। असहाय-सूर गिरिदुर्ग-मल्ल निश्शङ्क-प्रताप भुजबळ-चक्रवर्त्ति श्री-वीर-**वल्लाळ-देवरु**। पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे। तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महा-सामन्तं **गण्डरादित्यङ्गम्** हुग्गियवे-नायकित्तिगं सु-पुत्रं कुळ-दीपकरेनिसि पुट्टिदरु सामन्त-**सुब्बय**नु सामन्त-**सातय्य**नुं सामन्त-**बूवय्य**नुं श्रीमनु-महा-सामन्त **माचय्य**न प्रतापवेन्तेन्दडे। स्वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्द-महा-सामन्त वीर-लक्ष्मी-कान्त। तुरेय रेवन्त

पर-बळ-कृतान्त । बिरद-गण्डर वदिसुव सामन्तर गण्ड । ....गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । ....पराङ्गना-पुत्रं । दायिगमुरारि विनेयोपकारि । ....वल्लभं दुष्टाश्व-मल्लं भीतर कोल्लं हडिय मार्कोळुवं दलुव बेङ्कोळुवं । **इडगूर**-देवी-लब्धवर-प्रसाद । मृगमदामोद । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होय्सळ-देव-पादाराधकम् । पर-बळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-मनो-भङ्ग । अय्यन सिङ्ग दायिग-दुट्टर गण्ड । तप्पे तप्पुव । वीरदिन्दो-प्पुव । सामन्तजगदळ । मलेय......दुळिव । मलेगे...आने । येत्तिद मोनेगे मुन्तु केट्ट काळगके पिन्तु ळट्टिद........ळम् । चतुस्समयसमुद्ध-रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेन्तेन्दडे ।

बेळुगेरेय माचेय-नायक- ।
ननुपम-गुण-रत्न **माकल-देविय** दान- ।
व्रतमेसेये चैत्य-गेहमु- ।
मनर्त्तियोळोप्पे साळ्कुमा-पट्टणदोळ् ॥

[स]रसतिगे रतिगे सीतेगे ।
सरि दोरेयेनिसिद **मारेय-नायकन** ।
सतियं धरेयं बणिसुवुदु ।
निरन्तरं नेगळ्द **बम्मियव्वेय** पेम्पम् ॥
सरणेने कायल्क वल्लम् ।
नेरेदर्त्तियोळीय-वल्लनाश्रित-जनकम् ।
पर-बळ वैरि-भूपर ।
कोल वल्लं बेळुगेरेय बल्ल**निम्मडि-बल्ल** ॥
रुगुमिणि बेळगिदरुन्धति ।

मिगिलेनिसिद सीतेयेम्ब सतियरोळॆगळ् ।
समनेनिप सतियेनिसिद ।
सति यल्लरे बल्लयनर्द्धाङ्गि **केतवे देवियकं** धरेयोळ् ॥

श्रीमतु सावन्त-**बल्लि-देव**नर्द्धाङ्गि केतवे-नायकितियरं **देकियक**-नायकितियरुमवर सुपुत्र **सुरय-देव पेरुमाळु-देव** सावन्त-**मारय्य माचि-देव**नु सुख-सङ्कता(था)-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।
नादरदिन्द भयरन्न-दान-विनोदम् ।
मेदिनियोळोप्पे माडुव ।
मासल-बम्मय्य भव्य-तिळकं धरेयोळ्
भव्य-कुळ-तिळकनोप्पुव ।
अग्रज **माणिक्य चाकि-सेट्टि**यरनुजन् ।
एरकाट्टि-सेट्टियेन्ती- ।
त्रै-पुरुषर् नेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

नर्क-व्याकरणदोळम् । वक्षाणगे वल्ल सकळ-····क्तिगळिम् ।
मिक्कदतिजाणं धर- । मनक्कतियिं नेगळ्दिर्द्द **माचि-सेट्टि**ये धन्यम् ॥
आ-माचि-सेट्टियनुजं । भाविसे श्री-जैन-धर्म्म-सुर-कुजदन्नङ्कार्
स्समनेनिसल्वकार् परि । यीव-गुणं काळि-सेट्टियोरेगं दोरेगम् ॥
कलि-काल-कल्प-वृक्षमन् । अलसदे नीं बेडु **काळि-सेट्टिय** सुतनं
नलवुं पोन्नुं वल्लम । सले यीयल्लु बल्ल मान्यना-**बम्मय्यम्** ॥
आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-कीर्त्तीशनमळ-बोधाधीसं (शं)
श्री-श्रेयांस-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सम्पदमम् ॥
नुडिदेरडु-नुडियवनल्लं । कडु··········इल्ल आश्रित-जनकन्- ।

तेडेयुडुगदीव-दान- । ञतियं कर्प्पूर-सेट्टियं बेड्डु बुदा ॥

कीर्त्ति-श्री-रमणन-वोलु ।
मूर्त्तियोळभिनव-मनोजन····नम् ।
कूर्त्तीव मसण-सेट्टिगे ।
मार्त्तण्डन मग नळ-········नृप ळवे ॥
·················मनुजर्ग्गम् ।
मरे-वोक्करनेण्दि् काव बन्धु-जनकम् ।
नेरे पोल्त कल्प-तरुवम् ।
नेरे वण्णिपुदेण्दे काचि-सेट्टियम्······॥
गणधर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विषम्
गुण-गण-नाथ गुणिपन····पेम्बिन मेरु वोन्द् ।
अगणित-चाव सल्वद् तवर्म्मने मानव-बन्धनेन्दोडिन्नू ।
एणे····**हट्टणदोळोप्पुव माणिकनन्दि-देवरोळ्** ॥

स्वस्ति **स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं** प्रवर्त्तिसे **नखरजिनालय**के बिट्ट भूमि-(यहाँ दानकी विगत आती है) आ-पट्टण-दलु नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्गे हाग देवरिगे ओडरेण्गेगे गाण १ (हमेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-संघदेसिय-गणपोस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमतु **नागचन्द्र-चान्द्रायण-देवर-शिष्य रुणि-कच्छगोण्डि-देवरु** मदवळिगे **बोप्पवे** मगळु **कावचे मल्लवे मादवे माचवे बाळचन्द्र-देवरु** । सेट्टिय हल्लिय मल्लि-सेट्टि चिक्कसेट्टि तम्म····सेट्टिगे बिट्ट भूमि जक्कसमुद्रदल्लि सलगे ५

*** रोदद हलोजन** मग **वीरोज** ई-शासनव होयिद ॥

---

* यह पंक्ति पत्थरके सिरेपर है ।

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था:—

त्रिभुवनमल्ल एरेयङ्ग-होय्सळ-देव और एचल-देवीके कुलमें उत्पन्न,— स्वस्ति । जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे;—

तत्पादपद्मोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुङ्गियब्बे नायकित्तिके सामन्त सुब्बय, सातय्य, और बूवय्य उत्पन्न हुए थे ।

महा-सामन्त माचय्यकी प्रशंसा । उसकी कुछ उपाधियाँ । माचय्यकी उत्पत्तिका वर्णन । जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचय्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लड़कों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था;— सासल बम्मय्य और उसके दो लड़कों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख । माचि-सेट्टि और उसके लड़के कालि-सेट्टि, फिर उसके लड़के बम्मय्यका वर्णन । माणिकनन्दि-देवका उल्लेख । (उक्त मिति को) नखर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोल्हू दानमें दिये गये थे ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य रुणिकच्छगोण्डिदेव थे; उनकी पत्नी बोप्पवे, बच्चे काचवे, मल्लवे, मादवे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे । कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं । रोद हलोजके पुत्र बीरोजने यह शासन लिखा ।]

[EC, XII, Tiptur tl., n° 101]

---

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है । उसके लड़के बल्लालदेवका (११०१–११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६–११३८ ई०) का ।

२१९

तट्टेकेरे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)में, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति **सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-संवत्सरद ज्येष्ठ-बहुल-चट्टि-बृहस्पतिवार** शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय····तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर कल्याण**द-नेलवीडिनोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमि....

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्त्ति-कीर्त्तिर्
इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।
कैळाश-शैल-जिन-धर्म्म-सु-रक्षणार्थम्
भागीरथी-वि·····तो द्वितीयः ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंश-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी पराक्रमाक्रान्त-**कन्याकुब्जा**धीश्वर-शिरो·····लि-मुखो पार्थिवपार्थः । समर-केलि-धनंजयो **धनञ्जयः** । तस्य वल्लभा **गान्धारि-देवी** तत्सुतो **हरिश्चन्द्रः । रोहि·····दडिग-माधवा**परनामधेयः । आगङ्गान्वयदरसुगळेल्लुवेळ्गेपाडिवदचन्द्रनन्तुदितोदितवागि पल·····ज्यं गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियुं गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद **भुज-बळ गंग-पेर्म्माडि**·····

गुणि बेळ्वर्त्ति-जनक्के दान-मणि दोर्-गर्व्वोद्धताघ्मात-निर्-घृण-वैरिप्रकरक्के बल्-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प········वेष्टित-यशं विक्रान्त-तुङ्गं नृपा- ।
भणियादं **कलि-गंग-**देवन सुतं श्री-**बर्म्म-भूपाळकम्** ॥

कन्द ॥················र्व्वि बाहा- ।
परिघदिनरि-नृपरनलेदु सेले-योळ् वोय्दुर्
व्वैरे बण्णिसलेसेदं **गं- । गर-मीमं** लोकदोळगे **भुज-बळ-....ग** ॥

····ळियेनिसिद **पेर्म्माडि-वर्म्म-देवङ्गं** पाण्ड्य-कुळोद्भवेयेनिसिद
गङ्ग-महा-देवियग्गं रत्नत्रयं पुट्टुवन्ते········

वृ ॥ श्री-**मारसिंग**-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।
कामोपमं भगीरथान्वय-रत्न-दीपम् ।
भीम-प्रतापनहिता··················· ।
सामान्यनल्लनुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनण्णुमार्प्पुं लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य········वर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं **कुवळाल-पुर**-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-लब्ध-वर-प्र·············चक्रि-ळामोदन् । असती-सहोदरं वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि·········ग-गङ्गेयं शौचाञ्जनेयं । गङ्ग-कुल-कमळ-मार्त्तण्डम् दुद्दर-गण्डम् । मन्निय-गङ्गम् जयदुत्तरंगं । श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-**गङ्ग-पेर्म्माडि-देवर्गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमं** बाय्केळिसि तदाभ्यन्तरद **मण्डलिसासिरमं** श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् इये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागा-भ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखर्दि राज्यं **गेय्युत्तिरे** ।

कन्द ॥ श्रीगे नेलेयागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-भुजार्जितविजय- ।

पट्टके **हिरियकेरे**य केळगे बिट्ट गद्देगळेय मत्तलोन्दु (आगेकी ३ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है)

[महामण्डलेश्वर भुजबल-गंग पेर्म्माडि-वर्म्मदेवने मण्डलि-तीर्थकी पट्टद् बसदिके लिये (उक्त) भूमिका दान किया और उसकी रानी गंग-महादेवी, उसका पुत्र मारसिंग-देव, उसका छोटा भाई सत्य (नन्निय) गंग, उसका छोटा भाई रक्कस-गङ्ग, उसका छोटा भाई भुजबल-गंग, उसका पुत्र मारसिंग-देव नन्निय-गङ्ग-पेर्म्माडि, इन सबने (उक्त) भूमि-दान किये।

और अपनेद्वारा शासित नाड्के गाँवोंमें पद्मावती देवीको ५ पणका उपहार दिया। यह उपहार तबतकके लिये जारी रहेगा जबतक आकाशमें सूर्य, चन्द्रमा और तारे चमकते हैं।]

[EC, VII, Shimoga tl. n° 6]

२२३

चिक्कहनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०८० ई०]

[जिन-बस्तिमें, नवरङ्ग-मण्टपके दरवाजेके ऊपर]

श्री-**कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण पुस्तक-गच्छद श्री-दिवाकरनन्दि**-सिद्धान्त-देवर ज्येष्ठ-गुरुगळप्प (भट्टार) **दामनन्दि-भट्टार** सम्बन्दि ई-**पनसोगेय चङ्गाळ्व-तीर्थद**ल्ला बसदि-गळुमब्बेय बसदियुं तोरे-नाड बेळ्विनेय बसदियुं तत्समुदाय-मुख्यम्

[कोण्डकुन्दान्वय, देशि-गण तथा पुस्तक-गच्छके, दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-देवके ज्येष्ठ गुरु—दामनन्दि भट्टारक-के अधिकारमें इस पनसोगेके चङ्गाळ्व-तीर्थकी सारी बसदियाँ (मंदिर) हैं। अब्बेय बसदि तथा तोरेनाड्की बसदि भी उनके प्रधान शिष्य-गणके अधिकार-क्षेत्रमें हैं।

आगेका शिलालेख।

[हनसोगेमें, आदीश्वर-बस्तिके दाहिनी ओरके दरवाजेके ऊपर)

नोटः—यह लेख ऊपरके ही लेख-जैसा है। उसमें कुछ फेरफार नहीं है।

[EC, IV, Yedatore tl. n° 23 and 27]

२२४

मदलापुर—कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त,—पर संभवतः लगभग १०८० ई०]

[मदलापुर (मल्लिपट्टण परगना)में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) स्वस्ति श्रीमनु····वर्य-**नल्लरस**·····**अरकेरेय** बसदि माडितु इदके····ल्वदु-गद्दे·····मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय····दोळय्-गण्डुग-मण्णु बिसवूर-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मू-गण्डुग इनितु बसदिगे सल्व-भूमि अदा-पदके **अदटरादित्य** अधिरत-पाण्डय बेळ्तु ·····**अरसर**-कालदोळ् श्रीम····मने-ग····सिवय्य···· गुड्डेय·····मण्डळ **कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टारर्** शिष्यर्···· **अमळचन्द्र-भट्टार**कर्गे·····बसदिय माडि·····सल्सिदु····· (हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

सेनबोव दे·····

[·····नल्लरसने अरकेरेकी बसदि बनाई। (उक्त) भूमिका दान उसके लिये किया। जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अदटरादित्यके क्रोधका पात्र होगा।

·····अरसके समयमें,·····रमण्डल कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस बसदिको बनवाया। हमेशाका अन्तिम श्लोक। सेनबोव दे·····]

[EC, V, Arkalgud tl. n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित प्रतिमापरसे ए. कनिंघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके नामके सिवा और कुछ नहीं बताता। इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री बीबतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी। इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलितार्थ यह निकाला है कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोंद्वारा अपने काममें लाया गया था। संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होंने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो; या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्थरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था। अस्तु, जो कुछ हो। इन खण्डित दि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है।]

[A. Cunningham, Reports, II, p. 431, a.]

२२६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

स्वस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प्प-दळन-प्रादुर्ब्भवद्-विक्रमः।
सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिप्त-दिग्-भित्तिकः
श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः॥
ओदेदु तटत्तटेम्ब पद-ताटनेयिन्दे दिशा-गजादिगळ्।
मदमुडुगिळ्दुवञ्जि पुगुविर्प्पेडे गाणने नागराजनुम्।
कदळद गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कलङ्क सागरम्।
बिदिर्दलगिन्दे तारकि कळल् तरलोड्डुगनाईडोडुगुम्॥
अदिरदे बर्प्प चप्परिप कप्परि पार्इलगोत्ति शास्त्रमम्।
बिदिर्दु मरल् मरल्चेनुते कुत्तुव कुत्तिदोडान्तु कट्टिदा-।
पददोळे सुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोरुव गेण बिन्नणक्।
ओदवुव बिन्नणं नेगळ्लोड्डुग नीनरसङ्क-गाळनै॥

परिदुदराग्नियं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्ण्णदिम् ।
मरुळ बळाळि वैद्य-मरुळं बेसगोण्डडे दन्ति मद्देनल् ।
करियने नुङ्गि सूडुकोळे वैद्य-मरुळ् नगे वीर-लक्ष्मि नो-।
डरि-हर निन्निनायितदेने **विक्रम-शान्तरनादनोड्डुगम्** ॥

अन्तेनिसिद **विक्रम-शान्तर-देवर् स्स(श)क-वर्ष १००९ नेय प्रभव-संवत्सरद शुद्ध-पाडिवदन्दु** पञ्च-त्रसदिय पूजा-विधान-जीर्ण्णोद्धरणक्कमल्लिर्प्प ऋषि-समुदायक्काहार-दानार्त्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-।
परिणति नेगर्द**जितसेन-पण्डित**रिन्दम् ।
दोरेवेत्तु देवियादी-।
पिरियतनं निन्नदल्तिदवर महत्त्वम् ॥

एनिसिद पर**वादीभसिंहा**पर-नामधेय-श्रीमत्-**अजितसेन-पण्डित-देवर** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकमा-सम्बन्धद समुदायं मुख्यमागे कोट्ट ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक आते हैं) **द्रमिळ-गणो** लसतितरां निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥
श्रीमत्-**सेनबोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि** बरेदम् ॥

[स्वस्ति। वीर-देवके पुत्र विक्रम-शान्तरकी प्रशंसा। उसका मूल नाम ओड्डुग था। उसकी प्रशंसाके श्लोक। ओड्डुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमें पूजाके लिये, मरम्मत तथा ऋषियोंके आहारके लिये, वादीभसिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोंके प्रक्षालनपूर्व्वक (उक्त) गाँवोंका दान, संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया। वे ही अन्तिम श्लोक।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है। सेनबोव शोभनय्य दिगम्बर-दासिने इसे लिखा है।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 40 (Part II).]

२२७

कोणूर (जिला बेलगाँव)—कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वां वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वाळकव्रातमं जैनान्घ्रिद्व(द्वि)नखाळियोळमधुकरव्रातं सरोजाळियं तानेंतिल्लेगे तन्दुदेन्दु बगेदळ्मुग्धत्व-दिन्दा जिनं भूनाथेशधरेश मोक्षुनिधिगंगी गायुमं श्रीयुमं ॥

स्वस्ति श्री त्रैभुवनाश्रयं पृथुधराश्रीवल्लभं शूकरन्यस्तेद्धध्वजलाञ्छनं नुतमहाराजाधिराजं यशोविस्तारं परमेश्वरांकपरमं भट्टारकं शात्रवोन्मस्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयशं चालुक्यकण्ठीरवं ॥

सत्याश्रय-कुळतिळकं सन्य युधिष्ठिरननेकविद्यानिपुणं प्रत्यक्ष**विक्रमादित्या**त्यंतयशोविळासि **त्रिभुवनमल्लं** ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवद्रिप्रभुचन्द्रसूर्य्यरुळ्ळन्नेवरं भद्रं सलुत्तमिरे रिपुविद्रावणतत्प्रियात्मजं **जयकर्ण्ण** ॥

जयकर्ण्णावनिपाळभासुरलसल्लालाटिकं श्रीवधूनयनालंकृतरूपनूर्जितयशः श्रीकामिनीवल्लभं जयकान्ताभुजदण्डनाहवगदादण्डं गुणोन्मण्डितं नयदिं कूंडिधराधिपत्यदोळिरल् **चामण्ड**दंडाधिपं ॥

स्वस्ति समधिगतपंचमहास्तुत्यविराजमानशब्द महाश्रीविस्तारं पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डळेश्वरं **सेन**नृपं ॥

वदनं निर्म्मळवाग्वधूसदनवात्मीयोरुवक्षं लसत्सदळंकाररमाविळासविळसल्लक्षं स्वदोर्दण्डवुन्मदवीरारिशिरःप्रकन्दुकहतिक्रीडोद्धदण्डं निजाभ्युदयं सर्वजनानुरागदुदयं श्री**सेन**भूपाळन ॥

इभपतिर्यंतिरे दक्षिणशुभदोर्घत्करविळासि भासुरतेजं सुभटमदकरट-विघटनविभवं **चामण्डराय**निरे निज सभेयोळ् ॥

शुभमति योगंधरनवोलभयप्रदनय्यणय्यनार्ज्जितसुयशोविभवं निजसभे-योळिरल्प्रभुमन्त्रोत्साहशक्तिगुणसंपन्नं ॥ दुष्टोग्रविनिग्रहर्दि शिष्टप्रतिपाळ-नदि निळेयनाळुत्तुं शिष्टेष्टप्रदम्नत्युत्कृष्टदे राज्यश्रीयुत्तमिरे **सेन**नृपं ॥

श्रीरमणीभासि **बळत्कारगणा**म्भोधि**कोण्डनूरो**ळ् निधिगं भूरमणी-मकुटाळंकारदि नेसेदोप्पि तोर्प्प जिनमन्दिरमं ॥ एसेदिरे माडिसि वृत्तियन सदळमेनलोसेदु बिडिसुतं निधिगं पोळिसिदनदेन्तेन्दडे निजलसदाचार्य्यान्वयोद्भवप्रक्रममं ॥

श्रीलीलोभनयाक्षि निर्म्मळदयादेहं गुणोन्मल्लिकामालाकुन्तळभासि भासुरतरश्रीजैनधर्मोद्भवं त्रैलोक्योदरवर्त्तिकीर्त्तिविळसत्स्याद्वादनामांकितं भूलोकक्के निरन्तरं सोगयिकुं श्री**मूलसंघा**न्वयं ॥

जिनसमयमेम्ब सरसिज वनदोळगलर्द्दोप्पि तोर्प्प हेमाम्बुजदन्तनुप-ममेने करमेसेवुदवनियोळ् सद्गुणगणं **बळात्कारगणं** ॥

वारिधिवेष्टिताखिळधरातळशोभितकीर्त्तितद्बळात्कारगणाम्बुजाकरवना-न्तरदल्लि मराळलीलेयिं चारुचरित्रमार्ग्गद जिनेशमुनीश्वरदुद्धपापहर्म्मा-रमदेभकुंभविलुठोत्कटशूररनेकरोप्पिदर् ॥

उदयगिरीन्द्रदोळेसेवग्धुदितोदयवागि बळेप चन्द्रन तेरदन्तुदियिसिदं कुवळयकभ्युदयकरं तद्गणाद्रियोळ्गणचन्द्रं । पक्षोपवासि देवनवक्षय-तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीळं रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानंदियप्प **नयनन्दि**बुधं ॥

आ **नयनन्दि**य शिष्यं नानाविद्याविळासनूर्जिततेजं श्रीनारीनाथ-नवोल् भूनुतना **श्रीधरार्य्य**यतिपतितिळकं । तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुन्म-

दमिथ्याकथाविमथनं मुनिपं सन्मार्गि चन्द्रकीर्त्ति वियन्मार्गद चन्द्रनन्ते कुवळयपूज्यं ॥

अतिचतुरकविचकोरप्रतति दरस्मेरनयनमींटिदपुदु दंबित कर्ण्ण-चंचुपुटदिं श्रुतिकीर्त्तिमुनीन्द्रचन्द्रवाक्चन्द्रिकेय ॥

श्रीधरदेवं सुयशःश्रीधरनधिगतसमस्तजिनपतितत्व श्रीधरनेसेदं सद्वाक्श्रीधरना चन्द्रकीर्त्तिदेवन तनयं ॥

आ मुनिमुख्यन शिष्यं श्रीमच्चारित्रचक्रि सुजनविळासं भूमिपकिरीट-ताडितकोमळनखरश्मि नेमिचन्द्रमुनीन्द्रं ॥

श्रीधरवनजद सिरियं साधिपेनेम्बन्तिरेसेव मधुपन तेरनं श्रीधरपद-सरसिजदोळ् साधिप वोलेसेदु वासुपूज्यं पोल्तं ॥

त्रैविद्यास्पदवासुपूज्यमुनिपं स्याद्वादविद्यावचःप्रावीण्यप्रविभासि-नोडनुडियल्-भव्याळिगाय्तुद्भवं नोवाय्तु प्रतिवादिगळिगे पिरिदुं भ्रान्ताय्तु मिथ्यामदोद्रीवर्गेन्तु निजैकवाक्यदिननेकान्तत्वमं तोरिदं ॥

श्रीवाणीवदनांबुजातरसमं तन्नक्किरिं पीरुतुं लावण्यांगितपःप्रकृष्टवधुवं व्यालिंगनंगेय्वुतुं जीवानन्ददयावधूवदनमं कूर्त्तोर्त्तियिं नोडुतुं त्रैविद्यास्प-दवासुपूज्यमुनिपं तानिप्पनी धात्रियोळ् ॥

बृंहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्दांहस् संहरनेसेदं संहृतकामं यशस्विमलयाळबुधं ॥

अतिचतुरकविकदम्बकनुतपद्मप्रभमुनीश राद्धान्तेशं श्रुतकीर्त्तिप्रियने-सेदं यतिप्रत्रैविद्यवासुपूज्यतनूजं ॥

श्रीरमणीभासि बळात्कारगणाम्भोजमधुपरिरिंतिरे सततं चारुतरं हिळ्ळेयरवतारं तद्गणसरोजगुणद वोलेसेगुं ॥

तत्कुल राजान्वयदोळ् सत्कविराज-प्रियावलोकनलीलोत्पल्कनका-म्बुजदन्ते बृहत् किरणं **सोरिगांक**विभु धरेगेसेदं ॥

तत्सुत रमळिनसंकळजनोत्सवकर रुचिवचनरचनाळापमोत्सर्प्यप्रभुसु-भटमरुत्सुतरा बल्लकल्लगामण्डबुधरु ॥ श्रीत्रधुगे भवतियन्ता भूविदितमे-नल्केमानकांगियनन्ता श्रीविभु**कलिदेवं** बलदेवानुजनेम्ब कीर्त्तिगास्पद-नादं ॥ अळिकुळकुन्तळे कुवळयदळलोचने चक्रवाककुचे कनकलतो-ज्वळमध्ये कनकिगामण्डल सत्तत्प्रभुमनोजसति रतियन्नळ् ॥

• वरचूतद्रुमवेषनोज्वळलतापुष्पांकुरोत्पत्तियन्तिरे तद्दंपतिगळिगे पुट्टि-दनुरुश्रीजैनधर्मोत्सवं वरभव्याळिमनोनुरागविळसद्याशीर्व्वचोविस्तरं पर-मानंदयशोधिकं निधियमं सत्पात्रदानोद्यमं ॥

श्रीधरदेवपदाब्जश्रीधरनादोळिपर्निं हृदब्जदोळीतं श्रीधरनादं नि-धिगं साधितगुरुचरणनप्पवं पडेयुदुदें ॥ तत्पुत्रर् श्रीरमणीकनत्कनक-कुण्डळ रावनिताविळाससस्मेरकटाक्षवीक्षणपरप्पुरुषोत्तम मरुद्धकीर्त्तिगळ् श्रीरम **वासुपूज्य**मुनिपादपयोरुहभृंगरोप्पुवर्चारुगुणाधरागि **कलिदेव**ल-सद्बल देवरीर्व्वरुं ॥

स्वस्ति श्रीम**च्चाळुक्यविक्रमकालद १२ नेय प्रभवसंवत्सरद** पौषकृष्णचतुर्दशीवड्डवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रभु **निधि-यमगामण्डं** तन्न मान्यदोळगे हिंडादिय होलदोळ् सर्व्वबाधापरिहारवागि कूण्डिय कोललिम्मत्तर्क्केय्युमं पन्नेरड्डु मनेयु मनोन्दु गाणमुमोन्दु तोण्टमुमं तळवृत्तियागि माडि कोट्टना देवसं श्रीमन्महाप्रधा·········ण········· णेयिं·········तज्जिनालयवन्दनार्थं बन्दु श्रीमन्महामण्डळेश्वर········· **कम्म**नृपं देवरंगभोगरंगभोगक्कं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारक्कं तन्न **सीवट-दोळ**गण त··········वणनागि माडि·········**श्रीधर-पंडितदेवर** श्रीपा-

४३ धारणजातशोभस्तस्मादजायत स **दुर्ल्लभसेनसूरिः** । सर्व्वं
श्रुतं समधिगम्य सहैव सम्यगात्मस्वरूपनिरतो भवदिद्ध-

४४ [धी]र्यः ॥ आस्थानाधिपतौ वु(बु)धा[दवि]गुणे **श्रीभोज-**
देवे नृपे सभ्येष्वंव(ब)**रसेन**पंडितशिरोरत्नादिषूद्यन्मदान् ।
योने-

४५ कान् शतशो व्यजेष्ट पटुताभीष्टोद्यमो वादिनः शास्त्रांभोनि-
धिपारगोभवदतः **श्रीशांतिषेणो** गुरुः ॥ गुरुचर-

४६ णसरोजाराधनावाप्तपुण्यप्रभवदमलवु(बु)द्धिः शुद्धरत्न-
त्रयोस्मात् । अजनि **विजयकीर्त्तिः** सूक्तरत्नाव-

४७ कीर्ण्णां ज[लधि]भुवमिवैतां यः प्रस(श)स्तिं व्यधत्त ॥
तस्मादवाप्य परमागमसारभूतं धर्मोपदेशमधिकाधिगत-

४८ प्रवो(बो)धाः । लक्ष्म्याश्च वं (बं)धुसुहृदां च समागमस्य
मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्वं ॥ प्रारव्धा (ब्धा) धर्मकां-
तारविदाहः

४९ साधु **दाहडः** । सद्विवेकश्च**[कू]केकः सूर्पटः** सुकृते पटुः ॥
तथा **देवधरः** शुद्धः धर्मकर्मधुरंधरः । चं[द्रा]लिखि-

५० तनाकश्च **महीचंद्रः** शुभार्जनात् ॥ गुणिनः क्षणनाशि-
श्रीकलादानविचक्षणाः । अन्येपि श्रावकाः केचिद-

५१ कृतें[धन]पावकाः ॥ किं च **लक्ष्मण**संज्ञोभूद **हरदे**वस्य
मातुलः । गोष्ठिको जिनभक्तश्च सर्व्वशास्त्र-

५२ विचक्षणः ॥ शृंगाग्रोल्लिखितांव(ब)रं वरसुधासांद्रद्रवापां-
डुरं सार्धं श्रीजिनमन्दिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुं-

५३ दरम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वेव(ब)रप्रांतेनो-
च्छलतेव वायुविहतेर्द्वामादिश[त्पश्य-]
५४ ताम् ॥ ० ॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजन-
संस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-
५५ रार्थं च महाराजाधिराज**श्रीविक्रमसिंहः** स्वपुण्यरासे(शे)
रप्रतिहतप्रसरं परमोपचयं चेतसि [नि] धाय
५६ गोणीं प्रति विंशोपकं गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्रं
च **महा[चक्र]**ग्रामभूमौ **रजकद्रहपू-**
५७ र्व्वदिग्भागवाटिकां वापीसमन्वितां । प्रदीपमुनिजनशरीरा-
भ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् । तच्चार्च-
५८ द्रार्कं महाराजाधिराज**श्रीविक्रमसिंहो**परोधेन । "व (ब) हु-
भिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-
५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल"मिति स्मृतिवचना-
न्निजमपि श्रेयः प्रयोजनं मन्यमानैः सकलैरपि
६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिले**खो-**
दयराजो यां प्रस(श)स्ति शुद्धधीरिमाम् । उत्कीर्ण्णवा-
६१ न् शिलाकूट**स्तीलहण**स्तां सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५
भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. आर. मैलविलीको दुबकुण्डके एक मन्दिरके भग्नावशेषमें मिला था। इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ हैं। ५४-६१ की पंक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोंमें हैं। इसको प्रशस्ति (पंक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है। इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने बनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिल्पी तिल्हण (पं. ६१) था । इस सारे लेखमें 'ब' 'व' अक्षरसे लिखा गया है ।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है—स्थापनाका उल्लेख करना है । इसकी स्थापना कुछ निजी आदमियोंने की थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४–५८) ने दिया था । इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम सं. ११४५ में, वे दुबकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे । इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते हैं: पहले विभागमें (पंक्तियाँ १०–३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोंका वर्णन है; दूसरे में (पंक्तियाँ ३२–५१) मन्दिरके संस्थापकों (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ मुनियोंका वर्णन है । प्रारम्भके छह श्लोकों (पं. १–१०) में कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थङ्करोंकी, तथा गणधर गौतम, श्रुतदेवताकी जो पंकजवासिनीके नामसे जगत्में प्रसिद्ध है, स्तुति करते हैं ।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (पं. १०–३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है:—

कच्छपघात (कछवाहा) वंशमें–

१ पांडु श्रीयुवराज (?) हुए । उनके बाद उनके लड़के—

२ अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा । उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी । उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए; और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है ।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चंदोभा था । यह चंदोभा वर्तमान दुबकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा । ३२–३९ की पंक्तियोंके श्लोकोंमें उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियों का नाम—ऋषि और दाहड

दिया हुआ है। विक्रमसिंहने उनको 'श्रेष्ठि' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़-मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे हैं। ऋषि और दाहड़ दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूकके नाती थे। जासूक जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक शहर) से निकला था।

३९-४५ की पंक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे अन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, बल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-वागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिषेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित शिरोरत्न अंबरसेन आदिके समक्ष सैकड़ों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं:—साधु दाहड़, कूकेक, सूर्पट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पंक्तिसे शुरू होनेवाला) कथन है कि महाराजाधिराज विक्रमसिंहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी ?) पर एक 'विंशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकद्रहमें कुँआसहित बगीचा भी दिया था। दिए जलानेके लिये तथा मुनिजनोंके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका; शिलालेखके शब्द हैं 'करघटिकाद्वयं') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पंक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

[F. Kielhorn; EI, II, n° XVIII. (p. 237-240).]

२२९

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्ल. १०९० ई० ? (ल्यू० राइस)।]

[कणवेमें, कल्लु-बस्तिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस.....महिमं जित-शत्रु धि.....होय्सळा..... निळेयं सम्यक्त्व-चूडामणियने नेगळदं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-पादाम्बुजमं स्मरियसुत दिवकेय्-दिदरेन्दोडे कृतार्थरिन्नार् विस्तावनि-योळु ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गनु भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्ण्ण-कुण्डलाभरणनप्प श्रीमन्महा-प्रधान **होय्सळ-देव**न भण्डारि **चन्दिमय्य**न हेण्डति **बोप्पव्वेयु** शुक्ल-संवत्सरद पौष्य-मासदल्लु सन्यासनं गेय्दु समाधि-सहित सोमवारदेरडनेय-जावदल्लु स्वर्ग्ग-प्रापितरादरु

[जिनशासनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होय्सळ-देवके खजाञ्ची चन्दिमय्यकी पत्नी बोप्पव्वेने (उक्त मितिको), संन्यसन करते हुए, समाधिपूर्व्वक 'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 198.]

२३१

बाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका;-पर संभवतः लगभग १०९० ई० का]

[बाळहोन्नूरमें, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्या**जितसेन**-महा-मुनेः ।
अग्रशिष्येण **मारेण** कृता सेयं निशीधिका ॥
अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-वार्धि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।
····त्यूर्जित-मण्डलि········र-गणे नत-गणाधीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन महामुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारके द्वारा बनवाया गया था । ये गणाधीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बढ़ानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC. VI, Koppa tl., n° 3.]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्गिरस, १०९३ ई० ? (लू० राइस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोकियब्बे बसदिय प्र············तळताळ बसदि

बळ····रं बळ्ल्चुव लतान्त-सङ्गि····दि सन्- ।
चळिसि पळञ्चि तू····रन नडिसि मेय्वगेयाद-दूसरिं ।
कळयदे निन्द कब्बुनद कग्गिद बिड्निमरक्केवेत्त क- ।
त्तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मलं **मलधारि-देवर** ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-बहुळ-सप्तमियादित्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर् समाधिविधियिं स्वर्ग्गस्थरादरु ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । श्री-मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय-गण और पुस्तक-गच्छ,—लोकियब्बे बसदिकी तलताल बसदिके मलधारि-देव थे, कठोर तपस्यासे जिनका सारा शरीर धूल-धूसरित हो रहा था, लोहेके समान बहुत समयतक जिसपर जङ्ग-सी चढ़ी हुई थी, और वल्मीक (चींटियोंकी खोदी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था । (उक्त मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने समाधिके बलसे स्वर्ग प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 199.]

२३३

हळे-बेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०१५=१०९३ ई०]

(जैन शिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड़-भग्न

[शक १०१७=१०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगने)में, बसव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति····भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्ष १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु मकर-लग्नं गुरूदयदल् श्रीमत्-सुराष्ट-गणद कल्नेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प अरसव्वे-गन्तियर् (यहाँ खत्म हो जाता है) ।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट-गणके कल्नेलेके रामचन्द्र-देवकी शिष्या अरसव्वे-गन्ति·····]

[EC, V, Arkalgud tl., n° 96.]

[देसिग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीधरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टारक थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी-देव भी था; इन सबका समुदाय इन बसदियोंका मालिक है। जो इस समुदायके अधीन नहीं हैं उन्हें यह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाळ्वने, १८ बिलस्तके दण्डेके नापसे, विक्रमादित्यकी छोड़ी हुई और तोळ्लडिकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोड़ी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमें दी; उसी नापसे बेजिरिगट्टकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मदुरनहल्लिमें दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl., n° 28]

२४२

अङ्गडि—कन्नड—ध्वस्त।

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री····ण गङ्गदासि-सेट्टि सोमर्दि····
·········धिय मुडिहिद प····क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गदास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūḍgere tl., n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालाबके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिळक चाळुक्याभरण श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न नुडिदु मत्तेल्लं गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र............सोत्तुङ्गनय्यन-सिङ्ग नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री........वेर्गडे **मने-वेर्गडे-दण्डनायकननन्तपाळय्यं गजगण्ड-अरुनूरुमं बनवासे**............**मुम सप्तार्द्ध-लक्ष्म(क्ष)यच्छ-पन्नाय**-मुमं पडेदु सुख-संकथा-विनोददिं... तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-।
पीवर-वक्ष-स्थळं लसद्गुण-मणी....।
..............................।
......सकळ-विभु (बु) ध-जनता........॥

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर............विळसित-जगद्-वळय....वनुं रण-रङ्ग-भैरवनं सकळ-सु-कवि-जन-क............ वीर-लक्ष्मी-विळासनुमनन्तपाळ-प्रसादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनुं.... ....**[गो]विन्दरसं** बनवासे-पन्निर्छासिरमुमं **मेल्पट्टय बङ्कराबुळमु**............नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-बळदिम् ।
दायाद-बळ....................।

.....न-।

जेयं रिपु-नृप-पयोज-सोमं **सोमम्** ॥

आनेग.....गळ महा....बेयोगेवबोलानत-रिपु-बोगेद..... महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळयं निज-सन्ततिगोसुगे पुट्टे रिपु..... पुट्टिदं **सोवरस** ॥....ज़मदनणिमनार्प्पेने कट्टायदे चलदोळोदविदुन्नति-नभमं.....रेम् पुट्टिदर् ॥

शरणेमगेन्नदेवुदेमगे-बेसनावुदु बुद्धियेन्नदुम् ।
बरिसि नितान्तमेरिसिद बिल्लबोलुद्धत-वृत्तिय्-ने पेण्-।
डिर् केलदोळ् केळल्दु बीरुव बिडे बीरुवधिक-वैरि-भू-।
परनातनत्तर मरुळ तण्डम नोडने **सोम**-भूमिपम् ॥
किं कल्पद्रुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरोः
किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
सम्यग्दर्शन-रेवती किमु परा **सोमाम्बिका** राजते
राज्ञी सा बनवासि-**सोम**-नृपतेर्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्य्यथा लक्ष्मीर्हिमांशोरिव दीधितिः ।
तथा तयोस्सुते जाते जिन-शासन-देवते ॥
पूर्व्वं **वीराम्बिका** जाता ततोऽजन्युदयाम्बिका ।
इति भेदं तयोर्म्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥
किं देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः
किं हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्का दधानं जने ।
निश्शेषावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।
भात्यत्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवनं ताभ्यां विनिर्म्मापितम् ॥
तोडरे तोडङ्कु मच्चरिसे गण्टल सिल्किद-गाळ वुक्के मार्-।

नुडिदडे जिह्वमं पिडिदु किळ्प तोडर्प्पिन पाशवेन्देडेन्त् ।
एडरुव (व) रेन्तु मच्चरिपरेन्तु करं कडि केय्दु दप्पम [म्] ।
नुडिदपरण्ण बार्प्पु मुळिदम्बद जूजिनोळन्य-भूभुजर् ॥
बिडदेडरे सेणसि चुन्न ।
नुडिवरी-मन्नेयर बेन्न बारं मिडियिम् ।
पेडेतले-वरम्माळ्पोत्तुव ।
कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति **जूज-कुमार** ॥
जवनेरे बच्चितेम्बिनेगमान्तरि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।
गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व बेन्न-वारनेत्- ।
तुव पिडिदच्चि मुक्कुव पसुगरिडिं बडगिन्दियादुवा- ।
हव-भुज-शौर्य्यमं···लि-बीरदनेन्दोड् इन्नार्गेर पोगळ्र् नेगळ्द
कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे····· ।
·····न्दु बिगिदु सेंगरमादन्दे ।
शिरलेय मुङ्गाल्गेणेयनि- ।
परसर् प्पोल्तपरे कु····· ॥
·····डे मोगमं तिरिपुवरिन्····दडे नगुवरन्यरम्बद जूजं
मुनि·····यं रिपु-जनकृमर्त्थि-जनकम् ॥ अनुपममे-
निसिद गुण·····वारितमेनिप दान-गुणदोळु मत्त-
वण दोरेय·····तळदोळ् ॥ आतनळिय ॥ खण्डदोळि
·····नेदु मूळेगळम्मूरि·····
·····

[जिन-शासनकी प्रशंसा। जिस समय, (चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपद्मोपजीवी मने-वेर्गडे दण्डनायक अनन्तपालय्य, गजगण्ड ६००, बनवासे १२०००, और सप्तार्द्ध-लक्ष (देश) अच्छ-पन्नायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था; तत्पादपद्मोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियों सहित) गोविन्दरस बनवासे १२००० तथा मेल्पट्टे 'वङ्क-रावुळ'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था;—उसका पुत्र (प्रशंसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी। उनकी वीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं। इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया। अम्ब जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा। उसका दामाद,··· (लेख बहुत घिसा हुआ है)।]

[EC, VII, Shikarpur tl., n° 311]

२४४

गुब्बी—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(देखो, जै० शि० सं०, प्र० भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोटः—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है। इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T. Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902–1903, पृ० ४० के उल्लेख परसे हुआ है।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई० ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है। शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था। ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामें रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T. Bloch, A S I, Annual Report 1902–1903, p. 40]

२४६

नेसर्गी (जिला बेलगाँव);—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]

बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्न-लिखित अभिलेख पुरानी कन्नड़के ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके अक्षरोंमें है:—

श्रीमूलसंधद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टा-रकदेवर गुड्ड बाडिगसात्ति-सेट्टियरु मुख्यवागि नख (ग?) रक्कळु माडिसिद नख (ग?)रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारक-देवके शिष्य या अनुयायी बाडिगसात्ति-सेट्टि जिनमें मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगों) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया।]

[IA, X, p. 189, n° 16, t. & tr.]

२४७

ऐहोले—कन्नड़—भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका २६ वाँ वर्ष; शक १०२३=११०१ ई० (फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी वेदी है। इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है। इस ध्वजस्तम्भके पादुकातलमें एक वीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है जिसपर पुरानी कर्णाटकभाषामें एक शिलालेख है। इस लेखकी नकल भाग १ Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है।

पत्थरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है । लेकिन लेखकी तीन पंक्तियां द्रष्टव्य हैं। इनमें सोमवार दिन तथा विभु संवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष अर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्लपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है । पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्त्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनों तरफ यक्षिणियाँ चँवर ढोर रही हैं । पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिमें नहीं आता है; लेकिन उसमें अय्यावोळे (ऐहोले) के पाँचसौ महाजनोंद्वारा दिये गये दानका उल्लेख है ।]

[ई० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसालेमें, दक्षिणकी ओर, बस्तिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाजाराधिराजं परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सल्लुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर **पट्टि-पोम्बुर्च्चपुर**-वरेश्वरम्महोग्र-**वंश**ललामं **पद्मावती**-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळा-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न **शान्तर-कुल**-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतंग-दीपाङ्कुरं **तोण्ड-मण्डळिक**-कुळाचळ-वज्रदण्डं बिरुद-मेरुण्डं **कन्दुकाचार्य्य मन्दर**-धैर्य्यं कीर्ति-नारायणं शौर्य्य-पारायणं जिन-पादाराधकं परबळ-

षण्मुख' था ऐसे जगदेकमल्ल वादिराज-देव हुए। उनके बाद ओडेय-देव, उनके बाद श्रेयांस-पण्डित, और उनके बाद परचक्रविजेता अजितसेन-मुनीन्द्र हुए। अद्वितीय कुमारसेन व्रतिप निर्विवाद रूपसे आधुनिक गणधर रूपमें प्रसिद्ध थे।

तार्किक-चक्रवर्त्ती अजितसेन-पण्डित-देवके एक गृहस्थशिष्य राजा तैलुग थे। उनकी प्रशंसा। उनका लघु भ्राता गोविन्द था। उनसे छोटा भाई बोप्पुग था।

इन राजाओंने (तैलुग, गोविन्द, बोप्पुगने) मिलकर, (उक्त मिति को) चन्द्रग्रहणके समय, बसदिकी स्थापना की, और उसकी मरम्मत, ऋषिवर्गके आहार, तथा देवकी अष्टविध पूजाके लिये (उक्त) दान दिये। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., n° 192]

२४९

दावनगेरे—(मैसूर) कन्नड़

[वि० चा० का ३३ वाँ वर्ष=११०८ ई०]

निम्नलिखित श्लोक मूल लेखकी २१ वीं पंक्ति है:—

कोगळि-नाडोळ्गद **कदम्ब-दिसाय**रदागरङ्गळोळ्
देगुलकं जिना(य)लयकवारवेगं केरे बावि सत्रकम्।
रागदे तन्न पन्नयद सुङ्कदोळं दशवन्नवित्तनि-
न्तागरमुळ्ळिनं नेगळ्द (ळ्द) **बम्मरसं** गुण-रत्नदागरम्॥

अनुवाद:—"कदम्बोंके सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि स्थानोंमें अग्रगण्य कोगळि-देशमें, प्रसिद्ध बम्मरसने,—एक जैनमन्दिर, एक जिनकी वेदी, एक बगीचे, एक तालाब, एक कुआँ (वापी) तथा एक दानशाला (सत्रक) के लिए,—'पन्नय'की,—तबतकके लिये जबतक कि वह कर जारी रहे,—अपनी तमाम चुङ्गीपर 'दशवन्न'[1] खुशीसे दिये।"

[IA, XXX, p. 107, t. & tr.].

---

१ 'दशवन्न'से मतलब आधुनिक 'दसवन्द' या 'दशवन्द'से है, जिसका अर्थ मि० राइसने यह किया है कि "जो व्यक्ति किसी तालाबकी मरम्मत या उसका

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फ्लीट) ।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमें जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है । प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है । इसके दोनों कोनोंमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्त्ति) है । लेख १½ इञ्च ऊँची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है । यह कोल्हापुरके शिलाहारोंमेंसे बल्लाल और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है ।]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्ति-यर गुड्ड बम्मगावुण्डं माडिसिद बसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं बल्लाळ-देवनुं गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानक्के बिट्ट कम्मविन्नूरक्कं अरुगयि मने.....

[स्वस्ति । श्रीमन्महामण्डलेश्वर बल्लालदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (भेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) बम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित बसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एवं छः हाथ या ३ गज़का एक भवन दानमें दिया ।]

[IA, XII, p. 102, n° 6, t. & tr.]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमें दी जाती थी; इसके सिवाय उस तालाबसे फायदा उठानेवालोंसे तालाबके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था । इसीका नाम 'दशबन्ध' था ।

२५१

हेब्बण्डे—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेब्बण्डेमें, तालाबके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम····॥

·····चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्लदेवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग (४ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) विष्णुवर्द्धन-म·····एनिसि केतवेग्गडे (६ पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) श्री-**शुभचन्द्र-देव**·····

·····तुण्डरुं वादि-कोळाहळ·····ख-समय-रक्षण-पक्षपाति

·····एनिसिद **कनक**····**त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर** शिष्यरप्प **मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्डि **केतव्वे**·····**बिट्टि-देवनुं भुजबळ-गंग-पेर्म्माडियुं बम्म-गावुण्डनु नाळ्-प्रभु चालुक्य-विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फाल्गुन-मासद शुद्ध-पञ्चमी बृहवारदन्दु**···मुख्य-स्थानवागि···चन्द्रशेखर-वेग्गडे कट्टिसिद केरेय केळगे गळ्दे कम्म मूवोत्तु आ-केरेय तेङ्कण-कोडियल्लु बेदले मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत् **कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर** गुडं **सेनबोव-बोग-देवन** बरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था। (इस स्थानपर होय्सलोंके विवरण हैं, जो कि बहुत घिस गये हैं ।) शुभचन्द्र-देव (से परम्परागत आये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा।

बिट्टिदेव, भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि, बम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ्-प्रभुने, चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमें, जो कि विकृत वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलकी चक्कीके साथ, (उक्त) भूमिका दान किया। हमेशाके अन्तिम श्लोक। यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिष्य, सेनबोव बोग-देवके द्वारा रचा गया।]

[EC, VII, Shimoga tl., n° 89]

२५२

महोबा*—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवतः जयवर्म्मदेवके कालका होना चहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ़ ४ साल बाद, सं० ११७३ में शासन कर रहा था।

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 73, a]

२५३

आलहळ्ळि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११२ ई०]

[आलहळ्ळि (होळलूर परगना)में, तलवारके खेतमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ॥
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारम्बरं सलुत्त-मिरे **कल्याणपुर**द-नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि।

---

* महोबाके ये (नं० २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५) अतिसंक्षिप्त शिलालेख ए. °कनिंघमको भग्न जैन मूर्त्तियोंके चरण-पाषाणपर मिले थे। इनमेंके कुछ शिलालेख बहुत कामके हैं, क्योंकि उनमें जिस समय मूर्त्तिका निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उसका काल तथा उस समय शासन करनेवाले राजाका नाम, ये दोनों चीजें दी हुई हैं। कुछमें शासक-राजा का नाम नहीं मिलता, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता।

स्वस्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूषणनब्धि-परीत-भूतळ- ।
प्रस्तुत-कीर्त्ति भावभव-मूर्त्तिं जया-वनिता-प्रपूर्ण्ण-वृ- ।
त्त-स्तन-हार···वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
भ्यस्त-कळागम-ज्ञनेने **गङ्गरसं** सरसं धरित्रियोळ् ॥
विनयाधारमुदारमुन्नति कुलङ्····श्वर्यमेम्ब् ।
इनितुं शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतुं धात्री-तळं कूर्तु-की- ।
र्त्तने-गेय्युं जयदुत्तरंगननशेष-श्री····वर्द्ध-प्रसं- ।
गन्·····वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द **नीतिवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराज परमेश्वरं **कुवळाळपुर**वराधीश्वरं **नन्दगिरि**-नाथं सकळ-गुण-सनाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनं परिपूर्णीकृत-विबुध-जन-मनोवाञ्छनं **पद्मावती-लब्ध**-वरप्रसादम् मृगमदामोदम् गङ्गकुळ-कुवळय-शरच्चन्द्रं मण्डळिक···द्रं दर्प्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल **भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देवर** पट्टमहादेवी ॥

पुट्टिद···अनुजं । **पट्टिग-देवङ्ग गङ्गवाडि**गे तळेदळ् ।
पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
परिवार-सुरभिगन्तर्- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे **गङ्ग-मादेवि**गे नायकि ।
यरनद्····ओडं सति । दोरे·····नृप·····पडेये ॥
अन्तवर्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । **गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोग्गि-नृपं ।**
तुङ्ग-यशनेनिसिदं **कलियु । अङ्ग-नृपं** नेगर्दरेळेगे कुमाराग्रणिगळ् ॥
कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-सुतर्म्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनरारि-भू-
पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डाळर्नेगर्दर् स्समस्त-सु-भटाग्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द्दग ङ्ग-पेर्म्माडि-देवरुं **गङ्ग-महादेवि**यरुं कुमार-वर्ग्गमुं मण्डळि-सासिरदोळ्ग**णेडेहळ्ळि**य वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरला-महा-मण्डलेश्वरनर्द्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

श्री-वधु जय-वधु कीर्त्ति-। श्री-वधु वाग्वधुवेनिप्प वधु **गङ्ग-नृपङ्ग** ।
ई-वधुवेनिसिद **बाचल-देवि**योळेगेयेन् बेनुळिंद नृप-वनितेयरम् ॥
ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-।भू-चक्रद सतियरेन्नलादडवेनो ।
बाचल-देविगे समन्‌····।-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥
काम-मदेभ-गामिनिगे····नमे पूज्यमेनिप्प पेम्पिनिन्द् ।
ईव····मं तणुपि कल्प-कुजक्केणे·····।
द्····र-दान-गुण-भूषणे दान-विनोदे दान-चिन्-।
तामणि दान-कल्प-लतेयेम्बिदु **बाचल-देवि**गोप्पदे ॥
एरगदराति-भूभुजरनाजियोळञ्जिसि····निजाङ्घ्रिगळ्ग् ।
एरगिसुतिर्प्प दर्प्पद पोड·····गण्डनप्प त-।
न्नेरेयन·····तनगे गङ्ग-महीभुजनं विलासदिन्द् ।
एरगिसि···भाग्य-भरदुन्नति **बाचल-देवि**गोप्पुगुम् ॥
अन्तुमल्लदे ॥

अरि-विरुद-पात्र-जगदळ । धरेगेल्लं नीने राय जगदळे नानी-।
धरेगेल्लमेन्दु पिरिदा-। दरदिन्द·····सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
कुडे राय जगदळे-पेसर-। वडेद·····डेय कडेय बडवुगळीयल् ।
पडेदळ् रायरोळप्पं कुडे **बाचल-देवि** पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥
मत्तम् ॥

·····मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।
वेडदे नोडिरे नेगळ्द **बाचल-देवि**य कीर्त्ति·····।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् तणिविल्लदे मत्तविन्नु····।
·····बीर···पात्र·····मेले पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फळ-भोग-भागिनि ललित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजबळ-गंग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत-निर्म्मळ-यशो-विभासिनि···स्थान-पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-मान-परिखण्डने । अनवरत-दान-जनित-विबुध-जन-हर्षे । देवा····न····स····तर्षे····। चतुर-विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-बिरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्धो-दक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिळ-कुळ-पाळिका-गीयमान-वि-शद-यशो-गीति····स्थान····जिन-शासन-साम्राज्य-यशर्-पताके । परोप-कार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सची-देवि श्रीमद्-**बाचल-देवियर् बण्णिकेरे**य त्रिभोगाभ्यन्तर-सिद्धियिन्द सुखदिनिरप्प ।

जन-नुते **बाचल-देविय**···।
जननिगे सरि दोरे समानमेनल्के केळ।
वनियोळ् पडवळति···।
जननिय·····जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म्म-। क्कोडलु विशेष-व्रतक्किवेने नेगळ्द जसं ।
बडेदडव्····मतिगे ।·····वसुधा-तळदोळ् ॥

आ-महानुभावेयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्गं । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता··· ।
·····प्रभ- । वेने नेगर्द **बाहुबलि** धरा-मण्डलदोळ् ।
एळेयं मूरडियं कोट्ट । अळिपदनब्जो····· ।
·····दिन्द् । इळिसिदपं नम्म बाहु-बलिया-बलियम् ॥

चोलके अधीनस्थ अन्य तमाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर माँगनेको कहा। उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गाजलूरु और गौडुमेरीके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और तिन्त्रिणिक-गच्छके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमें, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेपरोळ्गण्डाद्यनेकनामावलीसमलंकृतरप्प श्रीमद्भुजबल **वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्सल-देवरु गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिर कोङ्गोळगागि** एकच्छत्रछयेयिं **तलेकाडलु** कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे।

श्रीमत्स्वामि**समन्तभद्र**मुनिपो **देवाकलङ्क**स्तुतः
श्री**पूज्यादि**रुदात्तवृत्तनिलयो श्री-**वादिराजा**म्बुधौ।
आचार्यो **द्रविडान्वयो** जिनमुनिश्श्री**मल्लिषेण**-व्रती
श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्सोऽ**नन्तवीर्य**क्रमः॥
जिननिष्ट-दैवमजितं। मुनिपति गुरु पोय्सळेशनाळ्दनेनल् सद्
विनुतं माडिसिदं श्री-। जिनगृहमं पुणस-राज-दण्डाधीशं॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधांशु विरोधि-बलान्तकं महा-
मात्य-कुलोद्भवं सकळशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
कत्रयवार्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म**-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-
रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-वल्लभे तत्तनूभवर् ॥
चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्त्रिमुख्यविद्-
रावणनातनिं किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा- ।
पावृत-बोधनातननुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
ज्ञावनतान्य-मन्त्रि-निचयं कविताग़ुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वाचक-चक्रवर्त्तिगेन्-
तेणिसलोडं पोगर्त्ते तनगागिरे पुट्टिद **चामराज** ना-
कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोप्पिदं ।
पुणिसम-दण्डनाथनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
अवरोळगे पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकब्बेगं चौण्डलेगं ।
भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर् प्] **पुणिस**मय्यनुं बिट्टिगनुं
कोळनेन्तम्भोजमुणमल् नलिदु महिमे-वेत्तिप्पुवन्तागळु श्री- ।
निळयं विख्यातवृत्तं **पुणि**सेगनवनिं बिट्टिगं पुट्टे मित्रर्ग्-
गळिगेल्लं सप्प्....उद्भविसितखिळ-भव्य-व्रजं नाडेयुं निश्-
चळ-चेतोजातरादर्द्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामात्य-गोत्रम् ॥
चावङ्गं सत्प्रियर्दि । भावकियेनिपरसिकब्बेगं सुतनोगेदं ।
केवळमे नेगर्द पोय्सल- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं** ॥
तोदवनदिर्प्पि **कोङ्ग**रनडङ्गिसि **पोलुवरं** पोरळिच मा- ।
णदे **मलेयाळ**रम्मडिपि **काळ**-नृपालन तोळ विक्रमम् ।
बेदर्रिसि पोकु नील-सिळेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[...] मा-

डिद विभु **बिट्टि-देवन** महा-सचिवं **पुणिसं** बळाधिकम् ॥
अदटिं पोय्सळ-भूपनोर्म्मे बेस····नीळाद्रियं कोण्डु तन्- ।
ओदविन्दं मलेयाळरं कदनदोळ् बेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
भ्युदयं कैकोळे **केरळा**धिपतियागिर्दैम् बयल्-नाडनं ।
पदपिं काणिसि कोण्डनिन्तु **पुणिस**-श्री-दण्डनाथाधिप ॥
केट्ट नियोगि बिट्टु मोदलिल्लिदे बन्द कृतीवलं मोदल् ।
गेट्ट किरातनोलगिसलारदे सेवकनागे गेट्टुदम् ।
कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिसुतिर्प्प पेम्पोडम्-
बट्टिरे दण्डनाथ-**पुणिसं** नेगळ्दं भुवनान्तराळदोळ् ॥
दरमिर····लीयदे गं- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
सिरद बसदिगळनाळङ्करिसिदपं **पुणिस**-राज-दण्डाधीशम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **सक-वरुष १०३९ नेय दुर्म्मुखी-संवत्सरद ज्येष्ठबहुळ १ व** मूलार्क्कवारदन्दु तुलारासिय बृहस्पति-लग्नदलु एण्णे-नाड अरकोत्तारदलु श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायक**पुणिस**मय्य माडिसिद त्रिकूटद-बसदियोळगागि बसदिगळगे बिट्ट गद्दे आ-ऊर हड्डुवलु अण्ण-मारेय-गोरेय केळगे·····खण्डुग हट्टके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण हेग्गेरेय कीळेरियलु गद्दे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० बेद्दले····· हरदरि खण्डुग एरडके ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्कि-कोळग धर्म्म-गोळ दान-गोळग कळदु·····गुळि ओन्दु होर्रे गाण-दलोम्मान एण्णे तोण्टद गुळि १०० आ-ऊर बडगण कोडेयनहळ्ळि सहित·····**पुणिस**-जिनालयके धारा-पूर्व्वक माडि बिट्ट दत्ति (रीतिके अनुसार अन्तिम श्लोक)

बसदिगे बिट्टी-धर्म्मम- । न् ओसेदु करं सल्सिदिर्द्दडं····।
·····।····ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति । इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन बिट्टिग-होय्सलदेव कोङ्गु तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोळाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे ।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्रविड़ान्वयके मल्लिषेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है) । पुणस-राज-दण्डाधीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोय्सळ राजा उनका शासकथा । उन्होंने एक जिनमन्दिर बनवाया । पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी । उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे । उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे । वे रत्नत्रयमूर्तिके समान थे । उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियों अरसिकब्बे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और बिट्टिग उत्पन्न हुए । चावन और अरसिकब्बेका पुत्र पोय्सळ राजाका सान्धि-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ । बिट्टिदेवका महा-सचिव पुणिस था । बिट्टिदेवने तोद लोगोंको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोंको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोंको कत्ल कर डाला, मळेपाळ लोगोंको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्वायत्त कर दिया । पुणिस-दण्डनाथाधिपने एकवार पोय्सल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाद्रिपर कब्जा कर लिया और मळेयाल लोगोंका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानमें आ गया । जो व्यापारी बिगड़ गये थे, जिन किसानोंके पास बोनेके लिए बीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोंके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नौकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो-जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालन-पोषणमें मदद की । विना किसी भय-सञ्चारके, गङ्गोंकी ही तरह, उसने गङ्गवाडि ९६००० की बसदियोंको शोभासे सजित किया ।

पुण्णे-नाड्के अरकोट्टारमें अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदिकी बसदियोंके लिये उसने भू-दान किया ।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड़

[वर्ष हेमलम्बी [१११७ ई० ? (लू० राइस)]

(इस लेखकी पहली १४ पंक्तियाँ इसी नामके तालुकेके ३८० वें लेखकी पंक्तियोंसे मिलती हैं)

............**पुष्पसेन**-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु **वासुपूज्य-देवरु** **हेमलम्बि**-संवत्सरद वैशाख-बहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-समाधि-मरणदिं मुडिपि स्वर्गके सन्दरु मंगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गळान्वयकी प्रशंसा । पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे ।]

[EC, V, Hasan tl., n° 131.]

२६६

हळेबीड—संस्कृत कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins. Translated' में नं० ११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद[1] दिया हुआ है]

[लेखमें सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है। पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है।]

[Mysore ins. translated, n° 117, tr.]

---

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११७ ई०]

[निदिगि (बिदरे परगना)में, दोड्डमने नविलप्प-गौडके खेतमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवन-मल्लदेवर** विजय-राज्यमु····त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप्प·····तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रन् ।
गात्त-जयं जयं जिनमतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-**दडिग-माधव**-भूभुजराळदर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे म····मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेर्वोळेयिप्प····कोङ्गु म- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-**गङ्गवाडि**-तोम् ।
बत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुटु **गङ्गरुज्जुगम्** ॥

····गंगनिं भय- । मिल्लद **हरिवर्म्म विष्णु-नृप**निं निजदिं ।
बल्ले **तडङ्गाल्-माधव**- । नल्लिं बळि **चुर्च्चुवाय्द-गङ्ग**-नृपाळं ॥
श्रीपुरुषं शिवमारं । भूपाळ कृतान्त भूपना-**सयिगोट्टम्** ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प **विजयादित्यम्** ॥

म-येरिद **मारसिङ्ग**ना- । **कुरुळ-राजिगं** पेसर्वेत्ता- ।
मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरियमगं **सत्यवाक्य**नचळितसौर्य्यम् ॥
गर्व्वद-गं····वसुधेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि **गुत्तियगङ्ग**म
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि **राचमल**-भू-नृप-तिलकम् ॥
तेङ्ग मु····हसिय कौ- । वुङ्ग पिडिदडसि कीळ्वना-मद-करियं
पिङ्गद निलिसुव साहस- । तुंगं केवळमे नेगळ्द **रक्कस-गङ्गम्** ॥
इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरोळा-दडिगन मगं **चुच्चुवाय्द-गङ्ग**
नातन सुतं **दुर्व्विनीत**नातन तनेयं **श्रीविक्रम**नातन पुत्रं **भूविक्रमं** ।
तत्सूनु **श्रीपुरुष-महाराज**म् । तत्-तनेयं **सिवमार-देव**म् । तत्-तनू-
भव**नेरेय**····तत्पुत्रं **बूतुगवेर्म्माडि** । तदात्मजं **मरुळ-देवं** । तदनुज
गुत्तिय-गङ्गनातन मर्म्मं **मारसिंग-देव**नातन···गं क····ग-
देवनातनमगं **बर्म्म-देव**निन्तु गंग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-संधरणः ।
श्री-मूलसंघ-नाथो नाम्ना श्री-**सिंहनन्दि**-मुनिः ॥
श्री-मूलसंघ-वियदभृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल- । लामं **क्राणूरग्गणं** जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ मालिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी-निकायः
समजनि जिनधर्म्मो निर्म्मलो बाळचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्म्माम्बर-हिमकरनुद्यत्-तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

सूरस्थ-गण-गीर्व्वाण-मार्ग्गमालम्बतेऽधुना ।
दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं **पल्ल-पण्डित**-चन्द्रमाः ॥
दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्न्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।
भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः **पल्लपण्डित**मुनिर्हततन्द्रः ॥
नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो
जीर्ण्णेनाभिनवेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्ल्लक्षितः ।
शुम्भद्भूरिगुणालयो मतिमतां अग्रेसरो राजते
देशेऽस्मिन्**न्नभिमानदानिक**मुनिस्सर्वार्थ-चिन्तामणिः ॥
विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।
दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥

(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-धीतो
धीमानशेषजनता-मनसोऽभिरामः ।
जातोऽभिमानि-पद-पूर्व्वक-दानि-नाम्ना
ख्यातः खलीकृत-महा-कलि-काल-दोषः ॥
साभिमाने जनेऽभीष्टमभिमानमखण्डयन्
जातोऽ**भिमानदानी**ह यथार्थः **पल्लपण्डितः** ॥

अतिसयमागे दानदोळे बेर्व्वेरिदोळ्पुनयोक्तियेम्ब सन्-
मतियोळे पुट्टि शास्त्रदोळे दाक्षुडिवोगि विशेषमप्प सन्-
नुत-गुणदोळियिन्दे मडलागि दिगन्तमनेय्दे **पल्ल-पण्-**
डितर विलास-कीर्त्ति-लते पर्व्विदुदुर्व्विगे चोद्यमप्पिनम् ॥
सुर-करिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तियं पुदुङ्गोळिसुत्तं ।
शरदमळचन्द्रबिम्बद । दोरेगे मिगिल् **पाल्यकीर्त्ति देव**रकीर्त्ति ॥
दानमपरिमितमोळपभि- । मानं सत्कविते शास्त्रनिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतियोळ् ॥
वननिधि-वेष्टित-धात्रियो-। ळनवरतं नेरेद दीन-जनरिगेल्लम् ।
धन-कनकं माळ्परस्सन्-। मनदिन्दं पाल्यकीर्त्ति-पण्डित-देवर् ॥
ए-योगळवुदण्ण विमुध-ज-। नावळिगं बेडिदर्थि-जनकम्निचन् ।
देवतरु कुडुव तेरदन्-। तीवर्स्सले पल्लपण्डितर् ववसुमतियोळ् ॥
(पश्चिममुख) पुडवियोळगळलेगळद दानिगळिन्निवरन्नरारो पेळ् ।
नुडियदिरारुमं मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनके सन्तोसं-
बडे कुडुतिर्प्प पेम्पिनळवचारिपार्प्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग होय्सळ-देवरु** सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपिजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-घरट्ट पिरिय-दण्ड-नायक **गङ्ग-राज तलेकाडं** कोळुवळि मुन्नोळ बेडि-कोण्डु गेल्दडे मेच्चिदेम् बेडिकोळ्केने श्री-**विण्डिगनविलेयतीर्त्थक्के** तळ-वित्तियम्बेडे श्री**विष्णुवर्धन-होय्सळ-देवरु** कारुण्यं गेय्दु कोडे कोण्डु **शक-वरिस *१०४६ विलम्बि सम्वत्**-सरद श्री**मूलसंघद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकम्माडि बिट्ट दत्ति पिरिय-केरेय तुबिन बडगण हळदिं तेङ्कळ् कौङ्गिन तोण्ट ओळगागि बिट्ट गद्दे सलिगे मूवत्तु हळियमुन्दण लक्क-समु............म्म गद्दमुं अन्दूर-कि [रि] यकेरेयुं पक्षोपवासि........ बसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्म्ममनळिदव गङ्गेय तडिय हदिनेण्टु-सासिर कविले कोन्द दोसदलु होद ॥

---

१ लेकिन शक १०४६=क्रोधि; विलम्बि=१०४० ।

[जिनशासनकी समृद्धि-कामना । अनन्तवीर्य सूरस्थगणमें उत्पन्न हुए। उनके शिष्य बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके शिष्य कल्नेलेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके शिष्य हेमनन्दि मुनि । इनके शिष्योंमें एक विनयनन्दि नामक यति थे जिनके विषयमें नाड्-देशमें यह प्रवाद फैला कि वे शहरोंमें आर्यिकाओंके पास जाते हैं; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था । विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षी हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा वर्तन करते थे वैसा ही बर्ताव स्त्री-समुदायसे करते थे । उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'अक्रम वीर्य' कहलाता था । उसका छोटा भाई पल्लु-पण्डित था । जैसे पूर्वकालमें पाल्यकीर्ति व्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसे ही दान देनेमें वह प्रसिद्ध था । आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'अभिमानदानी' और 'पाल्यकीर्तिदेव' दिये गये हैं ।

जिस समय वीर-गङ्ग-होय्सल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तलेकाडुपर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने चिण्डिगन जिलेके लिये भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवने उसको वह दिया । गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी । शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देसिग-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दान्वयके थे । शाप ।

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 19]

२७०, २७१

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[क्रमशः शक १०४१=१११९ ई० और

शक १०४२=११२० ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२७२

बङ्कापुर—कन्नड़

[वि० चा० का ४५ वाँ वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [पलीट] ।

[बायें हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली ३७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो मादिगवुण्ड और दूसरे गौंव-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत् संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, किरिय बङ्कापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[IA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-वस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुळहळि-जकवे हट्टिदेडे **गे**····**न्ति मत्तवूरद** बसदि तपसु माडि सिद्धियादळु **अब्बेय माजकन** मग **मारे[य]** कल्ल निल्लिसिद

[मरुळहळळिके जकव्वेके द्वारा प्रेषित गे·····न्तिने मत्तवूरकी बसदिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अब्बेय माजकके पुत्र मारेयने यह पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalūr tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकेरी परगना), लक्कम्म मन्दिरके सामने पड़े हुए पाषाणपर]

.....

.....।

·····कल्पवृक्ष-सदृशं कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री·····पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोळ्गण्ड श्रीमत्रिभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजबल........वर्द्धन पोय्सळ-देवरु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे............व ।

जिननिष्टदेय्वमजितं । मुनिपति गुरु पोय्सळेश............
एचले तायेनेल्केनेसे-। दनो तां जक्कि-सेट्टि यात्रेय-गोत्रपवित्र ।
........नेगळद जक्कि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।
श्रीमद्द्राविडसंघ...............वळि-लीलेयिम् ।
श्रीमत्स्वामि-समन्तभद्ररवरिं भट्टाकलङ्काख्य.... ।
................हेमसेनरवरिं श्रीवादिराजाङ्करन्त्
आमाहात्म्यविशिष्टरिन्दजितसेन............ ॥
....परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहरर्म्मल्लिषेण-मलधारि...।
....................ॾ् । ब्भूपालस्तुत्यरेसेदरवनीतळदोळ् ।

धनदोळ् धनदं वि.... ।
साहसदिं चारुदत्तं चागदोळे जीमूतं जक्कि-सेट्टि........ ।
.......दानि विद्वज्-। जनविनुतं धर्म्मजलधिवर्द्धितचन्द्रम् ।
मनु-नीति-मार्ग्ग.... । ....जक्कि-सेट्टि गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तप्प जक्कि-सेट्टि तम्मूर मुकु............माडिसियदक्के बिट्ट दत्ति आवूर यीसान्यद केरेयं कट्टिसि......केरेयुं बसदियिं बडगलु बेद्दले बेदे खण्डुग एरडु मत्त.........वायान्यद किरुकेरे सहितवागियुं आ-ऊर देव-गोळग धर्म्म होरे-तिप्पे-सुङ्क गाणदलरवानेण्णे इन्तिवुम शक-वर्ष............संवत्सरद ज्येष्ठ शु० १२ बड्डवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

बसदि·····करणकवाहारदानकं दयापाल-देवर्गे धारापूर्व्वकं·····
(सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हत्पा·····।

·····तन्नार्प्पिनिं।
मनमं तन्न वसके तन्दु बळियं सत्-क्षान्तियं····न्।
अनेक-पुष्प-वरिष-प्रभावदिं भावदिं·····।
·····॥
····सुर-दुन्दुभिगळेसेये सूर-गणिकेय·····पोगळ्विनेगं॥
जक्कि-सेट्टिय तम्मं·····

[जिनशासनकी प्रशंसा। जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोय्सळदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे:—

आत्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जक्कि-सेट्टिके 'जिन' इष्टदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोय्सल राजा थे और एचल माता थी।

उस प्रसिद्ध जक्कि-सेट्टिकी गुर्वावली निम्न भाँति है:—द्राविड (ड़) में·····स्वामी समन्तभद्र हुए,-उनके बाद भट्टाकलङ्क;···हेमसेन; उनके बाद वादिराज;·····अजितसेन; परममुनिके शिष्य, पापहर मल्लिषेण मलधारी।

जक्कि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा। इस जक्कि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'बसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाब बनवाया। 'बसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया। साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाब, देवका 'कोलग' बोझोंका खर्च और खादके गड्ढे, और तेलके कोल्हुओंसे आधा मन तेल, ये सब चीजें उत्सवों और आहारदानके लिये दीं। ये सब चीजें दयापाल-देव-को सौंप दीं।

जक्कि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा।]

[EC, IV, Nagamangal tl, n° 103]

२७८

मुत्तत्ति—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका; बहुत करके लगभग ११२० ई०]

[माधवराय मन्दिरके नवरंग मण्डपके चार खम्भोंपर]

(दक्षिण-पश्चिमी खम्भा) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युम (उत्तर-पश्चिमी) णि सम्यक्त्वचूडामणि तळेकाडु-गोण्ड भुजबळ वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवरु विनयादित्य-दण्ड-(दक्षिण-पूर्व खम्भा)नायक माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट दत्ति श्री-मूलसंघ देशिय-गणद पो(पु)स्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमन्मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरु (उत्तर-पूर्वी खम्भा) श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे संक्रान्तिव्यतीपात-दन्दु कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दत्ति हिरिय-केरेय केळगे मोदलेरिय गद्दे हत्तु-सलिगेयदुं ओन्दु सलगे तोण्टेयदुं बसदिय मुन्तन इम्मडलु बेदलेयुं बळ्ळिगट्टमुं बसदिय बडगण................
(दक्षिण-पूर्वी खम्भा) विनयादित्यालय

[(अपने उन्हीं पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवने (उक्त) भूमिका दान श्री-मूलसंघ, देशीय-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कुन्दकुन्दान्वयके मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवको विनयादित्य-दण्ड-नायकके द्वारा बनवाये गये होय्सळ-जिनालयके लिये किया ।]

[EC, V, Hassan tl., n° 112]

२७९

कोन्नूर (जि० बेळगाँव)—कन्नड़-भग्न

[विक्रमादित्य चालुक्यका ४६ वाँ वर्ष=११२१ ई०]

परिचय

[इस लेखमें रायणय्य नायक, मारय्य नायक, तथा कोण्डनूरुके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ तटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्त्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोंमें रट्ट-वंश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहोली शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती हैं। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कत्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवतः कार्त्तवीर्य तृतीय हैं, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति घिस गई है।]

[JB, X. p. 181–182, p. *p.* 287–292, t.; p. 293–298, tr.; ins. n° 8, *II part.*]

२७७

कल्लूरगुड्ड—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लूरगुड्ड (शिमोगा परगना)में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामें पड़े हुए पाषाणपर]

---

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं. २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अंश-भेद है। २२७ नं. का अंश पहिला है और इस लेखका अंश दूसरा है। पर यह अंश–भेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-भेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पड़ता। अतः लेख (जो २२७ वें शिलालेखका द्वितीयांश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमें 'रायणय्य नायक' तथा 'मारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमें है) कतई नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूरु' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अतः हमें सन्देह है कि २२७ वें नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वें नं० का होना चाहिये। संभव है वह गल्तीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामें ही छूट गया हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रैलोक्यमल्ल-देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-बरं सलुत्त-मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले **वृषभ-तीर्थ**-कालं । सुललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दम् ।
कलि-काल-निर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥
सोगयिसुव-कालदोळ् की- । र्त्तिगे मूल-स्तंभमेनि**पयोध्या-पुर**दोळ् ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्य**निक्ष्वाकु-वंश**-चूडारत्नम् ॥
धरेगे **हरिश्चन्द्र**-नृपे- । श्वरनोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वलदिन्दम् ।
बिरुदरनदिर्प्पि विद्या- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन पुत्रनिन्दु-हर-हास-निभोज्वल-कीर्त्ति सद्गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुल-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-मलं सुरेन्द्र-सदृशं **भरतं** कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । **विजय-महादेवी** तनगे सतियेने विबुध-
व्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥

आ-**विजय-महादेवि**गे गर्भ-दोहलं नेगळे ।

तरल-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं झष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळहंस-पूरितेयनुद्भव-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैल-मान्द्य-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीवभिवञ्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥

तनयं श्री-मारसिंहगनुपमित-जगत्तुंगनाद जगत्-पा-।
वन-लक्ष्मी-वल्लभन्निनुदिथिसि नेगळ्द राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्ग्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिनधर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्याधरेन्द्रम् ॥

अन्तातन मर्म्मन्दिर् मरुळय्यं बूतुग-पेर्म्माडि तदपत्यनेरेयपं तत्सुत-वीरवेडङ्गनेम्बङ्गे ।

उदयं गेय्दं विद्या-। सुदतीशं मार-रूपनुचित-विळासम् ।
विदित-सकलार्त्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं राचमल्लनहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-राचमल्लनिन्देरेयङ्गनातन मगं बूतुगनातन मगं मरुळ-देव-नातनात्मजं गुत्तिय-गङ्गनातनिन्दं मरेयेरिद मारसिंगनातन सुतं गोविन्दरनातन पुत्रं सैगोट्ट-विजयादित्यनातनिन्दं राचमल्लनातनिं मारसिंगनातन सुतं कुरुळ-राजिगनातनिन्दं गर्व्वद-गङ्गं गोविन्दरन तम्मन मगनप्प मम्म-गोविन्दरम् ।

तेङ्गनुडिदडर्दु किळतं । कौङ्गं मिडुकदिरलेडद-कय्योळ् मद-मा-।
तङ्गमने पिडिदु निलिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने रकस-गङ्ग ॥

तदनुजं कलियङ्गनातनिन्दुत्तरोत्तरं गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे क्राणूर्-गणदाचार्य्यावतारवेन्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्धरणः ।
श्री-मूल-संघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं अर्हद्बल्याचार्य्यरुं बेट्टद-दामनन्दि-भट्टारकरुं बाळचन्द्र-भट्टारकरुं मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवरुं। गुणचन्द्र-पण्डित-देवरवरिन्द ।

एळेगे गुण-रुचियिनोळ्पग्-। गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-वाग्-रश्मि-यिनुच्-।

चळिसे वदनेन्दु पेम्पम्। तळेदं **गुणनन्दि-देव**-शब्द-ब्रह्म ॥

अवरिं बळिकमकलंक-सिंहासनमनलंकरिसि नेगर्द्द तार्किक-चक्रेश्वररुं । **वादीभ-सिंहरुं** । पर-वादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगरुम् । बौद्ध-वादि-तिमिर-पतङ्गरुम् । सांख्य-वादि-कुळाद्रि-वज्रधररुम् । नैयायिकाचार्य्य-भूजात-कुठाररुम् । मीमांसक-मत-घनाघन-प्रचण्ड-पवनरुम् । सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकररुम् । सकळ-साहित्य-प्रवीणरुम् । मनोभवभय-रहितरुं । जिन-समयाम्बर-दिवाकररुम् । अप्प श्री-मूल-संघद कोण्डकुन्दान्वयद क्राणूर्-गण मेषपाषाण-गच्छद श्रीमत्**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तदेवरवर** शिष्यरु ।

अनवद्याचारर् म्मा-। **घनन्दि-सिद्धान्त-देवर**धिकृत-जिन-शा-।

सन-संरक्षकरेसेदर् । जिनमतसद्धर्म्म-सम्पदं नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु ।

चतुरास्यं चतुरोक्तियिं प्रभुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।

स्थितियिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेयिं **बौद्धं** दली-**जैन**-पद्-।

धतियिन्दिर्द्दुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्य्यमादी-समुन्-।

नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिदं श्रीमत्**प्रभाचन्द्र**मम् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

नुत-सिद्धान्त**मनन्तवीर्य्य-मुनि**गं शुद्धाक्षराकारदिम् ।

सततं श्री-**मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनि**गं संवर्त्तिसुत्तिर्कुम-।

प्रतिमं तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् जगद्-वन्धरुर्-।

जितरुद्योतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञर् म्मही-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाळ-हर-निटिलाक्षं
वादि-मद-रदनि-बिदुवं । मेदिप मृगराज जयतु **श्रुतकीर्त्ति**-बुधम् ॥
कवि-गमकि-वादि-वाग्मिगळ् अवन्दिरं गेल्दु **कनकनन्दि** त्रैवि-
द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराजं दलेनिसिदं नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्म्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-। धारि क्राणूरुगणाग्रगण्यं सदयम् ।
श्री-रमणं सिद्धान्त-वि-। शारदनति-विशद-कीर्त्ति **माधवचन्द्रम्** ॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन-। हरिणाङ्क बिरुद-वादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेदं । धरेयोळ् **त्रैविद्य-बालचन्द्र-यतीन्द्रम्** ॥

श्री-**प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव**र शिष्यरु ।

वसुमतिगोळ्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्ति नर्-।
त्तिसुवुदु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुगे मण्डपन् दला-।
गेसेवुदु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलेयं समर्-।
र्थिसुवुदु सज्जनक्के सहजातमेनल् **बुधचन्द्र देवर** ॥
करवं वारुणिगेन्दु नीडि पिरिदुं निस्तेजमेय्दिर्द तन्-।
निरवं नोडदे सत्पद-प्रभुतेयं ताळ्दिर्प्प दोषाकरम् ।
दोरेये पेळेनुतं कळङ्क-रहितं सद्-वृत्तदिन्दं तिरस्-।
करिपं चन्द्रननोळ्पु-वेत्त बुधचन्द्रं सन्ततोत्साहदिम् ॥
नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण्ण-भूषण-गणं चित्तं सु-रत्नाकरम् ।
मडगिर्द्दिर्प्प करण्डकं तनु तपश्श्री-भामिनी-भासियेन्-।

दडे दुष्कीर्त्तियनान्त मत्तिन शठर् दुर्ब्बोधरस्पृश्यरेम् ।
पडिये सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-ख्यात-योगीन्द्रनोळ् ॥
सुर-धेनु व्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्व्वाण-भूजातवी-।
धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् बर्प्पुदम् ।
करेदर्त्थि-प्रकरक्के कोट्टु विपुळ-श्री-कीर्त्तियं ताळ्दिदम् ।
निरुतं श्री-**बुधचन्द्र-देव**-मुनिपं वात्सल्य-रत्नाकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य्य-परमेष्ठिगळन्वय-तिळकरुं जिनसभ-निर्म्मापणरुमप्प **बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु** प्रवर्त्तिसुत्तिरे । **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** गुड्ड ।

जय-जया-वल्लभनन्-। वय-वार्धि सीतरोचि भुवन-स्तुत्यम् ।
प्रिय-मूर्त्ति जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्गं **बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्गम्** ॥

अन्तेनिसि नेगर्द बर्म्मदेव भुज-बळ-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवं मण्डलिय बेट्टद मेले मुन्नं **दडिग-माधवर्** म्माडिसिद बसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पडिसलिसुत्तुं बरलु तदनन्तरं मर-वेसनागि माडिसि **मण्डलि-सासिरवेड-दोरे-एप्पत्तर** बसदिगळिन्नप्पुव मुन्नादुवक्कुं **पट्टद-बसदिय** प्रतिबद्ध-वागि समादेयर् म्मुख्यवागि बिट्ट दत्ति तट्टंकरे सर्व्व-बाधापरिहार मत्तं बसदियिं तेङ्कण केरेय केळगे तळ-वृत्ति गद्दे गळेय मत्तलु मूरु बेदले गळेय मत्तलारुमिन्तु पट्टद-तीर्त्थद बसदिगे सलुत्तमिरे आतन तनूभवरु ।

जय-लक्ष्मी-पति **मारसिंग**ननुजं सत्य-प्रियं सन्द **नन्**-।
निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुजं तेजस्वि विक्रान्त-च-।
क्र-युतं **रक्कस-गंग**नातननुजं वीराग्रगण्यं तद-।
न्वय-लक्ष्मी-गृह-दीपकं **भुजबळ-श्री-गङ्ग**-भूपाळकम् ॥

आ-**मारसिंग-देवं** **आद्रेवळ्ळियेम्बूरुमं** बसदियाग्नेय-कोणरेयिम्मूडल्लु गद्दे गळेय मत्तलोन्दु बेद्दले मत्तलेरडुमं बिट्टम् । **माघनन्दिसिद्धान्त-देवर गुड्डं मारसिंग-देवं** मत्तवातन तम्म **प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर गुड्डं नन्निय-गङ्ग-देवम् सिरियुरगे** येम्बूरुममागदेयिं तेङ्कण कोळद केळगे गळेय मत्तलोन्दु बेद्दले मत्तलेरडुमं बिट्टम् । बर्म्म-देव सक मारसिंग नन्निय-गङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विश्वाव] सु ९९२ सौम्य । **अनन्तवीर्य्य-सिद्धान्त-देवर गुड्डं रक्कस-गंगं** नन्निय-गङ्गं बिट्ट गद्देयिं तेङ्कलु हरकेरिय सीमे-वरं बिट्ट गद्दे गळेय मत्तलोन्दु बेद्दले गळेय मत्त-लेरडुं इन्ती-वृत्ति मण्डलिय होलद भूमियिन्ती-इन्नेरडु मत्तलु बेद्दलेय सीमे मूडण देसे तळवृत्तिय गद्दे । तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कल्लुगळु हडु-वल्लु पिरियळ्ळु बडग मोरसर-कोळ मत्तं कटकद गोवं रक्कस-गङ्गं हूलि-यकेरेय गद्देयुमदर सुत्तण बेद्दलेयुमं बिट्टनदर सीमे मूडलु चिक्कबण-जिगनकेरे तेङ्कलु तट्टकेरेय गुड्डेय बडगद····नीर्व्वरि हडुवलु नट्ट कल्लिं बरलु गुड्डेय मूडण नीर्व्वरि बडगलु बडगण दिम्बिन नीर्व्वरि चिक्क-बञ्जिगनकेरेय बडगण कोडि ॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डम् ।

भुज-बळदिं शत्रु-मही- । भुज-कुजमं कित्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण् ।
डजित-बळनेनिसि नेगर्द्दं । **भुजबळ-गङ्ग**-क्षितीशनवनिप-तिलकं ॥

इन्तेनिसि नेगर्द्द भुजबळ-गंग-पेर्म्माडि-देवं **सक-वर्ष १०२७ नेय सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु** मण्डलिय पट्टद-तीर्त्थद बसदिय नित्य-निवेद्य-पूजेगं ऋषियर्गाहार-दानक्कं बिट्ट दत्ति **हेग्गण-गिले** येम्बूरं सर्व्व-बाधा-परिहारं माडि बिट्टन् (**आगेकी ३ पंक्तियोंमें**

सीमाकी चर्चा है) **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नन्नियगंग-पेर्म्माडि-देव** ।

आ-भुजबळगङ्ग-····· । ··········वन-भ्राजित मग-वुट्टिद्····· । ·········दिक्-तटं रा- । ज्याभिषवाधिपतियेनिप **नन्निय-गङ्गम्** ॥

देसेगळनेय्दे पर्व्विद नेलक्किदे तां नेलगट्टेनिप्प बल्- ।
पेसेवुदु तोळोळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वर्- ।
त्तिसुवुदु गण्ड-गर्वद जसं बडवाग्नियं बायनेय्दे बत्- ।
तिसुवुदु तेजमेनधिकनादनो **नन्निय-गङ्ग**-भूभुजम् ॥

पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया- ।
स्पद-भुजदळि षण्मुखते दुर्ज्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर्- ।
व्वेदनते वक्त्रदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्प्पडा- ।
भ्युदयमनेय्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्ति गङ्गनोळ् ॥

दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनगगद केसरिवोले बाय्दडम् ।
मुगिये तळ-प्रहारदोळे मगिपनुड्डुटदिन्दे मीण्टुवम् ।
नगमनिवं कवुङ्कुडिव तेङ्कुडिवन्नने सम्भुशैलमम् ।
नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु **मारसिङ्ग**[1]न ॥

स्वस्ति **सत्यवाक्य-कोङ्गुणि-वर्म्म** धर्म्म-महाराजाधिराजम् परमेश्वरम् । **कोळालपुर**-वरेश्वरम् । **नन्दगिरि**-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-**विरिञ्चनं पद्मावती**-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचकिळामोदं **नन्नियगङ्गं**। जयदुत्तङ्गम्। गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम्। मण्डलिक-देवेन्द्रम् । दर्प्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम् । कुसुमकोदण्डम् । गण्डर-गण्डम् । दुद्दरगण्डम् । नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमन्न-

---

१ यहां 'मारसिंग' नन्निय-गंगका ही दूसरा नाम मालूम पड़ता है ।

भिय-गङ्ग-पेर्म्माडि-देवम् तम्मज्जं बर्म्म-देवं माडिसिद मण्डलिय पट्टद-तीर्त्थद बसदियं कल्लु-वेसनागि माडिसिद पट्टद-बसदिगे **सक-वर्ष १०४३ नेय शुभकृत्-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५ बृहस्पति-वारदन्दु** कुरुळिय-बसदियादियागि **पञ्चविंशति-चैत्यालयमं** धर्म्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद **प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर** शिष्यर् मुख्य-वागि बिट्ट वृत्ति बसदिय मुन्दे गद्देगळेय मत्तरोन्दु बेद्दलेगळेय मत्तरेरडु **बसदियहळ्ळिय** सुङ्कमुमं बिट्टरु मत्तं **नन्नियि-गङ्ग-देवनु** पट्ट-महा-देवि **कञ्चल-देवियरुं** पद्मावती-देविगे हरसि **हेर्म्माडि-देवनं** हडेदु काणि-केयं तन्नाळ्व नाडुर्गळोळु शर-मित-पणवं कोट्टरा-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं।

बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डम्।

मुनिसिं दिग्दन्ति-दन्तङ्गळनवयवदिन्दोत्ति वेगं छळल्लेम्-।
बिनेगं कित्तेत्तने तारगेगळनदटिन्दालिकल्लन्ददिं सू-।
सने वार्द्धि-व्रातमं सुर्रेने तवुविनेगं पीरने कोपदिं पोय्-।
यने बेट्टं पिट्टु-पिट्टागिरे समरदोळी-वीर-**पेर्म्माडि-देवम्**॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है। गङ्गान्वय (वंश) का अवतार इस प्रकार हुआ:—

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ। उसकी पत्नी विजय-महादेवी थी। जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई। अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद, नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लड़का हुआ। उस लड़केका नाम, चूँकि गङ्गामें नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया। गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ। इस गङ्गदत्तकी

व ॥ अन्तु समस्तधात्रीवल्लभेगे वल्लभनादाहवमल्लदेवन
प्रियतनूजन् ॥ घन-दोर्द्-व्विक्रान्तदिं गूर्ज्जरनृपबळमं
गेल्दु मारान्त चोळावनिपङ्गभीळकाळानळमनोसेदु
सड्ग्रामदोळ् तोरि भीतावनि पर्ग्गोतङ्कमं पुट्टिसदनुनय-
दिं विश्वभूचक्रमं सज्जनवागल्लु रायकोळाहळनेने
तळेदं राय **पेर्म्माडिरायम्** ॥

व ॥ अन्तु कुन्तळमहीतळकान्ताकान्तनेनिसिद वीर-पेर्म्माडि-
रायन कट्टिदलगेनिसिद तेरिदाळ्द वीर-गोङ्क-क्षितीश्वर-
नन्वयदोळेनेबरानुं सले निज-जननिगं जनकर्गे पूर्व्वपुण्य-
वेम्ब कळपावनिजके फलवुदयिसुवंते पुट्टि ॥ कलिगं
बेत्तिद वीरवान्तहितरं गेल्दुर्क्कु विद्विष्टमण्डलमं चक्रिगे
साधिसित्तळ्वदेक च्छत्रवागल्लुके निर्म्मळकीर्त्यङ्गनेगार्त्तु
कूर्त्तु कुडुतुं श्री**तेरिदाळा**वनीतळनाथं नेगळ्दं नृपाळतिळकं
लोकं महीलोकदोळ् ॥

वृ ॥ आतन नन्दनं च(ब)ळदोळा रघुनन्दननेक-वाक्य-विख्या-
तियोळर्क्कनन्दननिन्दितशौर्य्यदोळिन्द्रनन्दनं नीतियोळब्ज-
नन्दननेनिप्प महत्त्वमनप्पुकेय्दनुर्व्वीतळदोळ् बुधर्प्पोगळ-
लिन्तेरगुर्व्विवरम् निरन्तरम् ॥

व ॥ तन्नृपोत्तमप्रियपुत्रन् ॥

वृ ॥ बल्लिदरागि पोगदिदिरान्तरिमन्नेयरन्नेयर्क्कळं बल्लहनो-
ल्दु नोडे रणरङ्गदोळोडिसि **तेरिदाळ**दोळ् वल्लभनागि निन्द
जयवल्लभनं सितकीर्तिकामिनीवल्लभनेन्दु बण्णिसदनावनो
मन्नेय मल्लिदेवननु ॥ क ॥

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणर्दि भू-वधुगेणेयेने **बाचलदेवि** महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ते ॥ त्रि (वृ) ॥

अवरिवर्गनुरागर्दि सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्रिप्रियपुत्रिगं शशिधरंगं षण्मुखं बन्दु पुट्टववोल् पुट्टि विरोधि-मन्नेयघरट्टं **तेरिदाळ**-क्षितीश-विळासं परिरक्षिपं भुवनदोळ् निश्शंकेयिं गोङ्कमंन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मियेनिपग्गद **बाचळदेवि** माते विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीपं जनकं मुनि **माघणन्दिसैद्धान्तिक**चक्रवर्त्ति गुरु नेमिजिनं मनदिष्ट-देय्ववोरंतेने तेरिदाळद नृपाग्रणि गोङ्कनिर्दं कृतार्थनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडंगुव मारि कोय्विनिं तोडर्वे विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नगं सुडुव दवाग्निबाधे कडेगंचुवुदेन्ददे तेरिदाळदी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळवे निरीक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे संकिसि मन्त्रद तंत्रदासेयिन्द-सुवरेयागि बिट्टिरदे पञ्च-पदङ्गळनोदि तद्विषप्रसरमनेय्दे पिङ्गिसि जिन-व्रतदोळु दृढनाद तन्न पेम्पेसेदिरे **तेरिदाळ**दरसं नेगळ्दं कलि **गोङ्क**-भूभुजन् ॥ येत्तिसि **तेरिदाळ**दोळगोप्पे जिनेश्वरसद्मम समन्तेत्तिसिदं जयध्वजमनुर्व्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिदं निजाङ्क-महिमाक्षरमाळिकेयं गडुन्दडेनुत्तमभव्यनो जिनमताग्रणि सद्गुणि **गोङ्क**-भूभुजन् ॥ सततं कीर्त्तिसदिर्प्पपरा[२]र्ब्भुवनदोळ् भव्यर्जगत्सेव्यनं

जित-काळेय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कनं **गोङ्कनम्**[१]
प्रतिपक्ष-क्षितिनाथ-हृत्-सरसिजोद्यातङ्कनं **गोङ्कनम्**
क्षितियोळ् रक्षिप **तेरिदाळ**देसवी निश्शंकनं **गोङ्कनम्** ॥

---

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जरूरत नहीं है।
२ यह दूसरा 'प' गलत है।

अन्तेनिसिद **गोङ्क**महीकान्त श्री-**माधणन्दि-सिद्धान्तिकरं**
भ्रान्तेन्तो कोल्लगिरदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्ण्णिपिनम् ॥
तदाचार्य्यप्रभाववेन्तेन्दडे ॥ धरे दुग्धाब्धियिनब्धि चन्द्रनिनिनं
तेजोम्नियिन्देन्त [म]न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गणं
श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोद्यच्छिष्यरिं सद्गुणा-
कर-राद्धान्तिक-माधणन्दि-मुनियिं कण्गोपुगुं धात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-जळधिगळेने नगधैर्य्य**माधणन्दि**-सैद्धान्तिकराव-
गमेसेवर्स्सन्-मतियिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततवन्य-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्गतागमार्थान्तरचिन्ते-
योळ् नेरेदु निल्लदे सिद्धर सद्गुणंगळं चिन्तिसुतिर्प्प कोल्लगिरदग्गद सन्मुनि
माधणन्दिसैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिप्पनुर्व्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द्द जैन-समयक्कोगेदं जिननीगळोर्व्वनेम्बन्ते जिनव्रतङ्ग-
ळनशेषजनक्कुपदेशमित्तु सामन्तनेनिप्प निम्बनेरगल् नेगळ्दोप्पुव **माध-**
णन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-धर्म-सुधाब्धि-सुधांशुवागने ॥ अवर-
ग्रशिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-तार्क्ष्य-कर्व्वादि-महा-गहन-दावदहनर्व्व (र्ब्ब)
लवद्-वादीभसिंहरेसेदर्म्मेदिनीयोळ् **कनकणंदिपण्डित-देवर्** ॥ तत्पर-
वादीभ-पञ्चाननर स-धर्म्मर् ॥ **श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्य**-त्र (त्र)तिपर्षट्-तर्क्क-
कर्क्कशर्

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-प्रवन र्जितदोषर् नगळ्दरखिळभुवनान्तर-
दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्भेदनोच्चण्डपवि-दण्डर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधास्त्ररननिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशास्त्ररं विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूभृत्-कुलिशास्त्ररं पदपिनिं पोगळ्गुं धरे **चंद्रकीर्त्ति**-पण्डितरननतर्क्य-तार्किक-चतुर्म्मुखरं परवादिशूलरन् ॥ तत्परवादिमस्तकशूलर सधर्म्मर् ॥

वृ ॥ धृति भूभृत्पतियं गभीरवमृताम्भोराशियं साले सन्मति वाचस्पतियं पळंचलेविनम्मेय्वेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळ्द देशिग-गणाधीश-**प्रभाचन्द्रपण्डितदेवो**ज्वळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदादं वर्त्तिकुं धात्रियोळ् ॥ तन्मुनीश्वरर सधर्म्मर् ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्राग्रोग्र-वज्रर्गुणा-
भरणर् श्रीवसुधैकबान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गमं-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुंद्र-निभ-धैर्य्यर्वर्द्धमान-व्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ते-वडेदं त्रैविद्य-विद्याधररु ॥

यिन्तु नेगळ्तेगं पोगळ्तेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज्ञ-गुरुगळप्प श्री-**माघणन्दि**-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळम् ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-विक्रम-चक्रवर्त्ति-**त्रिभुवनमल्लदेवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं **लत्तनूरपुर**वराधीश्वरं त्रिवलि-परेघोषणं रट्टकुलभूषणं सुवर्ण्ण-गरुड-ध्वजं सिन्धूर-लाञ्छनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-बिरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साहसोत्तुंग सेननसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

कार्त्तवीर्य्य-देवरसरु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरल् तदाश्रेयिम् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्मण्डलिकं परबळसाधकं जीमूतवाहनान्वयप्रसूतं शौर्य्य-रघुजातं समर-जयोत्यु(त्तु)ङ्गं रणरङ्गसिङ्गं मयूर-पिञ्छ-चञ्चद्-ध्वजं रूप-मकरध्वजं पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसादं जिनधर्म्म-केलि-विनोदं भावनं-ककार मण्डलिक-केदार नामादिसमस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमत् **गोङ्कि-देवरसर्** निज-राजधानियप्प **तेरिदाळद** मध्य-प्रदेशादोळ् **गोङ्क**-जिनालयमं निर्म्मिसि श्री-नेमि-जिननाथ-प्रतिष्ठेयं राष्ट्रकूटान्वय-शिरः-शिखामणि **कार्त्तवीर्य**-महामण्डलेश्वरं मुख्यवागि सद्भक्तियिं शुभदिनमुहूर्त्तदोळ् माडि तज्जिनमुनि-प्रधानरप्प देसिग-गण-पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दाचार्यान्वयद॰ कोल्लापुरद श्री-रूपनारायणन बसदियाचार्य्यरुं मण्डलाचार्य्यरु मेनिप्प श्री**माघणन्दि**-सैद्धान्तिक-देवरं बरिसि **शक-वर्ष १०४५ नेय** शुभकृत्-संवत्सरद वैशाखद पुण्णमि बृहस्पति-वारदल् **गोङ्क**-जिनालयक्के पन्निर्व्वर्ग्गावुण्डुगळुमं समस्तपरीवार-प्रजेगळुमं आ स्थळद सेट्टि-गुत्त-मुख्य-समस्त-नकरङ्गळुमं बरिसि **नेमि**-तीर्थेश्वरन बसदिय ऋषियराहारदानक्कं देवरष्टविधार्च्चनेगं खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारक्कं पेसर्-गोण्डु तन्मुनीश्वर दिव्य-श्री-पाद-पद्मंगळं दिव्य-तीर्थ-जळङ्गळिं तोळेदु शातकुम्भ-कुम्भ-संभृत-जळङ्गळिं धारा-पूर्व्वकं माडि **तेरिदाळद** पश्चिम-भागदोळ् हारुनगेरिय बट्टेयिं बडगल् यिप्पत्तनाल्गेण-कोलल् कोट्ट मत्तरेप्पत्तेरडु देवियण-बावियिं तेङ्कला कोलल् कोट्ट तोण्ट मत्तरोन्दु अन्तु मत्तर् ७२ तोण्ट मत्तर् १ अल्लिय पन्निर्व्वर्ग्गावुण्डुगळुमरुवत्तोक्कलुं हन्नि-धान्यक रासिगोळगे वं बिट्टर् अल्लिय सेट्टिगुत्त-मुख्य-नगरङ्गळ् तावु मार-कोण्ड भण्ड माणिक-पट्ट-सूत्रवादडं होगे वीस लाभायद अडके होगे हन्नोन्दु तावु तेगेद

बेळ्ळय हेरिंगं अग(?)द (?)न्तरु वन्दिगरु तेगेद हेरिङ्ग नूरेलेबिन्ति-मितुवं बिट्टर तेळ्ळिगरु मान्य-सान्यवेल्लदे देवर संजे-सोडरिगं चूपारिलेगं गाणके सोल्लगे होरगणि बन्द एण्णेय कोडके सोल्लगे यिन्तव बिट्टरु गण-कुम्भाररु देवर अष्टविधार्च्चने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे आवगेगळन बिट्टरु हलसिगे-हन्निर्च्छासिरद हेब्बड्डेयल् नडेव गाण्डिगरु देवरिगे अष्टविधार्च्चने नडवन्तागि हेरिङ्गे नूरु बोळ्ळेलेयं बिट्टरु ॥

[IA, XIV, p. 14-26 (lines 1-56), t & tr.]

२८१-८२-८३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळलु—संस्कृत और कन्नड़

[विना कालनिर्देशका, पर संभवतः लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळलु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ बस्तिके दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर-द्वारावतीपुरवराधीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मलेपरोळु गण्डाद्यनेकनामालङ्कृत·········त्रिभुवनमल्ल तळकाडुगोण्ड भुजबळ **वीरगङ्ग होय्सळ-देव** पृथिवि-यराज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारम्बरं सलुत्तमिरे **गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु**-सासिरमनेकच्छत्रच्छायदि पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्त-

गर्द्देयुं अदर बळसि बेद्दलेयुम्............मं प्रतिपा (शेष पढ़े जानेके योग्य नहीं है)।

[EC, XI, Davangere tl., n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा। स्वस्ति। जब, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपद्मोपजीवी राजा पाण्ड्य था। पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था। उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (फाल्गुन), राम, सहस्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था।

उसका दण्डाधिप सूर्य्य यादव-वंशका सूर्य और राजिग-चोळके प्रयत्नोंका विफल करनेवाला था। उसकी पत्नी कालियक्के थी। जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियों, लोभियों, राजाओं, या अग्निसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तिमें क्या स्थिरता है, इसलिए उसने उसकी स्थिरताके लिये सेम्बनूरमें जिनपतिका एक उत्तम मन्दिर बनवाया। उसकी प्रशंसा। कालियक्केके पिता आसवर्म्मा, माँ जक्कब्बे,......कलि-देव थे।

सूर्य्य-चमूपका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था। उसकी प्रशंसा।

द्रविण-संघके नन्दि-संघमें अरुङ्गलान्वय चमकता है। उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मलधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए। प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन।

(उक्त मितिको), सेम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तीशयन-पण्डितके हाथोंमें, ज्येष्ठ दण्डनायकिति कालियक्कब्बेने जलधारापूर्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया। कल्याणकामना और शाप]

२८९-९०

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५०=११२९ ई० (कीलहॉर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९१

ऊद्रि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष कीलक ११२९ ई० (लु. राइस)।]

[ऊद्रिमें चौथे पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-**विक्रम वर्षद कीलक-संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध १३** श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **एक्कलरस-देवरुद्धरे**योळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वरं तनगधीश्वरनुद्धलसच्चरित्र····।
गुरु **हरिण[न्दि]देव-मुनिपो**त्तमनग्गद दण्डनायकम् ।
वर-गुणि-**बोप्पणं** जनकनुन्नत-शीलद **नागियक्क** मा-।
तरेयेनलेम् कृतार्थनो धरित्रिगे **सिंगण-दण्डनायकम्** ॥
गुणद कणि जैन-चूडा-।
मणि वैरि-बलक्के समर-मुखदोळ् सुभटा-।
प्रणि जिन-पदङ्गळं **सिद्ध**-।
गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एक्कलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था। वह बड़ा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक बोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी। यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूड़ामणि था, समरमें सामना करनेवाले सुभटोंमें अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति मिली थी।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 149]

२९२

हुनशीकट्टि (जिला बेलगाँव)—कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई० (फ्लीट)]

[१] स्वस्ति श्रीमद्-**भूलोकमल्लदेवर** वर्ष ६ नेय सावा (धा)रण संव-

[२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आदिवारदन्दु श्रीमन्म**हामं-**

[३] **डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु** अग्रहारं **कोडन-पूर्व्व-**

[४] **दवल्लिय माणिक्यदे**वर बसदिय सम्बन्धिये**कसा-**

[५] **लेय-पार्श्वनाथदे**वर विविधपूजाविधानक्के बिट्ट

[६] गद्देय सीमेय गुड्डे [॥] मङ्गलश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ला पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मारसिंहदेवरसने कोडनपूर्व्वदवल्लि (गाँव) के माणिक्यदेव (देवता) की बसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध रीतियोंकी पूर्तिके लिये धान्य (चावल) के बहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[इ० ए०, १०, पृ० १३१-१३२, नं० ९८]

२९३

हन्तूरु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई०]

[हन्तूरु (गोणी बीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

---

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । यह राजा पश्चिमी चालुक्य वंशका है ।

जयति सकळविद्यादेवतारत्नपीठम्
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सव्व-मिथ्या-।
समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वराधीश्वरं **यदु-कुळ**-कळश-कळित-नृप-धर्म्म-हर्म्यमूळ-स्तम्भन् । अप्रतिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ । **शशकपुर**-निवास-वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोदनिल्यादि-नामावळीसमन्वितरप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड भुजबळ वीर-गङ्ग-**विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवरु** मूडलु नंगलियघट्ट तेङ्कलु कोङ्गु चेरमनमले हडुवलु बारकनूर घट्ट बडगलु साविमलेयिनोळगाद भूमियं भुज-बळाव-ष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं **दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद **चक्रगोट्ट**दोडेयं **सोमेश्वरं** वल्के त-।
न्न कराळासिय कूर्प्पनेम्मेरदनो **गौडा**न्धकार-प्रचरण्-।
डकरं **माळव**-मेघ-जाळ-पवनं **चोळो**प्रकाळानळम् ।
त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-**विष्णु**-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-**विष्णुवर्द्धन**-अग्र-तनूज निज-वंशाम्बर-द्यमणि । वन्दि-जन-चिन्तामणि । सत्य-शौचाचार-सम्पन्न । बुध-जन-मनःप्रसन्नन् । आळिम्मुन्निरिव सौर्यमं मेरेव । श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल **कुमार-बल्लाळ-देव**ननवरत-मनोरथावाप्तियिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

क ॥ कळ्के बयलुगेक्क तुळक्क् । एळेयोळ् माराम्परिल्लदा-दिगधि-परम् ।
शेळदु नेलक्किक्कलु कौ-। वळिपुदु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥

आवन्नमाव-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।
देवन्नमीयददटर । देवं बल्लाळ-देवनप्रतिम-बल ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्कुमार-बल्लाळ-देवनप्रानुजे हरियब्बरसिये-न्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतेयन्ते विनीते । सुसीमा-देवियन्ते सुशीले रुग्मिणियन्ते गुणाग्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकद-न्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयुं । भगवदर्हत्-परमेश्वर-चरण-नख-मयूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्व्वर्ण्ण--वर्णितागण्य-पुण्य-जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-भीतियिम् ।
बरे पलरञ्जलेम्बभय-वाक्यमनातुररागि बेर्प्पवर्ग्गे ।
इरदे शरीर-रक्षणमनोदल्ल शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।
हरियवे ताळ्दिदळ् पर-हितोक्त-चतुर्व्विध-दान-शक्तियम् ॥
पर-बळ-दानव-संहा- । रारुण जळ-लिप्त-खर्ग्गनुन्नततेजम् ।
वर-विबुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विभुसिंग ॥
हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरल् कोरळेम्ब निम्मदद गुणोत्-
करमनोळकोण्डु हरियबे । पर-हितदिं धरेयोळैदे जसमं तळेदळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमतु-हरियल-देवियर गुरुगळेन्तप्परेन्दडे श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माघ-णन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पळारिश् ।
चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुस् ।
सद्-भव्य-वारिज-महोत्सव-तेज-राजिर् ।
उज्जृम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्प श्रीमत्-**गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर** गुड्डि **हरियब्बरसि**यरु **कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूर**लनेक-रत्न-खचित-रुचिर-मणि-कळश-कळित-कूट-कोटि-घटितमप्प उत्तुंगचैत्यालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक्कं नित्य-पूजेगं ऋषियरज्जियर्कळाहार-दानक्कं सित-परिहारक्कं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होय्सळ-देवर कय्यलु सर्व्व-बाधा-परिहारवागि **गुत्तिय चिण्ण**न दीवर **बम्म**नन्तिर्व्वरय्दु हणविन मण्णुमं बिडिसिकोण्डु **शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु** तम्म गुरुगळप्प **गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वेकं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-**मल्लिनाथं** विरुद-लेखक-मदन-म्महेश्वरं बरेदम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणनप्प **माणिमोज**न मगं विरुद**रूवारि**-वेश्या-भुजङ्ग **बलकोजं** कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देव अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोट्टके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे डराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था:— (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रंशसा करते हुए उसकी स्तुति) । कुमार-बल्लाळ-देवकी बहिनोंमें सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णनः—(जैन रूपमें उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा) । उसका पति सिंग था; (उसकी प्रशंसा) ।

उस हरियब्ब-देवीके गुरु श्री-मूलसंघ, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-गण तथा पुस्तक-गच्छके माधनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे; (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसिने, कोडङ्गि-नाड्के मलेवडिके हन्तियूरमें, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्नोंसे

जड़ित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरकी मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, ऋषि और वृद्ध स्त्रियोंको आहारदान देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होय्सल-देवके हाथोंसे तमाम चुङ्गियों व करोंसे मुक्त भूमि गुत्तिके बिट्ट और बम्म मल्लुएसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी। (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिभोजके पुत्र बलकोजने उत्कीर्ण किया।]

[EC, VI, Mudgere tl., n° 22]

२९४

कम्बदहल्लि—कन्नड़-भग्न

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिमें, जैन बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर शिष्यितियरप्प……
………कय रुकमव्वे जकवे कन्तियर्ग्गे तव……निसिधियं माडिसि
…………………………स्वर्गस्थर्………………

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ रुकमव्वे और जकव्वे-कान्तियर्की स्मृतिमें……स्मारक बनवाया।]

[EC, IV, Nagamangala tl., n° 21]

२९५

तगदुरा—कन्नड़

[बिना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

कलिकालनिर्जितं श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धन-क्रमदिन्दम् ॥
सोगेयिसुव-काळदोळ् की-। र्त्तिगे मूल-स्तम्भयेनि**पयोध्या-पुर-दोळ्** ।
जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्य**निक्ष्वाकु**-वंश-चूडारत्नम् ॥
धरेगे **हरिश्चन्द्र**-नृपे- । श्वर नोर्व्वने कान्तनागि दोर्व्वळदिन्दम् ।
बिरुदरनदिर्प्पि विद्या- । परिणतियिं नेरेदु सुखदिनिरे पल-कालम् ॥
वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हास-निभोज्वळ-कीर्त्ति सद्-गुणो- ।
पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-भेदन-कारि कला-प्रवीणनुद्- ।
धूत-माळं सुरेन्द्र-सदृशं **भरतं** कवि-राज-पूजितम् ।
ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निळयं सु-जनाग्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । **विजय-महादेवि** तनगे सतियेने **विबुध**-
व्रज-पूज्यं **भरतं** भा- । वज-सदृशं नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
वचन ॥ आ-**विजय-महादेवि**गे गर्भ-दोहळं नेगळे ।
वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं क(झ)ष-चक्रवाक-भा- ।
सुर-कळ-हंस-पूरितेयनुद्‌घ-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
हर-नव-शैत्य-मान्द्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तळो- ।
दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीव्रभिलाष्छेयनेय्दे ताळ्दिदळ् ॥
कल-हंस-याने पलरुं । केळदियरोड वागि पूर्ण्ण-गङ्गा-नदियम् ।
विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
अन्तु मनदलम्पु पोम्पुळि-वोगे गङ्गा-नदियोळोलाडि निज-गृहके वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।
गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं बडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
माङ्गल्य-नाममादुदि- । ळाङ्गनेगधिपतिगे **गङ्गदत्ताख्यानम्** ॥
व ॥ आ-**गङ्गदत्ताङ्गे भरतेनम्ब** मगं पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्तनेम्बं** मगं पुट्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे **गङ्गदत्तं**-। गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया-।
प्रणियागि **हरिश्चन्द्र**- । प्रणुत-नृपेन्द्रं धरित्रियोळ् शोभिसिदम् ॥

मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग **भरत**नेम्ब सुतं पुट्टिदनातङ्गे **गङ्गदत्त**नेम्ब मगनागिन्तु गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे ।

कं ॥ **हरि**-वंश-केतु **नेमी**- । **श्वर**-तीर्थं वर्त्तिसुत्तमिरे **गङ्ग**-कुळं- ।
बर-भानु पुट्टिदं भा-। सुर-तेजं **विष्णुगुप्त**नेम्ब नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथं साम्राज्य-पदवियं कय्कोण्डु **अहिच्छत्र-पुर**-दोळु सुखमिर्दु ।

व ॥ **नेमि**-तीर्थंकर परम-देवर निर्व्वाण-कालदोळैन्द्र-ध्वजमेम्ब पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

कं ॥ अनुपम**दैरावत**मं । मानोनुरागदोळे **विष्णुगुप्त**नाङ्कित्तम् ।
जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-**विष्णुगुप्त**-महाराजङ्गं **पृथ्वीमति-महादेवि**गं **भगदत्तं श्रीदत्त**नेम्ब तनयरागे ।

व ॥ **भगदत्ता**ङ्गे **कलिङ्ग**-देशमं कुडलातनुं **कलिङ्ग**-देशमनाळ्दु **कलिङ्ग-गङ्ग**नागि सुखदिनिरे ।

(य्) इत्तलुदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं ।
श्रीदत्त-नृपाङ्कित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्द्द **विष्णुगुप्त**-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु **श्रीदत्त**निन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियबन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रियं पालिसिदम् ।
भय-लोभ-दुर्ल्लभं ल- । क्ष्मी-युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियबन्धु सुखदिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्-समयदोळु **पार्श्व**-भट्टार कर्गे केवळ्ज्ञानोत्पत्तियागे **सौधर्म्मेन्द्रं** बन्दु केवळि-पूजेयं माडे प्रिय-

बन्धुवुं तानुं भक्तियिं बन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्रं मेच्चि दिव्यम-ष्यन्दुं तुडुगे-गळं कोट्टु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोडं अदृश्यक्कळ-कुमेन्दु पेळ्दु विजयपुरकहिच्छत्रमेन्दु पेसरनिट्टु दिविजेन्द्रं पोपुदित्तळ्ळ गङ्गान्वयं संपूर्ण्ण-चन्द्रनन्ते पेर्च्चि वर्त्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-मही-पतिगे पद्मनाभनेम्ब मगं पुट्टि ।

क ॥ तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्द्दु पद्मप्रभना- ।
र्प्पिन कणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिदं

व ॥ अन्तु साधिसि (दि) शाधित-विधनागि पुत्ररिर्व्वरं पडेदु राम-लक्ष्मणरेन्दु पेसरनिट्टु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्व्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे संपूर्ण्ण-कळाङ्गरागि बेळेयल् विद्या-बलोद्योगमुर्-
व्वरेयोळ् चोद्यमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळक्कलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोप्पिदर् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्प्पुदु मत्तलुज्जेनिय-पुराधिपति-महीपाळना-तुडुगेगळं बेडियट्टिपडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कैकोण्डु ।

क ॥ येमगदनद्दलिकागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्तु सन्तमिरल् वेळ् ।
समर्क्के वन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदट्टि मन्त्रि-वर्ग्ग डोळालोचिसि तन्न तङ्गेयाळब्बेयुं नाल्वतेणबरासरप्प विप्र-सन्तानमं बेरसि कळिपिदडवर्द्दक्षिणाभिमुखरागि बरुत्तं राम-लक्ष्मणर्ग्गे दडिग-माधवरेन्दु पेसरनिट्टु निज-वयणदिं वरुत्तमिरे ।

क ॥ बन्दवर्गेळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- ।
नन्दनमं पेरूरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु **गङ्ग-हेरूरं** कण्डल्लिय तटाक-तीरदोळु बीडं बिट्टू चैत्यालयमं कण्डु निर्भर-भक्तियिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-विद्या-पारावार-पारगरुं जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण्ण-चन्द्ररुमुत्तम-क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म्म-निरतरुं चारित्र-चक्र-धररं विनेय-जनानन्दरं चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावद्य-दूररं **क्राणूर-ग्गणाम्बर-**सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्ठा[न]-निष्ठितरं **गङ्ग**राज्य-समुद्धरणरं **श्री-सिंहनन्द्याचार्यरं** कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्व्वकम् बन्दिसि तम्म बन्दभिप्राय-मेल्लमं तिळिय पेळे कय्कोण्डवर्ग्गे समस्त-विद्याभिमुखर्म्माडि केलवानु दिवसदिं **पद्मावती**-देवियं विधि-पूर्व्वकमाह्वानं गेय्दु वरं बडेदु खड्गमुमं समस्त-राज्यमनवर्ग्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडल्तु विद्व- । जन-पूज्यं **माधवं** शिलास्तम्भमना- ।
ईनुगेय्दु पोय्यलदु पु- । य्मेने मुरिदुदु वीर-पुरुषरेनं माडर् ॥

व ॥ आ-साहसमं कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्ण्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।
ज्जन-जन-वन्धरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विन केतनमागि माडि बे- ।
र्प्पनितु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनिवर्ग्गिन्तेन्दु बेससिदरु ।

वृ ॥ नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदडं जिन-शासनक्कोडम्- ।
बडददमन्य-नारिगेरेदट्टिदडम्मधु-मांस-सेवे गे- ।
य्दडमकुळीनर्प्पवर कोळ्कोडेयाददमर्त्थिगर्त्थमम् ।
कुडददमाहवङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

वृ ॥ उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळल् **कुवळाल**माळ्के तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं विषयमासननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजि-रं- ।
गात्त-जयं जयं जिन-मतं मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
दात्ततेयिन्दमा-**दडिग-माधव**-भूभुजराळ्दरुर्व्वियम् ॥
उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मोद [कि] ले मूड तोण्डे-ना- ।
डत्तपराशेगम्बुनिधि चेरोडेयिर्प्प तेङ्क कोङ्गु म- ।
त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिक्कि परावृत-**गङ्गवाडि**-तोम्- ।
भत्तरु-सासिरं दळेले माडिदनिन्तुटु गङ्गनुग्रगम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्च्चुवाय्दं होगळे बुध-जनं बन्दु **कावेरियोळ्** मी- ।
करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
परिवारं तन्न कीर्ति-प्रभे वळसे दिशा-आगमं चोद्यमागल् ।
परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

क ॥ कर्···अरिद गङ्गनिं भय- । मिल्लद **हरिवर्म्म विष्णु-**
भूपनिं निजदिं ।

बल्ले तडङ्गाल्-माधव- । नल्लिं बळि चुर्च्चुवाय्द-**गङ्ग**-नृपाळम् ।
श्रीपुरुषं शिवमारं ।···ळं कृतान्त-भूपना-सयिगोट्टम् ।
द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिप्प **विजयादित्यम्** ॥
····रे येरिद **मारसिंग**ना- । कुरुळ-राजिगं पेसर्-व्वेत्ता- ॥
मरुळं तन्नृप-तिळकन । पिरिय मगं सत्य-वाक्यनचळित-शौर्य्यं
गर्व्वद-गङ्ग वसुवेयो- । ळोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।
दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि **राचमल्ल**-भूभृ········ ॥
तेङ्ग मुरिवं हसिय क- । अङ्ग पिडिदडसि कीळ्वना-मद-करियम् ।

पिङ्गदे निलिसुव साहस- । तुङ्ग केवळमे नेगळ्द **रकस-गङ्गम्** ॥
अवयवदिन्दे साधिसिद माळवमेकुमनेन्दे गङ्ग-मा- ।
ळवमेनलक्करं बरेदु कल् निरिसुत्ते कळल्चि **चित्रकूट-** ।
मनुरे **कृष्ण**मजेय-नृपानुजनं **जयकेसियं** महा- ।
हवदोळे **मारसिंग**-नृपनिक्कि निसर्ग्गदिनात्म-शौर्य्यमम् ॥
तनयं श्री-**मारसिंहन**नुपम-जगदुत्तुंगनादं जगत्-पा- ।
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदयिसि नेगळ्दं **राचमल्ला**वनीशम् ।
मनु-मार्ग्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लभेशम् ।
जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळयं राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरा-**दडिग**न मगं चुर्बुवाय्द-गङ्गनातन सुतं **दुर्विनीत**नातन तनयं श्री····नु **श्रीपुरुष**महाराजं तत्-तनयं देव तत्-तनूभव**नेरेयङ्ग-हेम्माडि** तत्पुत्रं **बूतुग-हेम्माडि** तदात्मजरु···· **देव** तदनुज **गुत्तिय-गंग**नातन मोम्म **मारसिंग-देव**नातन मगं **कलियङ्गदेव**नातन मगं **बर्म्म-देव**निना-गङ्ग-वंशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संधरणः ।
श्री-**मूल-संघ**-नाथो । नाम्ना श्री-**सिंहनन्दि**-मुनिः ॥
श्री-**मूल-संघ**-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर····जय-ल- ।
क्ष्मी-महितं जिन-धर्म्म-ल-। लामं **काणूर्-गण**-जना····करम् ॥

आ-गणद अन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ माळिकेवामराद्रौ
तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।
इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी निकामम्
समजनि जिनधर्म्मो निर्म्मळो **बालचन्द्रः** ॥

३००

चन्नदहल्लि—कन्नड़

[विक्रम वर्ष ५८=११३१ ई०]

[चन्नदहल्लिमें, अमृतेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-संवत्सरद ५८ परिधावि-संवत्सरदास्व-यिज-ब ५........श्रीमतु मूलसंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-भट्टारक-देवर गुड्ड गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मगं बोप्पयं समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूलसंघ और देसिग-गणके माघनन्दि-भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य,-गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डके पुत्र बोप्पय, समाधि-विधिसे मरण कर, स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., n° 97.]

३०१

हळेबीड—संस्कृत और कन्नड़

[वर्ष प्रमादिन्, ११३३ ई० (लू० राइस)]

[हळेबीडसे लगी हुई बस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयतु जगति नित्यं जैनसंघोदयार्क्कः
प्रभवतु जिनयोगीव्रातपद्माकरश्रीः ।
समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-
प्रकटित-गुण-भास्वद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥
जगत्रितयवल्लभः श्रियमपथ्यवाग्दुर्ल्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
ददातु यदघान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
स नस्सकल-धीश्वरो विजय-**पार्श्व**तीर्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
माळार्च्चिताय भुवनत्रयधर्म्मनेत्रे ।
कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
भक्त्या नमो विजय-**पार्श्व**-जिनेश्वराय ॥
होय्सळोब्वाश-वंशाय स्वस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
खण्डने मण्डलाग्राय शतधाराग्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्दा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-**सोम**जं भूतलं
पोगळुत्तिर्प्प-**पुरूरवो**ब्वींपति सन्दायु-र्म्महीवल्लभं ।
सोगयिप्पा-**नहुषं ययाति यदु**वेम्बुर्व्वीश-सन्तानदोळ् ।
नेगळ्दं श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
आ-**सळ**-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेय्दे माडुव बगेयिं ।
वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहितं सकल-मंत्र-विद्या-कुशलम् ॥
मुदर्दिं जैन-व्रतीशं **शशकपुरद पद्मावती**-देवियं मं- ।
त्रदिनादं साधिसल् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वरं कुं-
चद-काविन्दान्तदं **पोय्सळ** एनलभयं पोय्वुदुं पोय्सळाङ्कम् ।
यदु-भूपग्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळेयिं लोळ-शार्दूळ-**चिह्न**म् ॥
आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेंसागे तात्कालिक-नामदिन्दं ।
वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग वं माडिदना-नृपाळम् ॥

कय्-सार्दिरे पुलि युण्डिगे ।
कय्-सार्दिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-राज्यम् ।
कय्-सार्दिरे पलरादर् ।
प्पोय्सळ-नामदोळे **यादवो**र्व्वीपतिगळ् ॥
सत्कुलदोळगिन्दु माही- ।
भृत्-कुळदोळगचळ-नाथनेसेवन्तेसेदं ।
तत्कुलदोळ् विजितारि-कु- ।
भृत्कुळनादित्य-मूर्त्ति **विनयादित्य**म् ॥
तदपत्यं रिपु-नृप-भुज- ।
मद-मर्दननखिळ-विबुध-जनता-सौख्य- ।
प्रदनुदितोदित-महिमा- ।
स्पदनेनि**पेरेयङ्ग**-भूपनङ्गज-रूपम् ॥
एरेयङ्गन कूरसि तले- ।
गेरगदे मुन्नरिदु बन्दु पदक्केरगदवर् ।
प्परिये तले मुरिये निट्टेल्व् ।
ओरदुगे बिसु-नेत्तरेरगदिर्प्परे धुरदोळ् ॥
ई-वसुधे पोगळ**लेचल**- ।
देविगवेरेयङ्ग-नृपतिगं त्रै-पुरुषर् ।
त्तावेनलादर्ब्बल्ला- ।
ळावनिपति **विष्णु**-नृपति**युदयादित्य** ॥
अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
कान्तं निमिर्देसेये कूर्प्पुमाप्पुं जसमा- ।

दन्तोळगि बेळगे पेर्म्मेय- ।
नान्तं **नळ-नहुष-भरत**-चरित-प्रतिमम् ॥
स्थिरमागि **विष्णुवर्द्धन**- ।
धरणीपाळंगे पट्टमागलोडं सा- ।
गरदन्तनहित-धरणी- ।
श्वररोडनेय्दित्तु विशदकीर्तिप्रसरम् ॥
पोडरदे साध्यमाय्तु मलेयेल्लमुना-**तुळु**-देशवेल्लमुं ।
नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिवु कय्यो सार्हुव- ।
त्तडियिडे मुच्चि कच्चि बेसकेय्दुदु **विष्णु**-नृपं कृपाणमं ।
जडियदे मुन्ने कोङ्ग-नृपरित्तरिभङ्गळनेम् प्रतापियो ॥
चोळ-नृपाळ-**पाण्ड्य**-नृप-**केरळ**-भूप-भुजाबलेप-वि- ।
स्फाळन**नन्ध्र**-गन्ध-गज-केसरी **लाट**-वराट-धारिणी- ।
पाळ-धनानिळं कदन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि **विष्णु**-भू- ।
पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन शौर्य्यमनारो कीर्तिपर् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं । **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि मण्डलिक-चूडामणि **शशकपुर**-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-हसन-सु-रुचिर-विशद-यशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरतिशय-निखिल-विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीढ-नून-रत्न-रस्मि-जाल-जटिलित-चरण-नख-किरणम् । चतुस्समय-समुद्धरणम् । कर-कराळ-करवाल-प्रभा-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-ण्यगर्भ-तुळापुरुषाश्व-रथ-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-मख-शतमखम् । राज-विद्या-विलासिनीसखं । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुंग-रङ्गद्-

बहळतर-तरङ्गौघाच्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आमळक-फळ-तुळित-मुक्ता-लता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । विबुध-जन-कल्प-वृक्षम् । विजयगज-घटोत्तरळ-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रतिदिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्चळित-जात्यश्व-हेषा-रवपूरित-दिशा-कुञ्जम् । शस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-मन्दाकिनी-निश्चळोदात्त-गुण-यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-**पाण्ड्य**वेदण्ड-कूट-पाकलम् । जगदेव-बळ-कळकळं । चक्रकूटाधीश्वर-**सोमेश्वर**-मदमर्द्दनम् । **तुळु**-नृपासुर-जनार्द्दनम् । **कळपाळ**-तारक-मयूर-वाहनम् । **नरसिंह**-ब्रह्मसम्मोहनम् । **इरुङ्गोळ**-बळ-जळधि-कुम्भ-सम्भवम् । हत-महाराज-वैभवम् । दळितादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् । चेङ्गिरि-बळ-काळानळम् । जयकेशी-मेघानिळनेन्दिवु मोदलागे समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । **तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-बनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड** त्रिभुवनमल्ल भुजबळ वीर-गङ्ग-**होय्सळदेवम्** ॥

निरुपमिताङ्गियं रुचिर-कुन्तळेयं नुत-मध्येयं मनो-
हरतर-काञ्चियं धृतसरस्वतियं विलसद्विनीतेयम् ।
स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेयं स्थिरवागिरे तन्न तोळोळोल्द् ।
इरिसिदनुर्व्वराङ्गनेयनप्रतिमं विभु-**विष्णु**-भूभुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-पूजा-पुरन्दरम् । स्थैर्य्य-मन्दिरम् । **कौण्डिन्य**गोत्र-पवित्रम् । **एचि-राज**प्रिय-पुत्रम् । **पोचाम्बिको**दारोदन्वत्-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-सञ्जातम् । **कर्णाट**धरामरोत्तंसं । दानश्रेयांसम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-विशद-यशःप्रकाशं । मन्त्र-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चकोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्ण्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् । मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्व-चूडामणि । **विष्णुवर्द्धन**-नृप-राज्य-वार्द्धि-संवर्द्धन-सुधाकरम् । विशुद्ध-रत्नत्रयाकरम् । चतुर्विधानूनदानविनोदम् । **पद्मावती-देवी**-लब्ध-वर-प्रसादम् । भय-लोभदुर्ल्लभम् । जयाङ्गना-वल्लभम् । वीर-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-घरट्टम् । विबुध-जन-फळ-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-तेजम् । गङ्ग-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं- ।
बेत्तिरे मुन्निनन्ते पल-मार्ग्गदोळं नेरे माडिसुत्तवत्य्- ।
उत्तम-पात्र-दानदोदवं मेरवुत्तिरे **गङ्गवाडि-तोम्-** ।
बत्तरु-सासिरं कोपणवादुदु **गङ्गण**-दण्डनाथनिम् ॥
नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्देञ्जिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
नुडिगेडेयागे मूरु मरे-वोक्करनोप्पिसे नाल्कु बेडिदम् ।
पडेयदोडय्दु कूडिदेडेगोगदोडारधिपङ्ग तप्पि ब- ।
ईडे गडिवेळुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ते **गङ्गणम्** ॥

आ-गङ्ग-चमूपतिगं ।
नागल-देवीगमधीत-शास्त्रं पुत्रम् ।
चागद वीरद निधियुम् ।
भोग-पुरन्दरनुमप्प **बोप्प-चमूपम्** ॥

परमार्त्थं विद्वदर्त्थं तविसदनधनं व्यर्थवेन्दर्थिसार्त्थम् ।
निरवद्यं ज्ञातविद्यं दळित-रिपु-मनोद्यं तिरस्कारितार्द्यं ।
धरे तन्नं कीर्त्तिपन्नं विबुध-ततिगे पोन्नं विपश्चित्प्रसन्नं
करेदीवं **बोप्प-देवं** समर-मुख दशग्रीवनुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुळबळोद्धानदोळ् पावकानु- ।
क्रमदिन्दं क्रीडिसुत्तुं रिपु-नृपति-शिरः-कन्दुक-क्रीडितं तत्-
समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् वि- ।
क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनेरेद-बुधर्गप्प दण्डेश-**बोप्पम्** ॥
लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
शो-भाजननप्प **बोप्प**-दण्डेशनोळिन् ।
ई-भू-भुवनदोळाहा- ।
राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधररिन्दा-यात-परम्परेय **कोण्डकुन्दा**न्वय-वि-ख्यात-**मलधारि-देवर्** । र्प्पूत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-सुधाम्बुधि-पारग-**शुभचन्द्र-देव**-मुनिपर्व्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन । धीरोदात्ततेयनाळ्द **बोप्पन** गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म्म-वनधि-परिवर्द्धन-चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-प्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्वु [दु] जनं **प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिक**रम् ॥
इवर्ब्बोप्प-**देव**न देवतार्च्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवज्ञविन्तु बरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।
त्तळगवेनिप्पुदं तोळप बेळ्ळिय-बेट्टने पोल्वुदं जगत्- ।
तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिदं विभु-**बोप्प-देव**न- ।
ग्गळिकेय राजधानिगळोळोप्पुव **दोरसमुद्र**-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्गे ।

सासिर दैवत्तैदेन-ला-शकनद्धं प्रमादि-माधव-बहुळ- ।
श्री-सोमज-पञ्चमियो-ळैसेने **बोप्पं** प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य्यर् श्री-**नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति**गळ् ॥
भ्रान्तिनोळेनो मुन्नेगळ्द चारण-शोभित-**कोण्डकुन्दे**योळ् ।
शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्प्पिनविर्द मुनीन्द्र-कीर्त्तिया- ।
शान्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् **नयकीर्त्ति-देव**-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-शासनमं बेळगल्के पुट्टिदं ॥

श्री-मूलसंघद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद **कोंडकुन्दा**न्वयद हन-सोगेय बळिय **द्रोहघरट्ट-जिनालय[म्]**-प्रतिष्ठानन्तर देवर शेषेयनिन्दर् कोण्डु-पोगि **विष्णुवर्द्धन-देवर्गे बङ्कापुर**दोळ् कुडु-ववसरदोळ् ।

कवियेरिंगेन्दु बन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळं **विष्णु**-भूपं ।
तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्वुदुं पुट्टिदं भू-
भुवनक्कुत्साहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
रवि-तेजं पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुषाचार-सारं कुमारम् ॥
भूभृत्-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळता-समुत्तुङ्ग श्री- ।
प्राभवनुदिताखण्डळ-वैभवनेम् गोत्र-तिळकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमागे संतुष्ट-चित्तनागिर्द **विष्णु-देवं** पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेषगळं कोण्डु बन्दिर्दिन्दिरं कण्डु बर-वेळ्दिदिरेहु पोडेवट्टु गन्धोदकमुं शेषेयुमं कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदिं विजयोत्सवमुं कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोष-परम्परेयनेय्दि देवर्गे श्री-**विजय-पार्श्व-देव**रेम्ब पेसरुमं कुमारंगे श्री-विजय-**नारसिंह-देव**नेम्ब पेसरुमनिट्टु कुमारंगभ्युदय निमित्तमुं सकळ-शान्त्यर्थमुमागि **विजयपार्श्व-देव**रचतुर्व्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्च्चनाभिषेकक्कमी-बसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कं जितेन्द्रियरप्प तपोधनराहार-दानक्कं आसन्दि-

आ

आचार्य भद्र ९१
आजीविक १
आदित्यदण्डाधिनाथ २८८
आनंदूरु २४८
आन्ध्र २१७,२८८
आन्ध्री २८८
आभीर २०४
आयवती ५
आरुविल्लि १४४
आर्दबल्लि २७७
आर्यसेन १८६
आर्य्यदेवर २१३
आषाढसेन ६७
आलत्तूर (नगर) १२१,११२
आलूगु १२७
आहवमल्ल २८०
आहवमल्लदेव २०४,२१३
आळवर २१३

इ

इडिगूरु (विषय) १२४,२१८
इडियम २६३
इडियूरि १४४
इडैतुरैनाडु १७४
इंगिणिवर्म्म १४२
इन्दगेरी १२७
इन्दिर १७४,२१२
इन्दुगल्लु १२७
इन्देरेयक्क २७७
इन्देरेयप २१३
इन्द्र १२७
इन्द्रकीर्ति १३०
इन्द्रराज १२४,१४३,१४४,१६४
इरट्टपाडि १७४
इरिवबेडेङ्ग १६६
इरुक्कोळ ३०१
इरुलकोळु १४४
इलाडमहादेवि १६७
इला (ड) राजर् १६७

ई

ईद्रपा (ल) १०
ईळ १७४
ईळमण्डल १७४

उ

उग्गनिहिय ८३
उग्र (अन्वय) २४८
उग्र-वंश २१३,२४८
उच्चेनागरि १९,२०,२२,२३,३१,३५,
३६,५०,६४,७१
उच्चशृङ्गि १०३
उज्जयिनीपुर २७७
उज्जेनियपुर २९९
उज्झतिका ८८
उडैयार १७४
उत्तरदासक ४
उत्तर-मधुरा १९८,२०३,२४८
उत्तिरलाड १७४

उदयराज २२८
उदयादित्य २०७,२६३,२९९,३०१
उदयाम्बिका २४३
उनल्लारु १२७
उमुलिदेवङ्ग २१३
उम्मलियब्बे २१९
उरनूरार्हत (आयतन) ९४
उर्वी-तिलक २१३

ऋ

ऋषभ ९६

ए

एकदेव १४९
एकवीर २६९
एकसन्धि भट्टार २१३
एकलरस-देव २९१
एचल-देवि १९२,२१८,२६३,२९९, ३०१
एचले २७४
एचिराज ३०१
एजलदेवि २१३
एडदोरे २९९
एडय्य १८३
एडेमले १९३
एडेहल्लि २९९
एदेदिण्डे (विषय) १२३
एरकण्ण २५३
एरकाट्टिसेट्टि २१८
एरकोटि १२७
एरग २३७,२७७
एरेगित्तूर १२१
एरेनल्लूरा १२१
एरेय २६७
एरेयङ्ग २१३,२१८,२७७,२९९
एरेयपं २७७
एरेयङ्ग २६३
एरेयप्प-रस १३८
एरेय्य १०९
एळगामुण्ड १०७
एळचार्य्य २४१
एळे (रे) गङ्गदेव १४२
एळेव-बेडङ्ग १६४

ऐ

ऐरावत २९९

ओ

ओखा ८८
ओखारिका ८८
[ओ] घ ३१
ओडेयदेव २१४,२१६,२४८,
ओड्डग २१३,२२६
ओड्डमरस २१३
ओड्डविषैय १७४
ओड्डिटगे १२७
ओद (शाखा) ७६
ओद्दमरस २१३
ओद्दनंदि ४७-८

क

ककसधस्त ५७
ककुभ ९३
कक्कराज १२४
कंडूर्गण १६०
कक्कराज १४२
कच्चेयगङ्ग २१३
कच्छेय्यगङ्ग १४२
कञ्चरसस्सैगोट्ट-गङ्ग १८२
कञ्चरिगुण्डु १४४
कञ्चलदेवि २१३,२७७,२९९
कञ्चि २६३
कटकराज १४३
कटकाभरण (जिनालय) १४३
कणिष्क २४
कण्ठिका १४३
कण्णेश्वर १२४
कण्हबेना २
कदम्ब (कुल) ९५,९७,९८,९९,
१००,१०१,१०४,१०५,१०८,११४
१२१
कदम्ब-दिसायर २४९
कदम्बा (म्बा) १०३
कनक (कुल) १४६
कनकचन्द्र २९९
कनकनन्दि २७७
कनकनन्दि-त्रैविद्य २९९
कनकनन्दि-त्रैविद्य-देव २५१
कनकनन्दिपण्डितदेवर २८०
कनकप्रभदेव २३७
कनकप्रभसिद्धान्तदेव २३७
कनकसेन १३७,१३९
कनकसेनदेव २१४
कनकसेनपण्डितदेव २१६
कनकसेनभट्टारक २१३
करकगिरिय-तीर्थं १३९
कनकपुर २१३
कनियसिका (कुल) ७६
कनिष्क १९,२५
कन्तियर-नाकय्य २१०
कन्दवर्ममालक्षेत्र १३७
कन्दुकाचार्य २१३,२४८
कन्न १३०,२०५,२२७,२९९
कन्नकैर २३७
कन्नडिगे १८६
कन्नपार्य्य २०४
कन्नमुञ्जे २७७
कन्नर-देव १४०
कन्नरसान्तर २१३
कन्याकुब्ज २१३,२१९
कमलदेव १२८
कमलभद्र २१३
कम्प २७७
कम्मनाण्डु १४३
कर २१३
करण्डिग १०६
करदूषण २१३

करहड १८६
करहाट २०४
कर्क्कर १२७
कर्कुहस्थ ५८
कर्ण्णाट २०४,३०१
कर्दमपटि १०२
कर्न्नाट १७२
कर्प्पाटि ११४
कर्प्पूरसेट्टि २१८
कर्म्मगल्लए १०७
कर्म्मटेश्वर १४९
कल ७५
कलञ्जुरि १०८
कलसराजा १४६
कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव २२४
कलि-गंग-देव २१९
कलि-गङ्ग २६७
कलिगङ्ग भूपति २१९
कलिग २,३
कलिंग १०६,१०८
कलिंगजिन २
कलिङ्ग २१७,२८८,२९९
कलिङ्ग-देश २७७
कलिदेव २१७,२२७
कलियङ्ग २७७
कलियङ्ग-देव २५३,२९९
कलियङ्ग-नृप २५३
कलियर मल्लि-सेट्टि २९९
कलि-रक्कस-गङ्ग २६७,२९९
कलिविट्टरसर् १४०
कलिविष्णुवर्द्धन १४३,१४४
कलुकरे-नाड् १७०
कलुचुम्बरु १४४
कल्नेके (?) देव २६९
कल्नेके-देवर् १७९
कल्बप्पु तीर्त्त १३८
कल्याण २१९
कल्याणपुर २५३
कल्पकुरु १४३
कविपरमेष्ठिस्वामि २१३
कश्शपीय ६
कसुथ २२
कस्तूरि-भट्टार १८३
कळपाळ ३०१
कळंबूरु-नगर २६७
कळम्बडि १८६
कळिङ्ग २०४
क्येळेय्यब्बरसि २६३
कळालपुर १३८
क्षेम ६९

का

काकुस्थराज ९९,१०२
काकुत्सवर्मा ९६
काकुस्थवर्म्म १००
काकेयनूरु १२७
काकोपल १०६
काङ्कणि-वर्म्म १२२

काचवे २१८
काञ्ची ११४,२४८
काञ्चीनाथ २१४
काञ्चीपुर १०८,२८८
काञ्चीश्वर १०१
काडवमहादेवि २१३
काडुवेट्टि २१३
काणूरगण २६३,२९९
काण्वायन ९४,९५,१२१
कार्त्तिकेय ११४
कादम्ब (कुळ) २०९
कादलवल्लि १८२
कारेय १३०,१८२
कारेयबागु १३७
कार्तवीर्य १३०,२३७,२७५,२७६
कार्त्तवीर्यदेव २८०
कार्त्तवीर्य्य २३७
कालवङ्ग (ग्राम) ९८
कालिदास १०८,२१३
काल्क-देवय्यरन् (अन्वय) १४०
कावेरि १०८,२७७,२९९,
काश्मीर २८८
काळ २६४
काळसेन २३७
काळिदास १९८
काळियक २८८
काळिसेट्टि २१८
काळेयब्बे २१९
काळोज २५३

कि

किणयिग (ग्राम) १०६
कित्तैवोले १२७
किन्नरी (क्षेत्रं) १०९
किरणपुर १४३
किविरियय्य १८४
किशुवेकूर (ग्राम) १२२

की

कीर्त्तिवर्म्म १०७
कीर्त्ति (र्त्ति) नन्द्याचार्य १२१
कीर्तिवर्मा १०८,११४
कीर्त्तिदेव २०९
कीर्त्तिनारायण १६४
कीलबाड १२७

कु

कुक्कुटासन-मल्लधारिदेव २८४
कुङ्कुम्बाळु (ग्राम) २३७
कुङ्कुम-महादेवि २१०
कुडलूरद १२०
कुण्डकुन्द (अन्वय) २०९
कुण्डकुन्दाचार्य्य २०९
कुलुन्गिल (देश) १२४
कुन्तलापुर २९९
कुन्तळ २०४,२०९,२८०
कुन्तळी २८८
कुन्ददं २१३
कुन्दबैजिनालय १७४
कुन्दशक्ति १०९

कुन्दाचि १२१
कुन्दूर (विषय) १०३
कुप्पट्टूर २०९
कुबेरगिरि १९८
कुब्जविष्णु १४४
कुब्जविष्णुवर्द्धन १४३
कुमरमित २६,४२
कुमरय्य २६४
कुमार-गङ्ग-रस २५३
कुमारगजकेसरि २४३
कुमारदत्त १००
कुमारनन्दि ६४,१२१
कुमारपुर (ग्राम) ९०
कुमार बल्लाळदेव २९३
कुमारभटि ४२
कुमारमित्रा ४२
कुमारसेनदेव २१४
कुमारसेनदेवर २१३
कुमारसेन-व्रतिप २४८
कुमार-सेनाचार्य्य १३७
कुमारीपवत २
कुमुदचन्द्र भट्टारकदेव २४६
कुम्बयिज १०६
कुम्बश्चिक १४६
कुम्बसे-पुर १४६
कुम्मुदवाड १८२
कुरु २०४
कुरुराजिग २६७,२७७
कुरुळि २९९
कुरुळियतीर्थ २९९
कुलचंद्र २४५,२८०
कुलचन्द्र देवमुनि २०७
कुवलालपुर ८२,१३१,१३९,२१९,
२५३,२६७,२७७,२९९
कुहुण्डि (देश) २३७
कुहुण्डी (विषय) १०६

कू

[कू] केकः २२८
कूण्डि २२७
कूरगन्पाडि (ग्राम) १६७
कूर्चक ९९,१०३
कूविलाचार्य्य १२४

कृ

कृष्ण १०५,१४२
कृष्णराज १२३,१३०,१४३
कृष्णवर्म ९५,१०५,१२१,१२२
कृष्णवर्म्म १४२
कृष्णवल्लभ १३७,१४४

के

केचगावुण्ड २१९
केतलदेविय १८६
केतवेदेवि २१८
केतव्वे २५१
केतुभद २
केदल १२७
केरल १०६,१०८,११४,१७४,२०४,
२६४,३०१.

केशवनन्दि— १८१
केसरिवर्म्म १६७
केसवदेव २०८
केळयबरसि २९९
केळेयच्बरसि २१३
केळेयच्बे २१९

को

को [कु] न्तिदेवी ११८
कोक्किलि १४३,१४४
कोगळि-नाडोळ २४९
कोङ्कण १०८,२७७
कोङ्ग २६४
कोङ्गणि ९५
कोङ्गणिवर्म्म ९४,१३१,१४९,१५४,
कोङ्गाळव १८८,१९०
कोङ्गु २९९,३०१
कोङ्गुणि १८२
कोङ्गुणिवर्म्म ९०,१४२
कोङ्गोळ २६४
कोछि ५
कोटिमडुवगण १४३
कोट्टन १७४
कोट्टसे १२७
कोट्टिय (गण) ३५,५५,५६,५९,६८,
७०,७४,९२,
कोट्टिया (कुल) १८,१९,२०,२२,२३,
२५,२९,३०,३१,४२,
५४,६०
कोडङ्गाळ १८४
कोडङ्गिनाड २९१
कोडङ्गे १४०
कोडनपूर्वदवळि (ग्राम) २९२
कोण्डकुन्द (अन्वय) ९५,१२२;१२३,
१५०,१५८,१६६,१८०,२०४,
२२३,२३२,२३९,२६७,२६९,
२७५,२७७,२८०,२८४,२९४,
३०१
कोण्डकुन्दाचार्य्य २१३,२१४
कोण्डनूर २२७
कोन्दकुन्द (अन्वय) १२७
कोपण-तीर्थ २९९
कोप्परकेशरिपन्मरान १७४
कोमरछे (ग्राम) १०६
कोमर-वेडेङ्ग १४२
कोमारसेन-भट्टारर् १३८
कोम्मराज १८६
कोयतूर २६३,२९९,
कोरप २६४
कोरिकुन्द (विषय) ९४
कोरूकोलनु १४४
कोलनूर १२७
कोलनूरात १२७
कोल्लगिरि २८०
कोल्लविगण्ड १४४
कोल्लापुर २८०
कोविराज केसरिवर्मन् १७१
कोशलैनाडु १७४
कोशिकि ७१

कोसल १०८
कोळालपुर १५४,२०७,२५३,२७७
कोळिप्पाक्कैयु १७४
कौण्डिन्य ३०१
क्काणूर (गण) २०९,२१९,२६७,
२७७,२९९

ख

खचर-कन्दर्प-सेनमार १९३
खर्ण ५६
खस २०४
खारवेल २
खुडा १९
खेटग्राम ९६,१००
[खो] टमि [त्त] ३१

ग

गह [प्र] कि [व] ३७
गंगकूट १४३
गंग-नारायण १४२
गंगपेर्म्मनडि १७२
गंगमण्डलेश्वर १७२
गंगर-भीम २१९
गंगराज (कुल) ९५
गंगवाडि (गङ्गवाडि) २१९
गङ्ग १२३,१८२,२०४
गङ्ग (कुल) ९९,१३८,२१३,२९९
गङ्गकन्दर्प १४९
गङ्ग-कुमृत्-कुमार २९९
गङ्ग-कुमार २९९
गङ्ग-गाङ्गेय १४२
गङ्गण ३०१
गङ्गदत्त २७७,२९९
गङ्गदासि-सेट्टि २४२
गङ्ग नृप २१९,२५३
गङ्गपेर्म्माडि १४९,२१९
गङ्गपेर्म्मनाडि २१५
गङ्गमण्डल १२२, १४२
गङ्ग-महादेवि २१९,२२२,२५३,
२६७,२९९
गङ्ग-मादेवि २५३
गङ्गमालव २१३,२७७
गङ्गरस २५३
गङ्ग-राज २६३,२६६,२६९
गङ्गवळ्ळिय ३००
गङ्गवंश २१३
गङ्गवाडि (गंगवाडि) १२७,१८२,
२५३,२६४,२६७,२७७,२८४,
२९९,३०१
गङ्गहेरूर २७७,२९९
गङ्ग-हेर्म्माडि-देव २९९
गङ्गैयि १६७
गजसेलेय ९५
गण (उदार) १२३
गणधर २४८
गणपति १२७
गणिशेखरमरुपोर्चुरियन् १७१
गण्ड-नारायण-सेट्टि २८४
गण्डरादित्य २१८
गण्डरादित्यदेव २५०